इक दिन माटी में मिल जाना

(भजन संग्रह)

शुभाशीष
एलाचार्य वसुनन्दी मुनि

संकलन
मुनि ज्ञानानंद जी

कृति : इक दिन माटी में मिल जाना

मंगल आशीष : श्वेतपिच्छाचार्य श्री 108 विद्यानंद जी मुनिराज

शुभाशीष : एलाचार्य श्री 108 वसुनन्दी जी मुनिराज

संकलन : मुनिश्री 108 ज्ञानानंद जी मुनिराज

सहयोग : संघस्थ साधुव्रती एवं त्यागीव्रती

प्रतियाँ : 2000

संस्करण : प्रथम 2014

मुद्रक : अरिहंत ग्रॉफिक्स, दिल्ली
मो. 9958819046, 9971423462

प्राप्ति स्थान : श्री निर्ग्रंथ ग्रंथमाला समिति रजि., दिल्ली
टूण्डला चौराहा, फिरोजाबाद (उ.प्र.)
: अतिशय क्षेत्र, देहरा तिजारा (राज.)
: श्री जम्बूस्वामी तपोस्थली
ग्राम बौलखेड़ा (राज.)
: श्री दिगम्बर जैन लाल मन्दिर
चाँदनी चौक, दिल्ली

दो शब्द

आध्यात्मिक विद्या विश्व की सर्वश्रेष्ठ विद्या है, आध्यात्मिक विद्या के बिना आत्मा के रहस्यों का उद्घाटन असंभव है, भारतीय संस्कृति व सभ्यता-सदाचार और संयम पर ही आधारित है, इस संस्कृति के मूल दो भेद हैं—श्रमण परम्परा और वैदिक परम्परा। दोनों ही परम्पराएं आध्यात्म विद्या को ही आत्म हित का मूल कारण मानती हैं, इस आध्यात्मिक विद्या की सम्प्राप्ति तत्त्वज्ञान के बिना असंभव है। संसार का प्रत्येक परमाणु स्वभाव की ओर गति करने का मूल उपदेश देता है। प्रकृति सदैव प्राकृतिक रूप में ढलने का ही संदेश देती है, प्रकृति ही सर्व द्रव्यों का मूल स्वभाव है। आध्यात्मिक विद्या को शास्त्रों में गाथा, विगाथा, श्लोक, काव्य व छंदों में निबद्ध किया है किन्तु शब्दों में अध्यात्म नहीं है। अध्यात्म तो तत्त्वज्ञानी के चिंतन में है, वह आध्यात्म तो आत्मा में है, वह अध्यात्म योगी की चर्या से निसृत होता है। आध्यात्मिक रूप में डुबकी लगाने के लिए निमित्त कुछ भी हो सकता है, गाथा, काव्य, श्लोक, भजन, इत्यादि। प्रस्तुत पुस्तक **'इक दिन माटी में मिल जाना'** में मुनि श्री ज्ञानानंद जी मुनिराज के द्वारा आध्यात्मिक भजन, सदाचार, भक्ति, वैराग्य व संयम की प्रेरणा देने वाले भजनों का अनुपम संग्रह किया है। मुनिश्री के मधुर कण्ठ से जब ये भजन विस्तृत होते हैं तब ऐसा प्रतिभासित होता है मानों अमृत की वर्षा ही हो रही हो। ये भजन किसी भी भव्य प्राणी को आत्मसरोवर में डुबकी लगाने के लिए लालायित करने वाली है।

इस लघुकाय पुस्तक से सहस्रों भव्य जीव अपने धर्म ध्यान में वृद्धि करेंगे, अशुभ आस्रव, पाप बंध से बचेंगे, शुभास्रव, पुण्यबंध, अशुभ संवर व पूर्व बंध कर्मों की निर्जरा को भी प्राप्त होंगे। अतः प्रस्तुत पुस्तक के सृजक, संयोजक, संपादक व प्रकाशक आदि सभी महानुभावों को सुसमाधिरस्तु व धर्म वृद्धिरस्तु शुभाशीष।

जिन महानुभावों ने अपने न्यायोपार्जित धन का सदुपयोग कर इस पुस्तक का प्रकाशन कराया है उन्हें भी वात्सल्य पूर्वक धर्मवृद्धि शुभाशीष।

"सर्वेषां मंगलं भवतु"

श्री शुभमिति आषाढ़ सुदी 15
रविवार 21 जुलाई 2013
अ.त.बी. (का.भ.रा.)

ॐ ह्रीं नमः
कश्चिदल्पज्ञ श्रमणः जिनवर चरणांबुज
चंचरीक, गुरु पूर्णिमा दिवस

अनुक्रमणिका

मंगलाचरण	9	खिलौना जानकर दिल ये मेरा क्यों	56
क्रोध की महिमा	11	गुरुवर तेरे चरणों की	58
श्री महावीर जन्मोत्सव	12	तुम्हें ढूंढता हूँ गली और वन में	59
जिओ और जीने दो	15	रात्रि मत खाओ भाई	60
मेरे बाबा तू मुझ को	16	आजाओ मेरे वीरा	61
हमारे कष्ट मिट जायें	17	जिन धर्म मार्ग पर चलिये	62
माता तू दया करके	19	बाजे कुण्डलपुर में बधाई	64
दरबार में श्री वसुनन्दी जी के	20	आ जाओ मेरे वीरा	65
मिलता है सच्चा सुख केवल	21	वाणी है कल्याणी वाणी	66
समझ मन बावरे सब	22	यह मंत्र महा णमोकार	68
आशाओं का हुआ खातमा	24	क्या तन मांजता-रे	69
तन नहीं छूता कोई	26	केशरिया स्वास्तिक शुभ धारा	71
सदा सन्तोष कर प्राणी	28	धर्म प्रेमियों अगर चाह है,	73
कहा मानले ओ मेरे भैया	29	आत्म नियंत्रण में संयम है	75
बधाई आज मिल गाओ	30	इच्छाओं का दास मनुज तू	77
हे परम दिगम्बर यती	31	न अपना ज्ञान धन खोता	79
तिहारे ध्यान की मूरत	32	श्री चन्द प्रभू भगवान प्रगट भये	81
तुम्हारे दर्श बिन स्वामी हमे	34	ओ मुशाफिर सोचले	82
जो सिद्ध हुये हैं उनकी जरा याद करो	36	इस जनम में न सही पर भव में	87
मानव जनम तुझ को हीरा दिया	38	महामंत्र आराधना	89
धर्म बिन कोई नहीं अपना	40	अन्दर की वेदना	90
तव नाम का सुमरण करूं	42	मुसाफिर क्यों पड़ा सोता चेतना के क्षण	92
गुरु देव दया करके	44	सत्य की परछाइयाँ	94
क्षमा करना क्षमा करना	46	मेरे गुरुवर संत महान	97
तुम्हीं मेरे मन्दिर तुम्हीं मेरे पूजा	47	हे गुरुवर तेरे चरणों में	98
जीवन के किसी भी पल में	49	मेरे रग-रग में है आज	99
आचरण तुम्हारा शुद्ध नहीं	50	वसुनन्दी गुरु का ध्यान करो	100
गुरु देव मेरी नैया उस पार	52	घड़ी से जो घड़ी निकली	101
पड़ी मझ धार में नैया	54	भटके हुये राही को	103

वो पुष्प कहाँ से लाऊँ	104	पालन हार बनके	157
आके चरणों में कुछ	105	ये धर्म है आतम ज्ञानी का	159
मोहे चौरासी के चक्कर से	107	मंत्र नवकार	161
किया समर्पण तेरे दर पर	109	पुरानी हो गयी बस्ती	163
जुदाई आपकी गुरुवर	111	बहती ज्ञान की धार,	165
हे माटी के पुतले रोता है क्यों?	113	कैसे अदा करेंगे	166
गुरु वरदान पाने को	115	किसको विपत सुनाऊँ	167
अब तो दया करो जिनवर जी	117	गुरू हमें दिल से बनाना चाहिए	168
सम्यक श्रद्धा से भक्ति करो	118	भला किसी का कर न सको तो	170
मेरी आरजू तो भगवन	120	जिस दिन प्रभू जी तेरा दर्शन होगा	172
पारस पदमा और महावीरा	121	दुनियां में ऐसा कहाँ	174
मुक्तक	123	मिलता है सच्चा गुरू	175
मुक्तक	125	दुनिया में रहने वाले	176
चाँदी और सोने में उलझा	127	ढोल बजा के	178
मुक्तक	129	दीनबंधु दयालु	180
हे माटी पुतले	130	नहीं चाहिये दिल	182
भूल गये हम पिछली	132	जो बीत गये फिर	183
गुरुदेव तुमको	133	जिस भजन में	184
इतनी शक्ति हमें देना गुरुवर	135	गुरू चरण की भक्ति	186
कभी तो ये गुरुवर	137	मिलती है साधुओं	187
मैली चादर ओढ़ के	139	रंग माँ रंग माँ	188
मुझे ऐसा वर दे	140	मीठो-मीठो बोल	189
थोड़ा ध्यान लगा	142	गुरुवर तेरे चरणो	191
मेरे सर पर रख दो	144	आचार्य मेरे प्यारे	193
मेरे सर पर रख दो	145	शिष्य भूल जावे रे	194
जब कोई नहीं आता	146	आगे-आगे अपनी	196
झूठी दुनिया से मन को हटा ले	147	उड़ चला पंछी" (विहार)	198
कौन सुनेगा किसको सुनायें	149	शुद्ध हृदय हो पल में	200
इस योग्य हम कहाँ हैं	151	जब तेरी डोली	202
कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं	153	बाजे कुण्डलपुर	204
सजधज कर जिस दिन	155	मेरा जीवन कोरा	205

हर बात को	207
भगवान तुझे	209
मैंने तेरे ही	210
साँवलिया पारसनाथ	211
सोते सोते निकल गई	212
जिन्दगी एक सफर है सुहाना	214
गुरुदेव मेरे तुमको	216
मिट्टी में पड़कर	218
मुझे तजकर मेरे	220
रास्ते का पत्थर	222
करता रहूँ गुणगान	223
गुरुवर आज	224
आया कहाँ से	225
रोम रोम से	227
जब से गुरु दर्श मिला	228
लुटेरे बहुत देखे	229
एक झोली में	230
आशाओं का हुआ खात्मा	231
कौन सुनेगा	233
जग में जो कुछ देख रहे	234
तू दुनिया के सारे विषय	236
प्रभु रथ पे हुए सवार	238
मन की तरंगें मार लो	240
बिन भजन के जगत में	241
जिन्दगी के ये स्वर्णिम	242
चिन्ता-चिन्ता में निकल गई	244
वो पुण्य कहाँ से लाऊँ	246
करी तपस्या मनमानी	247
नाथ दर्शन तुम्हारे	248
दुनिया में हजारो	249
खुशियों की बेला	251
देख तमाशा लकड़ी का	252
पतिव्रता एक नार अंजना	254
महावीर तुम्हारे चरणों में	256
खुशी के फूल बरसाओ	257
जिनवर बोलो	259
प्रभो फरियाद	261
भरत जी घर की में बैरागी	263
श्री आदिनाथ स्तुति	264
जगे हैं पुण्य भव्यों के	266
दुःख भी मानव की सम्पत्ति है	268
भेष दिगम्बर धार तू खुशहाली का	270
दिल न दुखाना	271
दुष्ट पैसा	274
तलाश प्रभु की	276
धर्म पर डट जाना	277
छोटा सा मंदिर बनायेंगे	279
रे मन मुसाफिर निकलना	280
जैन धर्म के हीरे मोती	281
हैं बनी-बनी के साथी	283
तुम हो तारन तरन ले लो...	285
दर्शन दे दो जी साँवरिया	286
क्यों वीर लगाई देर	287
क्या सोवे पैर पसार के	288
इस संसार में सुखी	289
सुखरत की बात मेरे...	290
मानो-मानो कथा जी	291
धरम बिना बावरे	292
वलो अमृत गया	293
मिलेंगे मन मन्दिर....	294
यहाँ कहाँ आ"....	295
सताते हैं जो	296

न तन प कोई....	297	लागी जिनवर से नजरिया	313
काजू खाये....	298	त्रिशला के नन्द कुमान	314
भक्तो चालो तो...	299	सब फेरो नर और नारि	315
जन्म घर	300	नरतन का स्वामी मिला चाहता हूँ	316
ऋषभ अजित सम्भवनाथ	301	भीम बेरी तजा	318
मधुरला	302	विन पारस प्रभू भगवान	319
ऊँचे-ऊँचे शिखरी	303	णमोकार मन्त्र की महिमा	320
घर होती तो आदर कर लेती	305	एक सियार और साधू का सम्वाद	322
श्री भजन सतगुरु	307	अगर दिल किसी का	325
नर हो न हार होतव्य	309	अफसाना	326
माटी का घर छोड़	311	अहिंसा जो अपनावे	327
नगरी-नगरी द्वारे द्वारे	312	अरे लोभी बन्दे	328

मंगलाचरण

ॐ को नमन ओंकार को नमन
अरिहंतों को नमन, श्री सिद्धों को नमन
आचार्यों को नमन, उवज्झायों को नमन
सर्वसाधु को नमन, जिन धर्म को नमन

ॐ मंगलम्, ओंकार मंगलम्
अरिहंत मंगलम् श्री सिद्ध मंगलम्
आचार्य मंगलम् उवज्झाय मंगलम्
सर्वसाधु मंगलम्, जिन धर्म मंगलम्

ॐ उत्तमा, ओंकार उत्तमा
अरिहन्त उत्तमा, श्री सिद्ध उत्तमा
आचार्य उत्तमा, उवज्झाय उत्तमा
सर्व साधु उत्तमा, जिन धर्म उत्तमा

ॐ शरणं ओंकार शरणं
अरिहन्त शरणं श्री सिद्ध शरणं
आचार्य शरणं उवज्झाय शरणं
सर्वसाधु शरणं, जिन धर्म शरणं

ॐ को नमन ओंकार को नमन

क्रोध की महिमा

मुक्तक

मानव को क्रोध से नहीं, प्रेम से जीतो,
क्रोध को क्रोध से नहीं, क्षमा से जीतो,
तुम यदि किसी का दिल जीतना चाहते हो तो,
अधिकार से नहीं मेरे मित्र समर्पण से जीतो॥

भजन

क्रोध करि मरै, और मारै ताहि फांसी होय,
किंचित हू मारै वोहू जाहि जैल खाने में।
जो कहूँ निबल भये हाथ पांव टूटि गये,
ठोर ठोर पट्टी बंधी पड़े सफारखाने में,
पीछे से कुटुंबी जन हाय हाय करत फिरें,
जाय जाय पैरों पड़ें तैसील रु थाने में।
किंचित किये तैं क्रोध एते दुख होत भ्रात
होत है अनेक गुण जरा गम खाने में।

श्री महावीर जन्मोत्सव

मुक्तक

सचमुच में ये आचार्य श्री संयम का रूप नहीं धरते।
ये अपनी पावन काया से यदि युग का कायाकल्प नहीं करते॥
मानवता मान नहीं पाती ये जीवित तीर्थ नहीं होते।
ये भारत गारत बन जाता जो साधु संत नहीं होते॥

भजन

देशन में देश तो प्रसिद्ध है विहार देश,
स्वर्ग के समान सर्व सम्पदा को वास है।
ता में राजधानी श्रेष्ट शोभनीक वैशाली कुंडलग्राम,
सिद्धारथ नाम भूप भूपन में खास है॥
ताकी पटरानी सती शीलवती त्रिशला है,
रंभा रति शची किधों सरस्वती वास है॥
ताके उर आनि भगवान वीर जन्म लयों,
आत्मा पवित्र दिव्य ज्योति को प्रकाश है॥
जन्मत ही तिहुँ लोक आनंद अपार,
बाजे अनहद बजे इन्द्रन के वास है॥
साजि गज बाज चलि स्वर्ग को समाज आयो,
इन्द्र धरणीन्द्र वृन्द वैशाली कुण्डग्राम पास है॥
फेरी तीन देय जाय सिद्धारथ गेह शची,
छिपि के अदेह गयी त्रिशला के वास है॥
होय के निशंक शची लियों बाल अंक देखी,

मुखड़ा मयंक दिव्य ज्योति को प्रकाश है॥
लाकर के बाल शची सौंप दियो मघवा को,
निरखों हजार नैन धारि के हुलास है॥
ले गये सुमेरु शीश पांडुक शिला पै थापि,
एक ऊन लक्ष उच्च जोजन आकाश है॥
गागर हजार आठ लाय क्षीर सागर तैं,
डारी शीश ईश के लगाय दिव्य वास है॥
करि के शृंगार वस्त्र भूषण सजाय शची,
देखो मुख रूप दिव्य ज्योति को प्रकाश है॥
एरी सखीरी ए उजारो केसो भयो आज,
जाके तेज आगे सब तेजन को ह्रास है॥
सूरज विचारो कैसो ढाक कैसो पात भयो,
चांद और तारन को रह्यो न विकास॥
गैस की न रोशनी उद्योत है न विद्युत का,
दीपक मसाल की मिसाल तौन पास है॥
मेरे मन माहिं सखि एक बात आवत है,
वीर प्रभू कियो दिव्य ज्योति को प्रकाश है॥4
दुनिया के ग्रंथन का सभी साधू संतन का,
धर्म के महंतन का ठीक ये विश्वास है॥
एक समौ भारत में धर्म विध्वंस भयो,
धूर्त ढोंगियों का हुआ देश में निवास है॥
चोरी झूठ जारी वाम मारग प्रचारी क्रोध,
लोभ छल धारी देत जीवन कों त्रास है॥
ऐसे कुसमै में भगवान वीर आनि कियो,
सबके ह्रदै में दिव्य ज्योति को प्रकाश है॥5
यज्ञ के करैया सौं पुकारि कहै दीन पशु,
चाहिए न मोहि तेरे स्वर्ग को निवास है॥

छुरी से न मारो न पजारो मोहि पावक में,
हाथ पांव बांधि के न देहु मोहि त्रास है॥
अरे मेरे वीर मेरों कांपत शरीर तेरी,
देख शमशीर मेरो छूट जात स्वांस है॥
ऐसे दीन आरत को मारग में शोर सुन,
आयो महावीर दिव्य ज्योति प्रकाश है॥6

जिओ और जीने दो

मुक्तक

हम नहीं कहते कि परिवार से नाता तोड़ दों,
हम नहीं कहते कि आप व्यापार से मुखड़ा मोड़ दो॥
हमारा कहना यही है कि यदि आत्मा पर विश्वास है तो,
कम से कम भगवान से तो धोखा करना छोड़ दो॥

भजन

जिओं और जीने दो सबकों महावीर का नारा है,
आज इसी नारे को भूला भारत देश हमारा है॥—टेक
किसी जीव के प्राण हरण का क्या अधिकार तुम्हारा है,
कण कण में छुप रही अहिंसा ये सब ही को प्यारा है॥
हर प्राणी से प्यार करो, व्यवहार करो सब समता का,
तब ही होगा दूर साथियो वातावरण विषमता का,
इसी विषमता ने प्राणी में हिंसा भाव जगाया है॥
आज इसी के द्रष्टि कोण से अपना हुआ पराया है,
आज बहानी इस भारत में फिर समता की धारा है॥
जीओ और जीने दो सबको महावीर का नारा है,
आज वीर सन्देश सुनाने श्री वसुनन्दी जी आये हैं॥
सत्य अहिंसा का सन्देशा महावीर का लायें हैं,
इसी अहिंसा से गांधी ने देश स्वतंत्र कराया हैं॥
सत्य अहिंसा के द्वारा ही शत्रु को मित्र बनाया हैं,
पदम अहिंसा का प्रतीक सबको यह एक सहारा हैं॥
जीओं और जीने दो सबको महावीर का नारा हैं।

मेरे बाबा तू मुझ को

मुक्तक

चलती चक्की देख के दिया कबीरा रोय
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय
चक्की चले तो चलन दे तू काहे को रोय
लगा रहे तू वीर से बाल न बांका होय

भजन–तर्ज-मेरे पैरों मेंहदी लगी है...

मेरे बाबा तू मुझ को बुलाले
दर पे आने के काबिल नहीं हूँ॥टेक॥
गमने मारा है गम ने सताया
गमने मुझ को परेशां किया है
गममें इस कदर फंस गया हूँ
गम भुलाने के काबिल नहीं है
मेरे बाबा तू मुझ को...
शुष्क लब आखें पथरा गई हैं
धड़कनों का भरोसा नहीं हैं
जिंदगी मौत से लड़ रही हैं
जिन्दा बचने के काबिल नहीं हूँ
मेरे बाबा तू मुझ को बुलाले
दर पें आने के काबिल नहीं हूँ।

हमारे कष्ट मिट जायें

मुक्तक

कुन्दकुन्द के समयसार का सार हमें जो बता रहे।
समन्तभद्र-सा डंका घर-घर द्वार-द्वार जो बजा रहे॥
भोले-भाले जन को हैं जो चलते-फिरते धाम।
ऐसे गुरु श्री वसुनन्दी जी को मेरा शत-शत बार प्रणाम॥

भजन

हमारे कष्ट मिट जायें, नहीं यह भावना स्वामी।
डरें ना संकटों से हम, यही है प्रार्थना स्वामी॥

हमारा भार घट जाये, नहीं यह भावना स्वामी।
किसी पर भार न हों हम, यही है प्रार्थना स्वामी॥

फले आशा सभी मन की, नहीं यह भावना स्वामी।
निराशा हो न अपने से, यही है प्रार्थना स्वामी॥

बढ़े धन सम्पदा भारी, नहीं यह भावना स्वामी।
रहे सन्तोष थोड़े में, यही है प्रार्थना स्वामी॥

दुखों में साथ दे कोई, नहीं यह भावना स्वामी।
बने सक्षम स्वयं ही हम, यही है प्रार्थना स्वामी॥
दुखी हों दुष्ट जन सारे, नहीं यह भावना स्वामी।

सभी दुर्जन बनें सज्जन, यही है प्रार्थना स्वामी॥

मनोरंजन हमारा हो, नहीं यह भावना स्वामी।
मनो मंज्जन हमारा हो, यही है प्रार्थना स्वामी॥

रहे सुख की सदा छाया, नहीं यह भावना स्वामी।
परीक्षा में खरे उतरे, यही है प्रार्थना स्वामी॥

सभी पीछे रहें हमसे, नहीं यह भावना स्वामी।
सभी पर प्रेम हो उर में, यही है प्रार्थना स्वामी॥

दुखों में आप को ध्यायें, नहीं यह भावना स्वामी।
कभी ना आपको भूलें, यही है प्रार्थना स्वामी॥

हमारे कष्ट मिट जायें, नहीं यह भावना स्वामी।
डरें ना संकटों से हम, यह प्रार्थना स्वामी॥

माता तू दया करके

मुक्तक

मन पापी है लेकिन मुख में रामायण गीता हैं,
नित्य कथा सुनते है, जीवन तीरथ में बीता हैं।
क्या तीरथ में पापी मन के पाप धुला करते हैं,
मगरमच्छ तो नित्य नियम से गंगा जल पीया करते हैं।

भजन

माता तू दया करके कर्मों से छुड़ा देना,
इतनी सी विनय तुम से चरणों में जगह देना॥टेक

माता आज में भटका हूँ माया के अँधेरे में,
कोई नहीं मेरा है इस कर्म के रेले में॥
कोई नहीं मेरा है तुम धीर बंधा देना,
इतनी सी विनय...

जीवन के चौराहे पर में सोच रहा कब से।
जाऊँ तो किधर जाऊँ, यह पूछ रहा तुमसे॥
पथ भूल गया हूँ मैं तुम राह दिखा देना।
इतनी सी विनय...

लाखों को उबारा है हमको भी उबारो तुम।
मझधार में है नैया उसको पार लगा दो तुम॥
मझधार में है नैया भव पार लगा देना।
इतनी सी विनय...

दरबार में श्री वसुनन्दी जी के

मुक्तक

अन्याय चाहे कितना भी, करो इन्साफ एक दिन होकर ही रहेगा,
कोयला चाहे छुप-छुप कर भी खाओ, मुँह काला होकर ही रहेगा।
कुदरत के दरबार में अंधेर नहीं पर देरी हैं,
आखिर दूध का दूध और पानी का पानी होकर ही रहेगा॥

भजन

दरबार में वसुनन्दी जी के, दुःख दर्द मिटाये जाते हैं,
गर्दिश में सताये लोग यहाँ, सीने से लगाये जाते है।

ये महफिल है दीवानों की, हर भक्त यहाँ दीवाना है,
भर भर प्याले यहाँ अमृत के, हर रोज पिलाये जाते है।
दरबार में वसुनन्दी जी के...

मत घबराओं ओ जग वालों, इस दर पे शीश झुकाने से,
इस दर पर शीश झुकाने से, भव बन्धन सब कट जाते है॥
दरबार में वसुनन्दी जी के...

जो नित उठ सुमिरन करते हैं, और ध्यान इन्हीं का धरते है,
परमानन्द सुख पा जाते है, और मोक्ष महल को जाते है॥
दरबार में वसुनन्दी जी के...

मिलता है सच्चा सुख केवल

मुक्तक

संसार में पतित था गुरु ने उठाया।
अज्ञान का तिमिर था गुरु ने उठाया॥
मुनिराज हैं तरण तारण ज्ञान धारी।
श्री वसुनन्दी जी गुरु जय हो तुम्हारी॥

भजन

मिलता है सच्चा सुख केवल, गुरुवर तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल-पल छिन-छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥टेक
चाहे वैरी सब संसार बने, मेरा जीवन मुझ पर भार बने।
चाहे मौत गले को हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।...
चाहे संकट ने ही मुझे घेरा हो, चाहे चारो ओर अंधेरा हो।
पर चित्त न मेरा डग मग हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।...
चाहे अग्नि में ही जलना हो, चाहे काटों पर भी चलना हो।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥...
जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह और शाम रहे।
यही काम बस आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥
मिलता है सच्चा सुख केवल, गुरुवर तुम्हारे चरणों में।
यह विनती है पल-पल छिन-छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥

समझ मन बावरे सब

मुक्तक

तन नहीं छूता कोई चेतन निकल जाने के बाद,
फेंक देते फूल ज्यों खुशबू निकल जाने के बाद॥
आज जो करतेकिलोलें खेलते हैं साथ में,
कल डरेंगे देख तन निरजीव हो जाने के बाद॥

भजन

समझ मन बावरे सब स्वारथ का संसार 'टेक'

हरे वृक्ष पर तोता बैठा, करता मोज बहारी,
सूखा तरूवर उड़ गया तोता, छिन में प्रीति विसारी॥
समझ मन बावरे...

ताल पाल पर किया बसेरा, निर्मल नीर निहारा,
लखा सरोवर सूखा जब ही, पंछी पंख पसारा॥
समझ मन बावरे...

पिता को पुत्र तब लागे प्यारों, जबलों करे कमाई,
जो नहीं द्रव्य कमाकर लावे, दुश्मन देत दिखाई॥
समझ मन बावरे....
जब जासों स्वारथ सधत है, तब तक तासों प्रीत,
स्वारथ निकले बात न बूझे, यही जगत की रीत॥

समझ मन बावरे...

अपने अपने सुख को रोवें, मात पिता सुत नारी,
घरे गढे की बूझन लागे, अन्त समय की वारी॥
समझ मन बावरे...

सभी सगे भाई गरज के, तुम भी स्वारथ साधो,
न तर मित्र मिला है, तुमको आतम हित आराधो॥
समझ मन बावरे...

आशाओं का हुआ खातमा

मुक्तक

हमको सुमार्ग गुरुवर तुमने बताया
अज्ञान का तिमिर था तुमने मिटाया
में भी स्वकीय पद को अति शीघ्र पाऊँ
तबलों त्वदीय पद में सिर को झुकाऊँ

भजन

आशाओं का हुआ खातमा, दिली तमन्ना धरी रही
बस परदेशी हुआ रवाना प्यारी काया पड़ी रही॥टेक॥

करना करना आठो पहर ही, मूरख कूक लगाता है,
मरना मरना मुझे कभी नहीं, लफ्ज जबां पर लाता है॥
पर सबही मरने वाले है, झंडी न किसी की खड़ी रही,
आशाओं का हुआ...

इक पंडित जी पत्रा लेकर, गणित हिसाब लगाते थे,
समय काल तेजी मद्धी की, होन हार बतलाते थे॥
आया काल चले पंडित जी, पत्री कर में धरी रही।
आशाओं का हुआ...

एक वकील आफिस में बैठे, सोच रहे अपने दिल

फलां दफा पर बहस करूंगा, पांइट मेरा बड़ा प्रबल
इधर कटा वारंट मौत का, कल की पेशी पड़ी रही
आशाओं का हुआ...

एक साहब बैठे दुकान पर, जमा खर्च खुद जोड़ रहे,
इतना लेना इतना देना, बड़े गोर से खोज रहे।
काल बली की लगी चोट जब, कलम कान में लगी रही॥
आशाओं का हुआ...

इलाज करने इक राजा का, डाक्टर जी तैयार हुए,
विविध दवा औजार साथ ले, मोटर कार सवार हुए॥
आया वक्त उलट गई मोटर, दवा बैग में भरी रही।
आशाओं का हुआ...

जेंटिल मेन घूमने को हर रोज शाम को जाता था
चार पाँच थे दोस्त साथ में, बातें बड़ी बनाता था॥
लगी जो ठोकर गिरे बाबूजी, छड़ी हाथ में लगी रही।
आशाओं का हुआ...

हां क्या क्या करूं में इस दुनिया की अजब गति
भैय्या आना और जाना है, फर्क नहीं है एक रती॥
सम्यक प्राप्त किया है जिसने, बस उस ही की खरी रही।
आशाओं का हुआ खातमा, दिली तमन्ना धरी रही।

बस परदेशी हुआ रवाना प्यारी काया पड़ी रही॥

तन नहीं छूता कोई

मुक्तक

धन वैभव के जिन्हें भाये न आलय हैं
चारित्र के जो सच्चे हिमालय हैं
मंदिर की मूर्तियां तो मौन रहती हैं दोस्तों
ये देख लो आपके सामने चलते फिरते जिनालय हैं

भजन

तन नहीं छूता कोई, चेतन निकल जाने के बाद
फेंक देते फूल ज्यों खुशबू निकल जाने के बाद

आज जो करते किलोले, खेलते हैं साथ में
कल डरेंगे देख तन, निरजीव हो जाने के बाद

बात भी करते नहीं जो, आज धन की ऐंठ में
वें मागते आयें नजर, तकदीर फिर जाने के बाद

पांव भी धरती पे जिसने हैं कभी रखे नहीं
वन में भटकते वे फिरे आपत्ति आ जाने के बाद

बोलते जबलों सगे है, चार पैसा पास में
नाम भी पूछे नहीं पैसा निकल जाने के बाद

स्वार्थ प्यारा रह गया, असली मुहब्बत उठ गई
भूल जाता है बछड़ा, पय निकल जाने के बाद

भाग जाता हंस भी, निरजल सरोवर देखकर
छोड़ देते वृक्ष पक्षी पत्र झड़ जाने के बाद

लोग ऐसे मतलबी फिर, क्यों करें विश्वास हम
बालक डरता आग से, इक बार जल जाने के बाद

इस अथिर संसार में, क्यों मगन कुन्दन हो रहा
देख फिर पछतायेगा, असमर्थ हो जाने के बाद।

सदा सन्तोष कर प्राणी

मुक्तक

सांस का पिंजरा किसी दिन टूट जायेगा
हर मुसाफिर राह में ही छूट जायेगा
इसलिए जिंदगी की कीमत समझो दोस्तो
क्या पता जीवन का घड़ा कब फूट जायेगा

भजन

सदा सन्तोष कर प्राणी, अगर सुख से रहा चाहे
घटा दे मन की तृष्णा को अगर अपना भला चाहे
आग में जिस कदर, ईंधन पड़ेगा ज्योति ऊँची हो
बढ़ा मत लोभ की तृष्णा, अगर दुःख से बचा चाहे
वही धनवान है जग में, लोभ जिसके नही मन में
वह निर्धन रंक होता है, जो पर धन को हरा चाहे
दुखी रहते है वे निश दिन, जो आरत ध्यान करते ह
न कर लालच अगर, आजाद रहने का मजा चाहे
बिना मांगे मिले मोती, न्यामत देख दुनियाँ में
भीख मांगे नहीं मिलती अगर कोई लिया चाहे
सदा सन्तोष कर प्राणी अगर सुख से रहा चाहे।

कहा मानले ओ मेरे भैया

मुक्तक

तप त्याग संयम शील जीवन का सार होता है।
इन सब के बिना जीवन सारा बेकार होता है॥
मुक्ति की मंजिल उन्हीं को मिलती है दोस्तो।
जिसे सचमुच अपने गुरु से प्यार होता है॥

तर्ज–जरा सामने तो आओ छलिये

कहा मानले ओ मेरे भैया, भव भव झुलने क्या सार है।
तू वनजा बने तो परमात्मा, तेरी आत्मा की शक्ति अपार है॥टेक॥
भोग बुरे हैं त्याग सजन ये, विपद करें और नरक धरें।
धर्म ही है एक नाव सजन जो, इधर तिरे और इधर वरें॥
झूंठी प्रीति में तेरी हार है
वाणी गणधर की ये हितकार है–तु वनजा...
लोभ पाप का बाप सजन क्यों, राग करे दुःख भार भरे
ज्ञान कसौटी परख सजन, मत छलियों का विश्वास करे
ठग ,आठों की यहाँ भरमार है–
इन्हें जीतो वेड़ा पार है–तु वनजा...
नरतन का सौभाग्य सजन ये, हाथ लगे ना हाथ लगे
कर आतम रस पान सजन जो, जनम भगे और मरण भगें
मोक्ष महल का ये ही द्वार हैं,
वीतरागी ही वनना सार है॥–तु वनजा.

बधाई आज मिल गाओ

मुक्तक

गये लाल जपी माला तिलक लम्बा लगाया है
करी अर्चा सुनी चर्चा, मजा मन्दिर में आया है
कथा के बाद पूछा सज्जन तुमने क्या सुना
बोले बहारों फूल वरसाओं मेरा मुनिराज आया है

तर्ज–बहारो फूल वरसाओं

बधाई आज मिल गाओ, कि यहां मुनिराज आये हैं
गुंजादो गीत मंगलमय, कि यहाँ मुनिराज आये हैं टेक
विछादे चांदनी चन्दा, सितारो नाचने आओ
सुनहला थाल भर ऊषा, प्रभाकर आरती लाओ
सुस्वागत साज सज बाओ, कि यहां मुनिराज आये हैं यहाँ मुनिराज
लतायें तुम वलैया लो, हृदय के फूल हारों से
तितलिया रंग वरसाओ वहारों की वहारों से
मुवारक वाद अलि गाओं, कि यहाँ मुनिराज आये हैं यहाँ मुनिराज
दौड़ कर गंग जमुना तुम, चरण प्रक्षाल कर जाओ
कि धरती तू उगल सोना, धनद सम कोष भर जाओ
इन्द्र आनन्द घन छाओ, कि यहां मुनिराज आयें हैं यहाँ मुनिराज
सफल हो आगमन इनका, हमें सौभाग्य स्वागत का
सुखद जिनराज के दर्शन, इष्ट साधर्मी आगत का
यह मंगलाचार नित गाओ, कि यहां मुनिराज आये हैं।

हे परम दिगम्बर यती

मुक्तक

तूफान आते हैं आवेग से मकान तोड़ जाते हैं
संत आते है अपनी पहचान छोड़ जाते हैं
जगत की रीत ही निराली है साथियों
सभी यहां कुछ न कुछ निशान छोड़ जाते हैं

तर्ज–चल दिये छोड़ घर वार

हे परम दिगम्बर यती, महागुण व्रती, करो निस्तारा
नहीं तुम बिन कौन हमारा।
तुम बीस आठ गुण धारी हो
जग जीव मात्र हितकारी हो
बाइस परिषह जीत धरम रखवारा–नहीं तुम बिन
तुम आतम ज्ञानी ध्यानी हो
शुचि स्वपर भेद विज्ञानी हो
है रत्नत्रय गुण मण्डित हृदय तुम्हारा–नहीं तुम बिन
तुम क्षमा शील निर्णय सागर
हो विश्व पूज्य वर रत्नाकर
है हित मित सत उपदेश तुम्हारा–नहीं तुम बिन
प्रेम मूर्ति हो समदर्शी
हो भव्य जीव मन आकर्षी
है निर्विकार निर्दोष स्वरूप तुम्हारा–नहीं तुम बिन
है यही अवस्था एक सार
जो पहुंचाती है मोक्ष द्वार
सौभाग्य आपसा बाना होय हमारा–नहीं तुम बिन

तिहारे ध्यान की मूरत

मुक्तक

जो माया में फंसा वह भगवान नहीं है
जो अध्यात्म से दूर रहता वह विज्ञान नहीं है
कोई किसी को माने या न माने अपनी इच्छा मगर
जिसे अपने व्यवहार का भान नहीं वह इन्सान नहीं है।

भजन

तिहारे ध्यान की मूरत अजब छवि को दिखाती हैं
विषय की वासना तज कर-निजातम लौ लगाती हैं
तिहारे ध्यान

तेरे दर्शन से है स्वामी, लखा है रूप में तेरा
तजूँ कब राग तन धन का, ये सब मेरे विजाति हैं
तिहारे ध्यान

जगत के देव सब देखे—कोई रागी कोई द्वेषी
किसी के हाथ आयुध है—किसी को नार भाती हैं
तिहारे ध्यान

जगत के देव हट ग्राही—कुनय के पक्ष पाती हैं
तु ही सुनय का है वेत्ता—वचन तेरे अघाती हैं
तिहारे ध्यान

मुझे कुछ चाह नहीं जग की—यही है चाह स्वामी जी

जपूं तुम नाम की माला—जो मेरे काम आती हैं
तिहारे ध्यान

तुम्हारी छवि निरख स्वामी जो निजातम लौ लगी मेरे
यही लौ पार कर देगी जो भक्तों को सुहाती हैं
तिहारे ध्यान की मूरत अजब छवि को दिखाती हैं
विषय की वासना तज कर निजातम लौ लगाती।
तिहारे ध्यान

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी हमे

मुक्तक

संसार चक्र से वचने हेतु, बुलन्दी का नजारा चाहिये,
अब संसार भ्रमण नहीं जिन्दगी का किनारा चाहिए।
बहुत खोजे सहारों के सहारे दुःख भरी दुनिया में,
अब संसार से छूटने के लिए बेसहारों को सहारा चाहिए॥

भजन

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी हमें नहिं चैन पड़ती है।
छवि वैराग्य की तेरी मेरी आखों में फिरती है॥ टेक
निराभूषण विगत दूषण, पद्म आसन मधुर भाषण।
नजर नेनों की नाशा की, अनी पर से गुजरती है
तुम्हारे ध्यान....

नहीं कर्मो का डर हमको, कि जब लगे ध्यान चरणों में
तेरे दर्शन से सुनते हैं, करम रेखा बदलती है
तुम्हारे ध्यान....

मिले गर स्वर्ग की सम्पत्ति, अचम्भा कौन सा इसमें
तुम्हें जो नयन भर देखे, गति दुरगति की टलती हैं
तुम्हारे ध्यान....
हजारों मूर्तियाँ हमने बहुत सी अन्य मत देखी

शान्त मूरत तुम्हारी सी नहीं नजरों में चढ़ती है
तुम्हारे ध्यान....

जगत शिरताज हो जिनराज, सेवक को शरण लीजे
तुम्हारा क्या बिगड़ता है, मेरी बिगड़ी सुधरती है
तुम्हारे ध्यान....

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी, हमें नहीं चैन पड़ती है
छवि वैराग्य की तेरी, मेरी आँखों में फिरती है।

जो सिद्ध हुये हैं उनकी जरा याद करो

मुक्तक

अपनी आदमियत को स्वयं खो रहा है आदमी
दिन का उदय होने पर भी सो रहा है आदमी
आम की चाह में बबूल बीज बो रहा है आदमी
इस नर भव को विषयों में खो रहा है आदमी।

तर्ज–ओ मेरे वतन के लोगो

ओ जैन धर्म के लोगो जारा याद करोये कहानी॥टेक॥
जो सिद्ध हुए हैं उनकी जरा याद करो तुम कहानी
ये मेरे अरहंत स्वामी तुम देना मुझे सहारा
है नमन् चरण में तेरे मत लाखों वार हमारा
जो सिद्ध हुये...
बढ गये असीम को पाने वह मुक्ति के परवाने
था भेष दिगम्बर धारा, संतो ने इसी बहाने
हुआ धन्य है उनका जीवन औ धन्य भी हुई जवानी
जो सिद्ध हुये...
त्यागा है मोह जहां से त्यागा है सारा जमाना
सब राग रंग भी त्यागा, त्यागा है गान बजाना
कई लोगों ने था रोका, पर बात एक ना मानी
जो सिद्ध हुये...
तुम मत भूलो सन्तों ने पर्वत पर ध्यान लगाया

तप करके ध्यान अग्नि में था केवल ज्ञान जगाया
शुभ वीतरागता द्वारा ही बने हैं केवल ज्ञानी
जो सिद्ध हुये...

जब अन्त समय आया तो कर्मों का किया सफाया
फिर मुक्ति वधु पाने से कोई भी रोक न पाया
बन गये वसुनन्दी धरती पर, विद्यानन्द की श्रेष्ठ निशानी
जो सिद्ध हुये...

है प्रति आतम में क्षमता बन सकता वह भगवन
वह पा सकता है भाई मुक्ति जाकर के मधुवन
वसुनन्दी जीवन की गढ़ लो तुम सुन्दर एक कहानी
जो सिद्ध हुये है उनकी जरा याद करो तुम कहानी।

मानव जनम तुझ को हीरा दिया

मुक्तक

जल से पतला कौन है
कौन भूमि से भारी
कौन अग्नि से तेज है
कौन काजल से काली
जल से पतला ज्ञान है
पाप भूमि से भारी
क्रोध अग्नि से तेज है
कलंक काजल काली

भजन

प्रभू ने मानव जनम तुझ को हीरा दिया
अब तू व्यर्था गमाये तो में क्या करूं—टेक
मूल ग्रन्थों ने सब कुछ बता ही दिया
तेरी समझ में न आया तो मैं क्या करूं
प्रभू मानव जनम...
प्रभू ने अन्न दूध फल आदि पैदा किया
और मेवा मिष्ठान भी तुझ को दिया
अब तू निर्दयी हो जीव सताने लगा
हिंसा पाप कमाये तो में क्या करूं
प्रभू मानव जनम...
दीन दुखियों के दिल को सताने लगा

रात दिन पाप में मन लगाने लगा
कर्म जैसा किया वैसा पाने लगा
अब आंसू वहाये तो में क्या करूं
प्रभू मानव जनम...

नाम प्रभू का तेरा पाप भी काट दे
पाप करम से तू अपना मन डाट ले
में तो कहता हूँ आजा तू गुरु शरण
अब तू आये न आये तो में क्या करूं
प्रभू मानव जनम...

छोड़ दे छल कपट हो जा आतम मगन
सहज ही में मिटे तेरा आवा गमन
जो ना मानेगा सत गुरुओं के वचन
यूं ही चक्कर लगाये तो मैं क्या करूं

प्रभू ने मानव जनम तुझ को हीरा दिया
अब तू व्यर्था गमाये तो मैं क्या करूँ।

धर्म बिन कोई नहीं अपना

मुक्तक

निर्बल को दबाने से कभी धाक नहीं होती
झूठ बोलने से कभी किसी की साख नहीं होती
प्रारंभ में किसी को कुछ बता दो
नीम की निंबोरी कभी दाख नहीं होती

भजन

धर्म बिन कोई नहीं अपना
सुख सम्पति धन थिर नहि जग में, जैसे रैन सपना
धर्म बिन कोई नहीं अपना
आगे किया, सो पाया भाई, याही है निरना।
अब जो करेगा, सो पावेगा, तातें धर्म करना॥
धर्म बिन कोई नहीं अपना

ऐसे सब संसार कहत है, धर्म किये तिरना।
पर पीड़ा विसनादिक सेवे, नरक विषैं परना॥
धर्म बिन कोई नहीं अपना

नृप के घर सारी सम्पत्ति, नरक ताकैं ज्वर तपना।
अरू दरिद्री कैं हूं ज्वर है, पाप उदय थपना॥
धर्म बिन कोई नहीं अपना
नाते तो स्वार्थ के साथी, तो हि विपति भरना,

वन गिरि सरिता अग्नि जुद्ध में, धर्म ही की सरना॥
धर्म बिन कोई नहीं अपना

चित बुधजन संतोष धारना, पर चिन्ता तजना
विपत्ति पड़ैं तो समता रखना, परमातम जपना
धर्म बिन कोई नहीं अपना

सुख सम्पत्ति धन थिर नहीं जग में, जैसे रैन सपना
धर्म बिन कोई नहीं अपना

तव नाम का सुमरण करूं

मुक्तक

ना राजा बचा है न रानी बचेगी
ना तेरी ना मेरी जवानी बचेगी
बचा ही नहीं मौत से यहाँ कोई
बच ही गई तो कहानी बचेगी

तर्ज-दीन बन्धु श्री पति

तव नाम का सुमरण करू भव ताप नशै है
चन्दा तेरे चरण में शत नमन करे हैं
तू तीन लोक नाथ तरण तारण कहाता
तिहूँ लोक में तव नाम का जयकार गुंजाता
सुर असुर नाग इन्द्र सब तव वन्दना करै
चन्दा तेरे चरण में शत शत नमन करैं
जो भी शरण में आया खाली हाथ नहीं गया
जिस कामना को साथ लाया पूर्ण कर गया
मुक्ति और मुक्ति के दातार तुम कहे
चन्दा तेरे चरण में शत शत नमन करें
संसार तो असार भव रोग असाध्य हैं
इनकी तो औषधी बस तव अर्चना ही हैं
दर्शन स्तुति पाठ तव गुण गान करे हैं
चन्दा तेरे चरण में शत शत नमन करैं

तब दर्शनों से मम निज दर्श होवे हैं
जो है स्वरूप आपका वह ही मेरा हैं
मित्थ्वात ने मगर इसे तो ढक दिया है
वह ज्योति सम्यक दीजिये निज धाम होवे है
चन्दा तेरे चरण में शत शत नमन करे हैं।

गुरु देव दया करके

मुक्तक

सारा चमन उदास है क्या बात हो गयी
सूरज निकल न पाया और रात हो गयी
हम जिन्दगी को खोजने निकले थे शहर में
अंजान मौत से ही मुलाकात हो गयी

भजन

गुरु देव दया करके, मुझको अपना लेना
मैं शरण पड़ा तेरी, चरणों में जगह देना
गुरु देव...

करुणा निधि नाम तेरा, करुणा दिखलाओ तुम
सोये हुये भव्यों को, हे नाथ जगाओ तुम
मेरी नाव भवर डोले, उस पार लगा देना
गुरु देव...

तुम सुख के सागर हो, दुखियों के सहारे हो
इस तन में समाये हो, हमें प्राणों से प्यारे हो
नित माला जपूं तेरी, नहीं दिल से भुला देना
गुरु देव...
पापी हूँ कपटी हूँ, जैसा भी हूँ तेरा हूँ

घर वार छोड़कर मैं, जीवन में अकेला हूँ
मैं दुख से व्याकुल हूँ, मेरे दुःख को भगा देना
गुरु देव...

मैं तेरा सेवक हूँ, तेरे चरणों का चेला हूँ
नहीं नाथ भुला देना, इस जग में अकेला हूँ
तेरे दर का भिखारी हूँ, मेरे दोष मिटा देना
गुरु देव...

क्षमा करना क्षमा करना

मुक्तक

मानव को क्रोध से नहीं प्रेम से जीतो
क्रोध को क्रोध से नहीं क्षमा से जीतो
तुम यदि किसी का दिल जीतना चाहते हो तो
अधिकार से नहीं मेरे मित्र समर्पण से जीतो

भजन

क्षमा करना, क्षमा करना, क्षमा हम आज चाही है
क्षमा करता, हृदय से जो, बने मुक्ति का राही है॥टेक॥
क्षमा माता, क्षमा भ्राता, क्षमा गुरु जन, क्षमा दाता
क्षमा भगिनी, क्षमा बन्धु, क्षमा देना मुझे त्राता
क्षमा करना...

क्षमा त्रस जीव से मांगू, क्षमा सर्व सत्व से मांगू
क्षमा देना सभी प्राणी, वैर को नित्य में त्यागूं
क्षमा वसुनन्दी पाकर के, बने मुक्ति का राही है
क्षमा करना...

क्षमा मन से, क्षमा तन से, क्षमा वानी औ चेतन से
क्षमा निश्छल सरल उर से, क्षमा परिजन व पुरजन्
स
क्षमा कर जोड़ वसुनन्दी, क्षमा ही जग सराही है॥
क्षमा करना...

तुम्हीं मेरे मन्दिर तुम्हीं मेरे पूजा

मुक्तक

विद्यानंदाचार्य गुरु की वाणी के जो आगर है
कुन्द कुन्द के प्रति रूप धरती पर श्री वसुनन्दी जी है
चौथे युग के मुनिराजों की चर्या में जो ख्यात रहे
ऐसे गुरुवर के चरणों में मेरा भी ये माथ रहे॥

तर्ज-तुम्हीं मेरे मन्दिर...

तुम्हीं मेरे मन्दिर तुम्हीं मेरी पूजा
तुम्हीं देवता हो तुम्हीं देवता हो
गुरु देव स्वामी ये सेवक तुम्हारा
तुम्हारे बिना कौन जग में हमारा
तुम्हीं मेरे मन्दिर

मेरे मन की दुनियाँ में तुम जब से आये
अज्ञान की राह में जग मगाये
रखूँगा तुम्हें मैं दिल में वसा के
अपने सदन का सूरज वना के
तुम्हीं मेरे मन्दिर
तुम्हारे बरावर नहीं कोई ज्ञानी

ध्याते तुम्हे हैं निरंतर ही ज्ञानी
तुम्हीं विष्णु ब्रह्मा महेश्वर तुम्हीं हो
तुम्ही सर्व सुन्दर भय हर तुम्हीं हो
तुम्हीं मेरे मन्दिर

गुरु ने सभी के, मनोरथ हैं पूरे
हमारे रहे क्यों गुरुवर अधूरे
अहो दुःख भञ्जन ऐ सब दुःख मिटा दो
हमारी भी गुरुवर बिगड़ी बना दो
तुम्हीं मेरे मन्दिर तुम्हीं मेरी पूजा॥

जीवन के किसी भी पल में

मुक्तक

राही चले जिस राह पर, उसे हम पंथ कहते हैं
रखे जो श्रेष्ठ बुद्धि को, उसे धीमन्त कहते हैं,
रखे जो लाज लक्ष्मी की, उसे श्रीमन्त कहते हैं
चले जो मुक्ति पथ की ओर, उन्हें गुरु वसुनन्दी कहते हैं।

तर्ज–ए मेरे वतन के लोगो

जीवन के किसी भी पल में, वैराग्य उपज सकता है
संसार में रहकर प्राणी, संसार को तज सकता है॥ टेक
कहीं दर्पण देख विरक्ति, कहीं मृतक देख वैरागी,
विन कारण दीक्षा लेता, वो पूर्व जन्म का त्यागी
निर्ग्रन्थ साधु ही इतने, सद्‌गुण से सज सकता है॥
संसार में रहकर...
आत्मा तो अजर अमर है, हम आयु गिने इस तन की,
वैसा ही जीवन बनता, जैसी धारा चिंतन की
जो पर को समझ न पाया, वह स्वयं समझ सकता है॥
संसार में रहकर...
शास्त्रों में सुने थे जैसे, वैसे ही देखे मुनिवर,
तेजस्वी परम तपस्वी, उपकारी निर्णय सागर,
इनकी मृदु वाणी सुनकर, हर प्राणी सुधर सकता है॥
संसार में रहकर...

आचरण तुम्हारा शुद्ध नहीं

मुक्तक

कमान से छूटा तीर कभी वापस नहीं आता
आँखों से गिरा आँसू कभी वापस नहीं आता
समय अनमोल है ऐ मेरे साथियों
गुजरा हुआ समय कभी वापस नहीं आता

तर्ज–दिल लूटने वाले जादूगर

आचरण तुम्हारा शुद्ध नहीं, कल्याण तुम्हारा कैसे हो,
विषयन वश भक्ष अभक्ष भके, हिए ज्ञान उजाला कैसे हो,
दिल दुनिया से भय भीत नहीं, आतम हित से कुछ प्रीत नहीं
तन पिंजड़े से जिय निकल पड़े, प्रस्थान सहारा कैसे हो
आचरण तुम्हारा शुद्ध...

कायर बन व्रत जप छोड़ रहे, तप करने से मुख मोड़ रहे,
विषयन से ममता जोड़ रहे, बिन दान गुजारा कैसे हो,
आचरण तुम्हारा शुद्ध...

पूजा कर मन इच्छा धरते, मन चंचल कर माला जपते,
इस तन को अपना मान रहे, सत ज्ञान तुम्हारा कैसे हो,
आचरण तुम्हारा शुद्ध...

तोता जैसे रटना रटते, आगम कब अर्थ समझते हो,
झूठें धंधे गट पट करते, करमों का निवारा कैसे हो,
आचरण तुम्हारा शुद्ध...

नर तन चिन्तामणि पाकर के, क्यों खोते हो काग उड़ा करके,
डूबे हो अगम भवोदधि में, विन ज्ञान किनारा कैसे हो।
आचरण तुम्हारा शुद्ध...

गुरु देव मेरी नैया उस पार

मुक्तक

सूरज की हर किरण रोशनी दे आपको
फूलों की हर कली खुशबू दे आपको
हम प्रभू से यही प्रार्थना करते हैं।
हजारों वर्षों की उम्र दे आपको॥

भजन

गुरु देव मेरी नैया उस पार लगा देना
अब तक तो निभाया है आगे भी निभा देना॥टेक
मैं दीन दुखी निर्बल इक नाम रहे प्रति पल
यह सोच दरश दोगे, गुरु आज नहीं तो कल
जो बाग लगाया है फूलों से सजा देना॥
गुरु देव मेरी नैया...
तुम शन्ति सुधारस हो, तुम ज्ञान दिवाकर हो,
मम हंस चुगे मोती, तुम मान सरोवर हो,
दो बूंद सुधारस की, हम को भी पिला देना,
गुरु देव मेरी नैया...
रोकोगे भला कब तक, दर्शन से मुझे ऐसे,
चरणों से लिपट जाऊँ, वृक्षों से लता जैसे,
अब द्वार खड़ा तेरे, मुझे धीर बन्धा देना॥
गुरु देव मेरी नैया...

संकल्प किया हमने, संकल्प न ये टूटे,
ये भव-भव की प्रीती, ये कभी नहीं टूटे,
बस माँग करूँ इतनी, चरणों में जगह देना
गुरु देव मेरी नैया उस पार लगा देना
अब तक तो निभाया है आगे भी निभा देना।

पड़ी मझ धार में नैया

मुक्तक

किये बिना कोई भी काम आसान नहीं होता,
सहे बिना कोई भी काम महान नहीं होता।
गाँठ बांध लो उत्थान का मार्ग साधना ही है॥
तपे बिना कोई भी इंसान भगवान नहीं होता

तर्ज : बहारो फूल बरसाओ....

पड़ी मझधार में नैया उभारोगे तो क्या होगा
तरण तारण जगपति हो उभारोगे तो क्या होगा
फंसा में कर्म के फन्दे, पड़ा भव सिन्धु में आके।
झकोले दुःख के ये निशदिन, निहारोगे तो क्या होगा॥
पड़ी मझधार में नैया...

चतुरगति है भँवर जिसमें, भ्रमण की लहर है जिसमें
पड़ा विधि बस जु में उसमें, निकालोगे तो क्या होगा
पड़ी मझधार में नैया...

यह भव सागर अथाह है, मेरी है नाव अति झंझरी
सुनो यह अर्ज तुम स्वामी, सुधारोगे तो क्या होगा
पड़ी मझधार में नैया...
यहाँ कोई नहीं मेरा, मेरे रखवाले हो तुम हीं

बही जाती मेरी किस्ती, जु थामोगे तो क्या होगा
पड़ी मझधार में नैया...

शरण हम सबने लीनी है, भँवर में आ गयी नैया
मेरी विनती सुनो गुरुवर, विचारोगे तो क्या होगा

पड़ी मझधार में नैया, उवारोगे तो क्या होगा
तरण तारण जगत पति हो, उभारोगे तो क्या होगा॥

खिलौना जानकर दिल ये मेरा क्यों

मुक्तक

मैं पूछता हूँ संसार में सार कितना है
देखना है आज गुरुवर से प्यार कितना है।
आया हूँ तेरे दर पर कुछ न कुछ तो मिल जाये
नजर जिस चीज पर डालूँ तेरी तस्वीर हो जाये॥

तर्ज–खिलौना जानकर

खिलौना जानकर दिल ये मेरा क्यों तोड़ जाते हो
क्यों कंगना हाथ का तोड़ा मुकुट को तोड़ जाते हो
प्रभू तोरन पे जो आये, पशु हाय ये चिल्लाये
हो इनका घात शादी में, ये सुनकर नेमी थर्राये
जरा दर्शन तो दे जाओ, क्यों रथ को मोड़ जाते हो।
खिलौना जानकर...

दया पशुओं पे है आयी, नहीं मुझ पे तरस खाया
खता मेरी बता जाओ, नहीं क्यों दरश दिखलाया
मेरी नो भव की प्रीति क्यों, क्षणिक में तोड़ जाते हो
खिलौना जानकर...

उतारे वस्त्र आभूषण, चढ़े गिरनार पर जाकर
कोई जाकर मना लाओ, मेरी विपदा को समझाकर

मुझे किसके सहारे पर, प्रभू जी छोड़ जाते हो
खिलौना जानकर...

मुझे यह हो गया निश्चय, है स्वारथ का ये जग सारा
तजूँ में मोह ममता को, तजूँ घर बार-परिवार
जोगन बन बसूँ उस वन, प्रभू जिस ठोर जाते हैं,
खिलौना जानकर...

कहे राजुल सुनो सखियों, उतारों मेरा सब गहना
न छेड़ो व्याह की चर्चा, मुझे घर में नहीं रहना
मैं शिव सुन्दर से झगड़ूंगी, प्रभू क्यों छोड़ जाते हो।

खिलौना जानकर दिल ये मेरा क्यों तोड़ जाते हो
क्यों कंगना हाथ का तोड़ा मुकट को तोड़ जाते हो।
खिलौना जानकर...

गुरुवर तेरे चरणों की

मुक्तक

विषय कषाय की कालिख को मिटाकर देखो
योग को छोड़कर उपयोग लगाकर देखो
तेरी आत्मा में चमकती हुई वो ज्योति है
जरा अज्ञान का पर्दा हटा कर तो देखो।

भजन

गुरुवर तेरे चरणों की, हमें धूल जो मिल जाये
चरणों की रज पाकर, तकदीर बदल जाये।।टेक
मेरा मन बड़ा चंचल है, इसे कैसे मैं समझाऊँ
जितना मैं समझाऊँ, उतना ही मचल जाये
गुरुवर तेरे...
मेरी नाव भंवर में है, उसे पार लगा देना 2
तेरे एक इसारे से, मेरी नाव उभर जाये
गुरुवर तेरे...
नजरों से जो गिरजाये मुश्किल है संभल पाना
नजरों से गिराना ना, चाहे जितनी सजा देना 2।
गुरुवर तेरे...
बस एक तमन्ना है, तुम सामने हो मेरे
तुम सामने हो मेरे, चाहे प्राण निकल जाये
गुरुवर तेरे...
गुरुवर तेरे चरणों की, हमें धूल जो मिल जाये
चरणों की रज पाकर, तकदीर बदल जाये
गुरुवर तेरे...

तुम्हें ढूढता हूँ गली और वन में

मुक्तक

छोटी सी जिन्दगी में तकरार किसलिए
होती है दिलों में ये दीवार किसलिये
थोड़े दिनों का साथ है फिर तो जुदा-जुदा
फिर राह में काटें बिछाते हो किसलिए

तर्ज–तुम्हीं मेरे मन्दिर

तुम्हें ढूढता हूँ गली और वन में, महावीर आओ, महावीर आओ
अखियाँ तुम्हारे दर्शन की प्यासी, प्यास बुझाओं प्यास बुझाओ।टेक
श्री पाल का कुष्ट तुम्हीं ने मिटाया, सती अंजना को दुःख से छुड़ाया-2
शरण में तुम्हारे कब से खड़ा हूँ, नैया तो मेरी पार लगा ओ
अखिया तुम्हारे...

सुपथ कौन सा है किधर को है जाना, नहीं मुझ को मालूम अपना ठिकाना-2
जीवन मरण के फन्दे से मुझको छुड़ाओं, महावीर आओ, महावीर आओ
अखिया तुम्हारे...

आशा के फूलों का हार बना कर, लाया हूँ भगवन में दिल में सजाकर-2
मेरी भेंट को आप ठुकरा न देना, मेरे पास आओ मेरे पास आओ
अखिया तुम्हारे...

रात्रि मत खाओ भाई

मुक्तक

आचरण हैवान को इन्सान बना देता है
माली वीरान को गुलिस्तान बना देता है
मैं अपनी बीती कहता हूँ दूसरे की नहीं
त्याग इन्सान को भगवान बना देता है

तर्ज—चल दिया छोड़कर

रात्रि मत खाओ भाई, दोष लग जाई नरक में जाना
तुम छोड़ो रात का खाना॥

जो रात में भोजन करते हैं, पानी बिन छानके पीते है
ऐसा करने से दोष माँस लग जाना तुम छोड़ो रात का खाना॥रात्रिमत...

प्रभु के दर्शन तुम नित्य करो, शक्ति के माफिक दान करो
करके दानादि मोह भाव को तजना तुम छोड़ो रात का खाना॥रात्रिमत...

जो दान नाम को देते हैं, मर कर वो हाथी होते है
इसलिए अहं को तज कर दान को देना
तुम छोड़ो रात का खानारात्रिमत...॥
नहीं करना तुम रात्रि भोजन, तजना हिंसा तुम हर पल ही
नहीं तो नरकों में तुझे पड़ेगा जाना
तुम छोड़ो रात का खाना॥रात्रिमत...

आजाओं मेरे वीरा

मुक्तक

भावना पाषण को भगवान बना देती है
साधना अभिशाप को वरदान बना देती है
विवेक के स्तर से नीचे उतर कर
भावना इन्सान को शैतान बना देती है

तर्ज–माता तू दया करके...

आजाओ मेरे वीरा, बिगड़ी को बना जाओ
टूटी सी मेरी नैय्या, अब पार लगा जाओ॥
सिद्धारथ के प्यारे हो, त्रिशला के दुलारे हो
जिसका न कोई जगमें, उसके तुम सहारे हो
अरजी ये मेरी सुन के, संकट से छुड़ा देना
आजाओ मेरे वीरा...

अब जन्म लिया तुमने, खुशियाँ छाई जग में,
कुण्डलपुर नगरी में, बजने लगी शहनाई
फिर छायें वही खुशियाँ, तुम दर्श दिखा जाओ॥
आजाओ मेरे वीरा...

तेरी महिमा न्यारी है, चरणों में पुजारी है
तेरी विरद सुनी जग से, ये अर्जी गुजारी है॥
शरणा गत है तेरी, सब कष्ट मिटा जाओ
आजोओ मेरे वीरा...

जिन धर्म मार्ग पर चलिये

मुक्तक

दीप की जलन में पतगें का अरमान छिपा होता है
भक्त की लगन में भक्ति का वरदान छिपा होता है
मेरे भाई जरा नीचे देखकर चलो
हर एक जीव में भगवान छिपा होता है

तर्ज-जरा सामने तो आओ

जिन धर्म मार्ग पर चलिये, नर जीवन में जो सार है
श्रावक कुल सफल बनालो, मिलता नहि बारम्बार है॥टेक
काल अनन्त निगोद विताया, जन्म मरण ही कर पाया
वर्ष सैकड़ों रहा नारकी, चैन नहीं इक पल पाया
नरकों में सही जो मार हैं, वर्णन करना दुश्वार है।
श्रावक कुल सफल...

कितने बार पशु गति पाई, वध बन्धन दुःख खूब सहे,
कीट पतंग असैनी होकर, वर्ष हजारों मूक रहे
क्या इन गतियों से ही प्यार है, या आतम के हित का विचार है
श्रावक कुल सफल...

देव मनुष्य यदि हुये कभी तो, राग द्वेष में भूल गये
विषय भोग में तृष्णा बढ गई, धन वैभव पा फूल गये॥

नर जीवन ये दिन चार है, फिर वही नरक का द्वार है॥
श्रावक कुल सफल...

निज आतम के बनो पुजारी, परमातम पद पाओगे,
समय गुजरता जाये रे भैया, फिर पीछे पछताओगे।
हाय कैसा अजब संसार है, दुःख साधन से ही प्यार है
श्रावक कुल सफल...

बाजे कुण्डलपुर में बधाई

मुक्तक

दुःख दर्द समझने को दिल में पीर चाहिये
अग्नि को बुझाने के लिए नीर चाहिये
अणुवम्बों के स्टाक से हिंसा नहीं मिटती
हिंसा को मिटाने के लिए महावीर चाहिये

भजन

बाजे कुण्डल पुर में बधाई, कि नगरी में वीर जन्मे महावीर जी
जागे भाग्य हैं त्रिशला माँ के, कि त्रिभुवन के नाथ जनमे महावीर जी
बाजे कुण्डलपुर...
शुभ घड़ी जन्म की आयी, कि स्वर्गों से देव आये महावीर जी
बाजे कुण्डलपुर...
तेरा नव्हन करें मेरू पर, कि इन्द्र जल भर लाये महावीर जी
बाजे कुण्डलपुर...
तुझे देवियां झुलावें पलना, कि मन में मगन होके महावीर जी
बाजे कुण्डलपुर...
तेरे पिता लुटावें मोहरें, कि खजाने सारे खुल जायेंगे महावीर जी
बाजे कुण्डलपुर...
हम दर्श को तेरे आये, कि पाप सारे कट जायेंगे महावीर जी
बाजे कुण्डलपुर...

आ जाओं मेरे वीरा

मुक्तक

भावना से बड़ा भगवान नहीं होता
कल्पना से बड़ा पाषाण नहीं होता
देवताओं की तरह पूजते तो देखा बहुतों को
मगर हर इन्सान इन्सान नहीं होता

तर्ज–माता तू दया करके

आ जाओ मेरे वीरा, बिगड़ी को बना जाओ
टूटी सी मेरी नैया, अब पार लगा जाओ॥टेक॥
सिद्धारथ के प्यारे हो, त्रिशला के दुलारे हो
जिसका न कोई जग में, उसके तुम सहारे हो
अरजी ये मेरी सुन के, संकट से छुड़ा देना
आ जाओ मेरे वीरा...
जब जन्म लिया तुमने, खुशियाँ छाई जग में
कुण्डल पुर नगरी में, बजने लगी शहनाई।
फिर छायें वही खुशियाँ, अब दर्श दिखा जाओ॥
आ जाओं मेरे वीरा...
तेरी महिमा न्यारी है, चरणों में पुजारी है
तेरी विरद सुनी जग से, ये अर्जी गुजारी है।
शरणागत हैं तेरी, सब कष्ट मिटा जाओ
आ जाओं मेरे वीरा...

वाणी है कल्याणी वाणी

मुक्तक

पंखों पर विश्वास नहीं वह परिन्दा क्या
चरणों पर विश्वास नहीं वह चरिन्दा क्या
सांस लेने का नाम ही कोई जिन्दगी नहीं
जिसको अपने पर विश्वास नहीं वह जिन्दा क्या

तर्ज–आओ बच्चो तुम्हें दिखायें

वाणी है कल्याणी वाणी, वाणी जिन भगवान की
इस वाणी को श्रवण करो, तो इच्छा हो निर्वाण की
श्रीपाल को कुष्ट हुआ जब वन में डेरा डाला था
मैना सती का व्याह पिता ने, कोढी संग रचवाया था
कोढी पति भी पाकर मैना, अपना भाग्य सराहती
इस वाणी को श्रवण...

एक दिवस जब मैना सुन्दरी, दर्शन करने जाती
बैठे देख मुनिराज को, फूली नहीं समाती
दर्शन करके मुनिराज से, कहती दुःखद कहानी
इस वाणी को श्रवण...

मुनिराज बोले पुत्री तू, सिद्धचक्र का पाठ करो
गन्धोदक निश दिन लाकर के, णमोकार का जाप करो
अष्ट दिवस में रहे न, कुष्ट की तन में नाम निशानी
इस वाणी को श्रवण...

आषाड शुक्ला को जब पर्व अठाई आया था
मैना सती ने बड़े ठाठ से पूजा पाठ रचाया था
पूजा पाठ रचा करके जब रचना करी विधान की
इस वाणी को श्रवण...

गन्धोदक निशिदिन लाकर के, सबके तन माहि छिड़कती थी
श्रीपाल की काया निशिदिन अपना रूप बदलती थी
अष्ट दिवस में रही न कुष्ठ की तन में नाम निशानी
इस वाणी को श्रवण...

धन्य-धन्य हे वीर प्रभू जी धन्य तुम्हारी माया
श्रीपाल का कुष्ठ मिटाया मेरा कष्ट मिटाओ
आया हूँ चरणों में तेरे, रखना लाज हमारी
इस वाणी को श्रवण...

वाणी है कल्याणी वाणी, वाणी जिन भगवान की
इस वाणी को श्रवण करो तो इच्छा हो निर्वाण की

यह मंत्र महा णमोकार

मुक्तक

साधक हूँ तूफानी आघातों को सहलूंगा
बिना झिझक भीषण परीषहों को सहलूंगा
कर्म ही निष्ठुर बन गये हैं अघाती
अब मुझे क्या है कर्मों की मार को भी सहलूंगा

भजन

यह मंत्र महा णमोकार, नित उठ जप लेना।
यह मंत्र महा सुखकार, नित उठ जप लेना॥टेक
सती सीता ने मंत्र को ध्याया,
बन गया अग्नि में नीर, नित उठ जप लेना
यह मंत्र महा...
मनोरमा सती ने मन्त्र को ध्याया,
भर गया चलनी में नीर, नित उठ जप लेना
यह मंत्र महा...
सोमा सती ने मंत्र को ध्याया,
बन गया नाग का हार, नित उठ जप लेना,
यह मंत्र महा...
सेठ सुदर्शन ने मंत्र को ध्याया,
सूली का हुआ सिंहासन, नित उठ जप लेना
यह मंत्र महा...

क्या तन मांजता-रे

मुक्तक

हर मानव को शोलों को, पीना पड़ता है
हर मानव को फटे कपड़ों को सीना पड़ता है
तुम तो अभी से घबरा गये भाई
मानव को तो हर कष्टों में भी जीना पड़ता है।

भजन

क्या तन मांजता-रे, इक दिन माटी में मिल जाना
क्या तन धोबता रे, इक दिन माटी में मिल जाना॥टेक

छैला बनकर गयों बाग में, घर पगड़ी पर फूल 2
ठोकर खाय पडयो बा मांहीं, गयो चोकड़ी भूल
क्या तन धोबता...

जब तक तेल दिये में बाती, जगमग जगमग होय
जल गया तेल खतम हुई बाती, ले चल, ले चल होय॥
क्या तन धोबता...

हाड़ जले जैसे सूखी लकड़ी, केश जले जैसे घास
कंचन काया ऐसी जल गई, कोई न आवे पास
क्या तन धोबता...

तीन महीना तेरी बहना रोवे, छः महीने तक भाई
सदा सर्वदा माता रोवे, कर गयो आस पराई॥
क्या तन धोबता...

झुर मुर-झुर मुर त्रिया रोवे, बिछुड़ गयी मेरी जोड़ी
सत गुरु जी यूं उठकर बोले, जिन जोड़ी तिन तोड़ी
क्या तन धोबता...

केशरिया स्वास्तिक शुभ धारा

मुक्तक

सत्य को कभी किसी देश प्रदेश में बाँधा नहीं जाता।
सत्य को कभी किसी विशेष वेश में बाँधा नहीं जाता॥
असीम और अनंत होता है सदा सत्य भाईयो
सत्य को किसी आदेश उपदेश में बाँधा नहीं जाता।।

तर्ज–झण्डा ऊंचा रहे हमारा

केशरिया स्वास्तिक शुभ धारा, झण्डा जैन धर्म का प्यारा।
वैर विरोध मिटाने वाला, शान्ति सुधा बरसाने वाला
सदाचार सिखलाने वाला, सुपथ प्रदर्शक यही हमारा॥
झण्डा जैन...

समता पाठ पढ़ाने वाला, सबको गले लगाने वाला।
सच्चा वीर बनाने वाला, जैन धर्म मय हो जग सारा॥
झण्डा जैन...

शुभ लेश्या का पाठ पढ़ावे, धर्म ध्यान का ध्यान दिलावे
रत्नत्रय निधि निश्चय लावे, सुख शान्ति मय हो जग सारा॥
झण्डा जैन...

फर फर झण्डा फहराता है, शान्ति विश्व में फैलाता है।
धर्म अहिंसा दर्शाता है, सब जीवों का यही सहारा॥
झण्डा जैन...

सबके हृदय उमंग बढ़ावे, कर्म धीर बनना सिखलावे।
सेवा का नित पाठ पढ़ावे, वोलो महावीर जयकारा॥
झण्डा जैन...

आओं प्यारे सब जन आओ, इस झण्डे के नीचे आओ।
निश्चय ही निर्भयता पाओ, बोलो सिद्ध चक्र जयकारा॥
झण्डा जैन...

धर्म प्रेमियों अगर चाह है,

मुक्तक

मुक्ति तुम्हें मिले न जब तक पुरुषार्थ न छोड़ना।
समता की हथोडी से ममता का घड़ा न फोड़ना
बस इतना ध्यान हर समय रखना भाईयो
अपने स्वार्थों के पीछे आगम को मत मोड़ना॥

भजन

धर्म प्रेमियों अगर चाह है मुक्ति वधु के प्यार की।
तो दोनों की तुम्हें जरूरत निश्चय व व्यवहार की॥
समयसार का सारे जग को खुला हुआ संदेश है।
यहां न शंका की गुंजाइश श्री जिन का सन्देश है॥1॥
धर्म...

आचार्यों ने सावधान कर बार बार समझाया है।
जो रखते समभाव धर्म का मार्ग उन्हीं ने पाया है॥
बार-बार गाथायें कहती समयसार में सार की
दोनों की है सदा जरूरत निश्चय व व्यवहार की॥2॥
धर्म...

यदि निश्चय है मोक्ष महल तो सीढी है व्यवहार की
विन सीढी के यह ऊंचाई बोलो किसने पार की

मंजिल छूते छूट जायेगी, यह सीढ़ी व्यवहार की।
दोनों की है तुम्हें जरूरत, निश्चय व व्यवहार की॥3॥

अनगार धर्मामृत व पुरुषारथसिद्धियुपाय में।
पृष्ठ अठारह व बारह पर पहिले ही अध्याय में॥
हो करके मध्यस्थ समझते जो निश्चय व्यवहार को।
सच पूछो तो उन्हीं ने जाना जैन धर्म के सार को
इस झगड़े से दूर हटा जो, उसने नैया पार की॥
दोनों की है तुम्हें जरूरत, निश्चय वा व्यवहार की॥4॥
धर्म...

सद व्यवहार आचरण में हो, निश्चय हो श्रद्धान में,
पर से ममता त्याग हमारा मन हो आतम ध्यान में
करे सदा सम्यक्त्व साधना जो देता अमरत्व को
स्व का अनुभव करें, विचारें हर क्षण सातों तत्व को
भैया स्याद्वादमय कुंजी मोक्ष महल के द्वार की
दोनों की है तुम्हें जरूरत निश्चय व व्यवहार की
धर्म...

आत्म नियंत्रण में संयम है

मुक्तक

उजले कपड़ों से कोई सुन्दर नहीं होता
थोथे ज्ञान से कोई महान नहीं होता
शरीर में मत उलझों आतम को पहिचानों
क्रिया हीन ज्ञान से कोई पूज्य नहीं होता॥

भजन

आत्म नियंत्रण में संयम है यह तत्वों का मूल है।
माया ममता मोह परिग्रह संयम के प्रतिकूल है॥ टेक
संयम बिना शान्ति मिल जावे, यह आशा निर्मूल है
जो जीवन को महकाता है, वह संयम का फूल है
यह संयम ही सार जगत में, शेष असत्य असार है।
संयम में जीवन ढालें तो जग से बेड़ा पार है॥1॥
आत्म नियंत्रण

संयम के द्वारा नौका भवसागर से तर जायेगी
विविध द्वारे पकड़ोगे, तो हर दिशा उलझ जायेगी
यदि संयम का सिरा पा गये, डोर सुलझ जायेगी
इस संयम की महिमा सब धर्मों में अपरम्पार है
अणुव्रत और महाव्रत इनमें संयम का विश्राम है
आत्म नियंत्रण

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित, यह सब संयम के नाम है॥
इच्छाओं पर जाय पाने में यह संयम सरनाम है।
चिदानंद आनंद कंद यह संयम के परिणाम हैं
धर्मों की परिभाषाओं का इसमें गर्भित सार है।
संयम में जीवन ढालें तो जग से बेड़ा पार है॥3॥

आत्म नियंत्रण

इच्छाओं का दास मनुज तू

मुक्तक

मैं उनको तपाऊँगा, जिन्होंने मुझे तपाया है।
मैं उनको रूलाऊँगा, जिन्होंने मुझे रूलाया है,
वीर महावीर का बेटा हूँ, किसी कायर का नहीं।
मैं उन्हें भगाऊँगा जिन्हें वीर ने भगाया है॥

भजन

इच्छाओं का दास मनुज तू, अपने मन को थाम ले।
सबसे बड़ा तप यही यथा, हर क्षण संयम से काम ले॥टेक
जीवनान्त तक कभी न होता, इच्छाओं का अन्त है।
कारण इच्छा रानी का, यह कुल परिवार अनंत है,
इच्छायें हैं क्षीरोधदि सी, पर सामग्री ओस सी
अतः तृषा शम नर्थ न कोई, औषधि है सन्तोष सी॥
छांह मिले तो छांह ग्रहण कर, घाम मिले तो घाम ले॥1॥
इच्छाओं का...

इच्छा निग्रह पर ही निर्भर, भावों का उत्कर्ष है।
यह अनुभव उपरान्त निकाला, ऋषियों ने निष्कर्ष है॥
इच्छा निगृह बिना तपस्या, तन को देना कष्ट है
और विवेक विहीन तपों में, जीवन करना नष्ट है

पहिलें इच्छा निग्रह करले, पीछे तप का नाम ले॥2॥
इच्छाओ का...

पंचइन्द्रिय स्पर्शन रसना, घ्राण, चच्छु, और कान है
इनके विषयों के ही वश में, निर्गुण औ गुणवान है॥
अतः संयमी बनकर इनपर, तू अपना अधिकार कर॥
और प्रत्येक परिस्थिति, में तू समता अंगीकार कर
एकभाव से कर्कश गाली, एवं नम्र प्रणाम ले॥3॥
इच्छाओं का...

न अपना ज्ञान धन खोता

मुक्तक

उजले कपड़ों से कोई सुन्दर नहीं होता।
थोथे ज्ञान से कोई महान नहीं होता,
शरीर में मत उलझों-आतम को पहिचानों।
क्रिया हीन ज्ञान से कोई पूज्य नहीं होता॥

तर्ज–बहारों फूल

न अपना ज्ञान धन खोता, भिखारी क्यों बना होता।
खुदी का खुद पुजारी तूं कभी का बन गया होता॥टेक॥
अचेतन अन्य चेतन में, ये मेरे हैं मैं इनका हूँ
इसी दुर्बुद्धि से तो खा, रहा भव सिन्धु में गोता॥1॥
न अपना ज्ञान...

बना तू दास जिस तन का, खिलाते सुख दिलाते हो 2
दुखी कर मिटने से पहिले, दुखों का बीज बो जाता॥2॥
न अपना ज्ञान...

तुझे है कामना का रोग, इसका वैद्य ना कोई
ये मिट भी जाता जड़ से गर, चिकित्सक तू ही बन जाता॥3॥
न अपना ज्ञान...
भजों चारित्र की औषधि, मिलाकर ज्ञान के रस में

रखो परहेज विषयों का, नहिं तो सर्व दुख दाता॥4॥
न अपना ज्ञान...

लखो निज आत्म विधा निधि, मिटाओं दैत्य ये अपना
न सुख दुख कर मनोहर देखकर जीवन में छिन सपना॥5॥
न अपना ज्ञान...

श्री चन्द प्रभू भगवान प्रगट भये

मुक्तक

जिसके पास कुछ नहीं, उन पर हंसती है दुनिया
जिसके पास सब कुछ है उनसे जलती है दुनिया
हमारे पास तो श्री वसुनन्दी गुरुवर है
जिन को पाने के लिए तरसती है दुनिया

तर्ज–जब तुम्हीं चले परदेश

श्री चन्द्र प्रभू भगवान, प्रगट भये आज देहरा माहीं,
भक्तों का करो निस्तारा॥
नित यात्री दूर से आते हैं, दर्शन कर दुखः मिटाते है
है दुखी जनों को प्रभु जी तुमने तारा॥ भक्तो का करो निस्तारा
सब अपनी व्यथा सुनाते है, मन वांछित फल पा जाते है
सब भूत प्रेत सब तुमसे करे, किनारा॥ भक्तों का करो
प्रभू शरण में वसुनन्दी आया है, दर्शन कर मन हर्षाया है
प्रभू तेरा लिया है हमने सहारा॥ भक्तों का करो

ओ मुशाफिर सोचले

मुक्तक

बाधाओं से टकराये जो उसे इन्सान कहते है।
बाधाओं से घबराये जो उसे हैवान कहते है॥
करे उत्पन्न बाधा जो उसे शैतान कहते है
तीनो से परे है जो उसे भगवान कहते है।

भजन

ओ मुसाफिर सोच ले, कब तलक रहना यहाँ।
ये भी सोचो छोड़ करके, जायेंगे हम कब कहाँ॥
कब बिछुड़ जायेगा ये सब, तुझको ये क्या ज्ञान है।
जाओगे तुम जब सफर में, संग ना जावे ये जग वहाँ॥

जो कुछ किया है आज तक, अपने लिये तूने क्या किया।
हँस-हँस के तूने जहर को, अमृत समझ कर नित पिया॥
अब भी समझ ले भोले प्राणी, ये काला धन्धा व्यर्थ है।
मोह की मदिरा को पीके, अपने लिए तूने क्या किया॥

जो कुछ हुआ सो भूल जा, आगे का रास्ता साफ कर।
व्यसनों को तज दे ओ मुसाफिर, निर्विघ्न हो तेरा सफर॥
पूर्व का इतिहास देखो, रहा व्यवसन सब का शत्रु है।
तू शत्रु से बचकर निकल जा, हृदय अपने ज्ञान धर।

जिन्दगी का जो समय, बाकी बचा है हाथ में॥
आत्मा चिन्तन में बिताओ, जायेगा वही साथ में
जो गया सो जाने दो, उसकी चिन्ता छोड़ दो।
दृष्टि निर्मल करके अपनी, धर्मार्थ से तुम जोड़ दो॥

इस जग ने किसको क्या दिया, तुझ को भी क्या दे पायेगा।
आस तज दे इस जगत से, नहीं तो पछतायेगा॥
अपने पर विश्वास कर, तेरा कर्म ही तो मित्र है।
गर दूसरों को मित्र समझा, धोखा सदा तू खायेगा॥

क्या मिलेगा गर किसी को, मार दोगे जान से।
मारना है गर उसे तो, मार दो एहसान से॥
जान का मारा कभी, वापस भी आ सकता नहीं।
एहसान का मारा कभी, सर उठा सकता नहीं॥

कौन किसका है यहाँ, अपना पराया न करो।
अपना पराया छोड़कर, कर्तव्य पथ पर तुम बढ़ो॥
आपका परिवार व धन, कुछ नहीं रह पायेगा।
मृत्यु होगी आपकी जब, धर्म ही संग जायेगा॥

उपकार करना सीखलो, ये जिन्दगी की शान हैं।
उपकार जिसका कर दिया, उसपे बड़ा अहसान हैं॥
साथ कुछ ना जायेगा, तुमको भी ये क्या ध्यान हैं।
उपकार करने से मनुज, पाता सदा सम्मान है॥

कितने आये इस जमीं पर, खाये खेले चल दियें।

सूर्य उगता जिस तरह, उसकी तरह ही ढल दिये॥
जिन्दगी ढलने से पहिले, सत कर्म पर लीजिये।
कर न पाये सत कर्म तो, इस जग में आये किसलिए॥

इस कदर तू मस्त हो, व्यापार किसको कर रहा।
सतकर्म तज कर धन कमा, ये बैंक किसको भर रहा॥
जब साथ तेरे पाई भी, जा न सकेगी साथ में।
बेहोश हो नादान ओ, निज धर्म क्यों विसार रहा॥

छोटा बड़ा न कोई भी, ये मान्यता की बात है।
सबकी आत्मा एक सी हैं, धर्म सबके साथ है॥
ओ मुशाफिर धर्म को तज के, न कुछ पायेगा।
मुट्ठी बांधे आया था और हाथ बांधे जायेगा॥

कोई अगर निन्दा करे तो, रूष्ठ होना ना कभी।
अपनी गलती मानकर तुम मौन से सहना सभी॥
कुछ सहन करना सीख लो, जिससे दहन होगे करम।
दहन कर्मों का जो करले, मोक्ष पायेगा तभी॥

प्रीति रतन के वासते, जो मित्रता हो जाती है।
वो मित्रता हर हाल में, फलती है वह लहराती हैं॥
स्वार्थ का कीड़ा लगा तो मित्रता सड़ जायेगी।
ऐसे मित्रों में जाकर देखो, घृणा की वदबू आयेगी॥

जान अपने मित्र को हर कोई दे सकता मगर।
मित्र में गर मित्रता, मिल जाये तो पवित्र गर॥

मित्र ऐसा ही बनाना जो चरित्र से सम्पन्न हो।
फिक्र तुमको काहे की बेदाग हो तेरा सफ़र॥

छोटी सी जिन्दगी है, लम्बा ये रास्ता।
आदर्श जीवन जीना, खुद से ही वास्ता॥
सास्ता की याद व खुद का ही ख्याल रख।
ये दुनिया दुरंगी है खुद को ही अब तू लख॥

बीतनें वाली घड़ी को कौन लौटा पायेगा।
यह अवसर खो दिया, तो अन्त में पछतायेगा॥
जिन्दगी भर का कमाया साथ में क्या जायेगा।
इस धरा का इस धरा पर सब धरा रह जायेगा।

एक तरफ से अरथी

मुक्तक

है समय नदी की धार जिसमें सब वह जाया करते हैं।
इस समय बड़ा तूफान प्रबल पर्वत झुक जाया करते हैं॥
अक्सर दुनियाँ के लोग समय में चक्कर खाया करते हैं।
लेकिन कुछ ऐसे होते हैं जो इतिहास बनाया करते हैं॥

भजन

एक तरफ से अरथी आई, एक तरफ से डोली।
दोनों सखियाँ मिली राह में, करने लगी ठिठोली॥टेक
चार इधर हैं चार उधर हैं, दोनों संग बराती।
एक राह मरघट को जाती, एक महल को जाती॥
दोनों के ऊपर बिखरे है, फूल मखाने रोली

दोनों सखियाँ मिली रहा में, करनी लगी ठिठोली॥1॥
इधर मरण हैं उधर वरण है, दो पहलू जीवन के
एक तरफ हैं अन्त दूसरी तरफ महल सपनों के
छूटा साथी इधर एक का, उधर मिला हम जोली
दोनों सखियाँ मिली राह में, करने लगी ठिठोली॥2॥
एक अंधेरा एक उजेला, है पर्याय विनाशी
किन्तु आत्मा ध्रौव्य रूप है, है अक्षय अविनाशी
आना जाना लगा हुआ है, जिनवाणी की बोली
दोनों सखियाँ मिली राह में, करने लगीं ठिठोली॥3॥
जिसकी डोली आज उठी है, कल अरथी उठ जाये
ऐसा कोई नहीं जगत में, जिसको मौत न आये
अतः बढ़ो संयम के पथ पर, ले जीवन की डोली। दोनों...॥4॥
अरथी वाला जले आग में, जले राग में डोली
इस प्रकार दोनों ही जलते, आग राग की होली
सुखी सदा वे रहें जिन्होंने, समता केशर घोली॥5॥दोनों...
एक रुला अपनों को आई, आई एक हंसाने
उजड़ गया संसार एक का, आई एक बसाने
सुख दुःख देती सदा जीव को, निज कृत कर्म की टोली
दोनों सखियाँ मिली राह में, करने लगी ठिठोली॥6॥

इस जनम में न सही पर भव में

मुक्तक

झूठ जब हार जाता है जब सच्चाई से उलझता है
दुर्गंध हार जाती है जब खुशबू से उलझती है
आप मानों या न मानों, पर सत्य जानों
कर्म हार जाते हैं जब तपस्या से उलझते हैं।

भजन

इस जनम में न सही पर भव में मिलता है–2
अपनी-अपनी करनी का फल सबको मिलता है–2 टेक

एक फूल वो है जो वेदी पर चढ़ता है
एक फूल वो है जो अर्थी पर सजता है
फूल दोनों एक ही गुलशन में खिलता है
अपनी...

एक पत्थर वो है जिसकी मूरत बनती हैं
एक पत्थर वो है जो सड़कों पर बिछता हैं
पत्थर दोनों एक ही चट्टान से निकले हैं
अपनी...

एक मोती वो है जो माला में गुथता है
एक मोती वो है जो धरती पर गिरता है

मोती दोनों एक ही सीपों में मिलते हैं
अपनी...

एक भाई वो है जो मुनिराज बनता हैं
एक भाई वो है जो विषयों में रमता हैं
दोनों की जननी एक है पर अन्तर इतना हैं
अपनी-अपनी करनी का फल सबकों मिलता हैं
इस जन्म में न सही पर भव में मिलता हैं।
अपनी...

महामंत्र आराधना

णमोकार मुक्ति का प्रदाता
ओम् णमो अरिहंताणं

जो गाता निज को पा जाता
ओम् णमो सिद्धाणं

सुख का उजड़ा चमन खिलाता
ओम् णमो आइरियाणं

जीवन को नई दिशा दिखाता
ओम् णमो उवज्झायाणं

हो जायें कल्याणं तेरा कह
ओम् लोए सव्व साहूणं

णमोकार मुक्ति...

अन्दर की वेदना

मुक्तक

हर हालत में खुश रहो, ये जीने की कला है
जो पैदा हुआ है, वो एक दिन मिट्टी में मिला है
हर आदमी चाहता है, सुख आनन्द से जीना
खुद जियो और दूसरों को जीने दो इसी में भला है

भजन

कौन है मेरा इस दुनिया में, मैं हूँ एक अकेला
अनुभव ने यह सबक सिखाया, झूठा है जग मेला
एक नहीं जो समझ सका हो, मेरे दिल की भाषा
सब आशायें छूट गई हैं चारों ओर निराशा
चारो ओर निराशा
गम पी हमने जीना सीखा, जग में प्रेम लुटाया
करूणा ने जो दर्द जगाया, कोई समझ न पाया
भीतर जियरा रोया लेकिन, बाहर मुख मुस्काया
आखें खोई खोई रह गई, दुखः सागर लहराया
दुखः सागर लहराया
दिल घायल करते आये हैं, कुछ हम दर्द हमारे
मर मर कर भी हम जिन्दा है, मौत हमें क्या मारे
किसको अपना दर्द सुनायें, भाषा बोलें कैसी
करनी जैसी होगी मनवा, भरनी भी हो वैसी
भरनी भी हो वैसी
सबको सच्चा समझ बैठना, आदत रही हमारी

सीधे पन के कारण हमने, धक्के खाये भारी
जीवन में कुछ ऐसे आये, पाने साथ हमारा
जिनने मतलब ना सदने पर, हमको खंजर मारा
हम को खंजर मारा
ये कल तक जो साथ निभाते, हम पे जान लुटाते
आज न जाने किस कारण वो, हम से हैं कतराते
गलत फहमिया हटना मुश्किल, जो दिल में भर जायें
शक के कारण टूटे रिश्तें, फिर कैसे जुड़ पायें
फिर कैसे जुड़ पायें
नफरत है जिसको किस्मत में, प्रेम कहाँ पर पाये
वैरी को भी ना नसीब हो, जो गम हमने पाये
अपने बीते अपकर्मो पे, यह मनवा पछताये
प्रेम और करुणा विन, हमने कितने जन्म गवाये
कितने जन्म गवाये
यदि मर कर राहत मिलती तो, हम राहत पा जाते
तज तपती राहें जीवन की, मृत्यु छाँव में आते
मगर कर्ज जो लेकर आये, है अनिवार्य चुकाना
मौत नहीं है राहत फिर कभी, जीवन से कतराना
जीवन से कतराना
एक दिन मन ने पूछ लिया तुम, किसके खातिर जीते
क्यों इतने कष्टों को सहते, क्यों इतने गम पीते
दिन भर दिल वेचैन रहा पर, उत्तर एक ना आया
जीवन की अद्‌भुत्‌ धारा को यह मन समझ न पाया
यह मन समझ न पाया

दोहा

कर्मों से न वच सके आप स्वयं भगवान
फिर औरों की बात क्या, कर्म बड़े बलवान

मुसाफिर क्यों पड़ा सोता चेतना के क्षण

मुक्तक

सदा धर्म ने ही गुलाम नर को आजाद किया है
और उसी ने उजड़े लोगों को आबाद किया है
किन्तु न माफ़ करेगा उसे जमाना, जिस धार्मिक ने
निज ऐश्वर्य जुटाने लाखों को बरबाद किया है।

भजन

मुसाफिर क्यों पड़ा सोता, भरोसा है न इक पल का,
दमा दम बज रहा डंका, तमाशा है चला चल का॥टेक॥

सुबह जो तख्त शाही पर, बड़े सज धज के बैठे थे
दुपहरी वक्त में उनका, हुआ है वास जंगल का॥1॥मुसाफिर...

कहाँ हैं राम और लक्ष्मण, कहाँ रावण से बलधारी
कहाँ हनुमंत से योद्धा, पता जिनके न था बल का॥2॥मुसाफिर...

उन्हों को काल ने खाया, तुम्हें भी काल खावेगा
सफर सामान उठाकर तू, बना ले बोझ को हल्का॥3॥मुसाफिर...

जरा सी जिन्दगी पर न इतना मान कर मूरख
यह बीते जिन्दगी पल में, कि जैसे बुद बुदा जल का॥4॥मुसाफिर...

नसीहत मान ले ज्योति, उमर पल पल में कम होती
जो करना आज ही करलें, भरोसा कुछ न कर कल का॥5॥मुसाफिर...

ये काया काँच की शीशी—फूल मत देखकर इसको
छिनक कर टूट जायेगी, कि जैसे बुद बुदा जल का॥6॥मुसाफिर...

यह धन दौलत मकां मन्दिर, जो तु अपना बताता है
कभी हरगिज नहीं तेरे, छोड़ जंजाल सब गम का॥7॥मुसाफिर...

स्वजन माता पितु दारा, सवै परिवार अरू भैया
खड़े सब देखते रहेंगे, कूच होगा जभी दम का॥8॥मुसाफिर...

बड़ी अटवी यह जग रूपी, फसौ मत देख कर इसको
कहे चुन्नी समझ यह दिल में, सितारा ज्ञान का चमका॥9॥मुसाफिर...

सत्य की परछाइयाँ

मुक्तक

उड़े ऊँचा कोई कितना कि अम्बर हो नहीं सकता
बड़े आकार कतरा भी समंदर हो नहीं सकता
जहाँ को जीतकर के तुम सिकंदर बन तो जाओगे
यू हीं दुनियाँ में हर कोई दिगम्बर हो नहीं सकता॥1॥

हजारों हैं फफोले दिल, जलन का दर्द है छाया,
किसी को क्या कहा जाये, स्वयं देगी दगा काया॥
न कोई काम आयेगा, जिसे तुम मानते अपना।
खुशी के साथ सब होंगे, मुसीबत में अरे सपना॥2॥

सभी रिश्ते सभी नाते, मिलेंगे सिर्फ मतलब के
निगाहों पे न बह जाना, इरादे घोर हैं सबके
जमाना है बड़ा जालिम, पिता भी कर्ज लेता है,
किसी की जान जाती है, तो कोई मौज लेता है॥3॥

फकत कुछ स्वार्थ के पीछे तबाही है समाजों में
मरे इन्सान तो भूखा, फिरें कुत्ते जहाजों में
कहीं बच्चे तड़फते हैं कही रोती है अबलायें
करोड़ो नेत्र गीले है, चुनिन्दा लोग मुस्कायें॥4॥
पतन की आखिरी सीमा, दिखा दी आज मानव ने

पकाया माँस मानव का, कराके कत्ल दानव ने
स्वयं सन्तान को बेचा, बहू को भी जला डाला
न मर्यादा रही कोई, सुता को गर्भ में मारा॥5॥

किसी की बदनसीवी ही, किसी की खुश नसीवी है।
वरतना सावधानी तुम, उसी से जो करीबी है॥
किसी का मौन हो जाना, किसी का मन्द मुस्काना।
लिए है राज अपने में, कहीं इनमें न फँस जाना॥6॥

कभी पावन कहाते थे, किन्ही के बीच के नाते
न अब वो बात रह पायी, उन्हीं के नैन बतलाते
समर्पण प्रेम की दुनिया, पड़ी है आज जो ठण्डी
लिवासों को बदल करके, मिलेंगे आज पाखण्डी॥7॥

पड़ा है देखना हमको, न जिसकी कल्पना तुमको
बताना भी न मुमकिन है, हुये हैं जख्म जो हमको॥
धुला न दूध का कोई, विकारों का वसेरा है।
उजाले में शराफत है, अंधेरे में अंधेरा है॥8॥

समुन्दर दर्द का रोका, हमारे नैन पलकों को ने।
न हमदर्दी यहाँ कोई, दिखाया तीन लोको ने॥
बहाना न कभी आँसू, यहाँ लाखों सितम छाये।
कहीं रफ्तार में इनकी, न यह संसार बह जाये॥9॥

हमें अपने सगे भाई, मुसीबत में भुला जाते।
गुजर जाते यहाँ जो दिन, कभी फिर लौट ना पातें॥
जमाना आज पलटा है, पुरानी रह गयी यादें।
शिकायत क्या करेंगे, हम सुनेगा कौन फरियादें॥10॥

वफा भी जुर्म कहलाती, खता तो फिर खता ही हैं।
संभल कर हर कदम रखना, यहाँ सारे सिपाही हैं॥
बड़ा लम्बा सफर है ये, न घबराना कभी राही।
किसी का है न कोई, न मिलता एक हमराही॥11॥

पिता का लाडला आखिर, चिता को आग देता है।
हमारा भाग्य ही हमसे, हमारे दाम लेता है॥
करे जो सो भरे निश्चित, समय की चाल न्यारी है।
नचाता नाच दुनिया को, बने राजा भिखारी है॥12॥

कहीं रोना न पड़ जाये, उन्हें जो आज हैं लोभी।
करम ने है कहाँ छोड़ा, सिकन्दर से बली को भी॥
मिलन से ही जुदाई है, सभी ने चोट खाई है।
भरोसा आज किसका है, जगत भर में ठगाई है॥13॥

यहाँ हर स्वांस पर लगता, किराया वक्त का भारी
नशे में ही न कट जाये, कहीं यह जिन्दगी सारी
धरम के नाम पर धोखा, हजारों लोग खाते हैं
उन्हें ही चैन मिलता है, जो स्वयं को जान जाते हैं॥14॥

मेरे गुरुवर संत महान

मुक्तक

नदियों से किनारे छूट जाते हैं
आसमां से तारे टूट जाते हैं
अक्सर इस जिंदगी में ऐसा होता है
जिन्हें हम दिल से चाहते है,
वही हमसे रूठ जाते हैं।

तर्ज–रघुपति राघव राजा राम...

मेरे गुरुवर संत महान, निज पर का करते कल्याण–टेक
वसुनन्दी गुरुवर इनका नाम, चलते फिरते हैं सुख धाम।
जपते हैं जो इनका नाम, होता उनके मन का काम॥ मेरे...

ये भव दधि में है जलयान, इनके आश्रित हमरे प्राण
देते सबको जीवन दान, करें इन्हीं का सब ही ध्यान॥ मेरे...

बच्चे बूढ़े और जवान, चाहे मूरख या विद्वान
करते हैं जब गुरु का ध्यान, होता उनको निज का भान॥ मेरे...

क्रोध लोभ मद माया मान, इन सब का जड़ से कर हान
करते हैं निज आतम ध्यान, पाने को झट केवल ज्ञान॥ मेरे...

मिटते हैं सारे व्यवधान, देते हैं जब गुरु वरदान
हम सब भी करें प्रणाम, पाने को शिवपुर धाम

मेरे गुरुवर संत महान, जिन पर का करते कल्याण॥

हे गुरुवर तेरे चरणों में

मुक्तक

पानी गंदा है फिर भी पीते जा रहे हैं
धागा नहीं फिर भी सिलते जा रहे हैं
जरा आँख खोलकर देखो मेरे बन्धु
कुछ सार नहीं जीवन में फिर भी जीते जा रहे हैं।

भजन

हे गुरुवर तेरे चरणों में एक ज्ञान पिपासू आया हैं
सत् संयम भिक्षा पाने को वैराग्य की झोली लाया है॥ टेक
नहीं कष्टों से है भीति मुझे नहीं भोगों से रही प्रीति मुझे
बस केवल तुमसा बनने का, यह भाव हृदय में लाया है। हे गुरुवर...
चाहे ओले शोले क्यों न गिरें, चाहे पर्वत अंबर टूट पड़ें
नहीं चिंता मुझको इन सबकी, जब तुमको ही में पाया है। हे गुरुवर...
कई बार मुझे नर जन्म मिला पर नहीं मुझे सत ज्ञान मिला
अब मुझको मेरा भान हुआ, जब तुमको मेने ध्याया है। हे गुरुवर...
नर नारक पशु गति के सारे, दुखः भोग रहा हूँ लाचार
अब तुमसा मुनि बन शिव पाने, पर शरण तुम्हारी आया है।
हे गुरुवर तेरे चरणों में एक ज्ञान पिपासू आया हैं
सत् संयम भिक्षा पाने को, वैराग्य की झोली लाया है॥

मेरे रग-रग में है आज

मुक्तक

वक्त नूर को बेनूर कर देता है
छोटे से जख्म को नासूर कर देता है
कौन चाहता है अपनों से बिछड़ कर रहना
वक्त सबको मजबूर कर देता है॥

तर्ज–मेरे मन मन्दिर में आज

मेरे रग-रग में है आज, विराजे वसुनन्दी मुनिराज (टेक)
था चिंतित यह जग सारा, कोई न था तारण हारा
तीर्थंकर सा बन आज--विराजे वसुनन्दी मुनिराज मेरे...

जब गुरु ने संयम धारा, भागा अविरत का अंधियारा
करने जन-जन के हित काज, विराजे वसुनन्दी मुनिराज॥ मेरे...

थी चिंतित माँ जिनवाणी, लख भक्तों की मनमानी
बचाने माता जिन की लाज, विराजे वसुनन्दी मुनिराज॥ मेरे...

जो भी है गुरु को ध्याते, वे शाश्वत शिव सुख पाते
ये हैं मुनि गन के सरताज-विराजे वसुनन्दी मुनिराज॥ मेरे...

रत ज्ञान ध्यान में रहते, नहि मंत्र तंत्र ये करते
नमते हम सब भी आज, विराजे वसनुन्दी मुनिराज॥ मेरे...

मेरे रग-रग में है आज विराजे वसुनन्दी मुनिराज

वसुनन्दी गुरु का ध्यान करो

मुक्तक

बादल गरजा पर बरसात नहीं आई
दिल धड़का मगर आवाज नहीं आई
बिना हिचकी के गुजर गया आज का दिन
क्या इक पल के लिए हमारी याद नहीं आई

तर्ज–सिद्ध चक्र का पाठ करों दिन आठ...

वसुनन्दी गुरु का ध्यान करो तज मान अरे अभिमानी
फल पावोगे शिव रज धानी ।।टेक।।
गुरुवर ने निज को जान लिया, शिवपुर को जाना ठान लिया
सुनलो इनकी हित मित अमृत वाणी
फल पावोगे शिव रज धानी।।
जग में ये सच्चे साधू है, नहि करें मंत्र या जादू हैं
लेलो उनसे कुछ एक निशानी...
फल पावोगे शिव रज धानी।।
जो रोगी इनको छूते हैं वे रोग मुक्त हो जाते हैं
लेलो इनके चरण पखारे पानी
फल पावोगे शिव रज धानी।।
ये शाश्वत सुख के दानी हैं जन मन के अंतर यामी है
इन्हें देखकर हो जा आतम ज्ञानी
फल पावोगे शिव रज धानी।।
वसुनन्दी गुरु का ध्यान करों तज मान अरे अभिमानी

घड़ी से जो घड़ी निकली

मुक्तक

बात की बात में विश्वास बदल जाता है
रात ही रात में इतिहास बदल जाता है
तू आलोचकों से ना घबरा अरे इन्सान
धरा की क्या कहें आकाश भी बदल जाता है

भजन

घड़ी से जो घड़ी निकली, नहीं फिर लोट पाना है।
घड़ी तो हर घड़ी बदले, घड़ी का क्या ठिकाना है॥
घड़ी ना रंक को जाने, घड़ी ना राव को गिनती है।
घड़ी के सामने चलती, किसी की नहीं विनती है।

भले ही सूर्य शीश झुकालें, मगर ये झुक नहीं सकती
घड़ी की ये घड़ी कैसी, घड़ी हो रूक नहीं सकती
करोड़ों में नहीं चूके, घड़ी का यह निशाना है
घड़ी तो हर घड़ी बदले, घड़ी का क्या ठिकाना है

घड़ी जो हर घड़ी देखे, घड़ी न वह समझ पाये
जगत सब जान सकता है, घड़ी जानी नहीं जाये
किसी को यह लगी झूठी, हमारे सामने आये
यहाँ कोई घड़ी वाला, घड़ी को देख बतलाये

घड़ी है इस समय कैसी, घड़ी अब कैसी आनी है
घड़ी तो हर घड़ी बदले, घड़ी का क्या ठिकाना है

सभी बाजार में लेलो, लगाकर आप दौलत है
अगर दो प्राण न पाओ, घड़ी इतनी अमोलक है
घड़ी को जो समझ लेते, घड़ी पर वे सफल होते
घड़ी को जिसने खोया है, घड़ी को याद कर रोते
इसी से इस घड़ी हमको, घड़ी पर यह बताना है।
घड़ी तो हर घड़ी बदले, घड़ी का क्या ठिकाना है।

भटके हुये राही को

मुक्तक

वसुधा पर बसने वाले श्री वसुनन्दी मुनिराज हैं
वसु द्रव्य को लेकर आये, वसुनन्दी मुनिराज हैं
वसुन्धरा पर नाम आपका कई सदियों तक गूँजेगा
वसुनन्दी गुरुदेव को, चारो युग भी पूजेगा

तर्ज–मेरा गीत अमर करदे

भटके हुये राही को प्रभु राह बता देना
इस डग मग नैया की प्रभु लाज बचा लेना॥टेक
जग की माया ने मुझे, पथ से भटकाया है
भोगों की पिपासा ने भव वन में भ्रमाया है
करूणा सागर भगवन, सत पथ दिखला देना॥भटके...

बाहर के वैभव में, मैं खुद को भूल गया
ममता और माया के, झूले में झूल गया
अब शरण तेरी आया, गफलत से बचा देना॥भटके...

दुखः का दावानल है, चहुँ ओर अँधेरा है
बोझल इस जीवन में, चौरासी का फेरा है
बुझते हुये दीपक की, प्रभु ज्योति जगा देना॥भटके...

वो पुण्य कहाँ से लाऊँ

मुक्तक

गुरु मन को मंदिर बना देते हैं
गुरु सजा को भी मजा बना देते हैं
उनकी कृपा का कोई छोर नहीं
गुरु तो भक्त को भगवान बना देत हैं।

भजन

वो पुण्य कहाँ से लाऊँ, जो पाप को मिटा दे।

ओ मुक्ति जाने वाले कोई रास्ता बता दे॥टेक॥
मैंने मोह राग करके, तन को सदा सजाया।
फिर देखो इसने मुझको, कितना सदा रुलाया
माना खता है मेरी, ऐसी तो ना सजा दे।
ओ मुक्ति जाने वाले...
रहने दो मुझको अपने, चरणों की धूल बनकर
आयेगा वक्त वो भी, महकूंगा फूल बनकर
जो नहीं तुझे गंवारा, तो द्वार से हटा दे
ओ मुक्ति जाने वाले...
मैंने मन से तुझ को पूजा, दिल में सदा बसाया।
सपना समझ के तुझको, दिल से सदा लगाया
माना की पापी मैं हूँ, ऐसी तो न सजा दे।
ओ मुक्ति जाने वाले...

आके चरणों में कुछ

मुक्तक

जो जीते जी दुनिया में मर नहीं पाते
वो जीकर भी दुनिया से तर नहीं पाते
कफन कितने भी पहनो, चोले कई बदलो पर
वे लोग कभी अपना घर नहीं पाते

भजन

आके चरणों में कुछ याद रहता नहीं
नाम तेरा गुरु याद आने के बाद॥टेक॥
याद आने से पहले चला जाऊँ मैं
और फिर जाऊँ मैं जान जाने के बाद।
आके...

आपका नाम दिल से निकलता नहीं
मोह माया से दिल ये बहलता नहीं
अब जरूरत नहीं झूठे संसार की
बस शरण में गुरु जी आने के बाद
आके...

अब बताओ दिशा जाऊँ किस ओर मैं
नाव मझधार में जाऊ किस ओर मैं

तुम बताओ गुरु इस डगर का पता
जो खत्म हो तेरे जैसा बनने के बाद
आके...

जान जाये भले ये मंजूर हैं
लेकिन जाये तेरा दर्श पाने के बाद
आके...

मोहे चौरासी के चक्कर से

मुक्तक

जैन कोई जन्म से नहीं कर्म से होता हैं
ज्ञानी कोई पुण्य से नहीं मर्म से होता हैं
सुख हर आदमी चाहता है दिल से
सुखी कोई पाप से नहीं धर्म से होता हैं॥

भजन

मोहे चौरासी के चक्कर से बचाले महावीरा
बचाले महावीरा ओ बचाले महावीरा॥टेक

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार
मरना सबको एक दिन अपनी अपनी बार
मोहे चौरासी...

रहिमन धागा प्रेम का मत तोड़ो चटकाय
टूटे से फिर ना जुड़े जुड़े गांठ पड़ जाये
मोहे चौरासी...

दाम बिना निर्धन दुखीः तृष्णा वश धनवान
कहीं न सुख संसार में सब जग देख्यो छान
मोहे चौरासी...
रहिमन वे नर मर चुके, जो कुछ मांगन जायं

उनते पहले वे मरे जिन मुख निकसत नाय
मोहे चौरासी...

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप
जाके हिरदे साँच है, तोक हिरदे आप
मोहे चौरासी...

किया समर्पण तेरे दर पर

मुक्तक

कहीं पर ज्ञान जलता हैं कहीं अज्ञान छलता हैं
ये मानव के विचारों के पहलुओं की विकलता हैं
कहीं पाँवों तले गुल है कहीं काटों का है विस्तर
हमारे पाँव का काटा, सिर्फ हमसे निकलता हैं।

तर्ज–फूल तुम्हें

किया समर्पण तेरे दर पर, अपनाओं या दफनाओ
जीवन साथी नहीं दूसरा, मन मन्दिर में आ जाओ॥टेक॥

दर दर की ठोकर खाकर के, सगे स्वजन सब परख लिये
स्वार्थ पूर्ण नीति हैं जग की, मीतों ने भी दगा दिये॥
अन्तर मन से चरण शरणली, सम्यक् पाथ दिखा जाओ
किया समर्पण तेरे दर पर, अपनाओ या दफनाओ॥
जीवन...

तन का भी विश्वास नहीं है, पीड़ा से मन विलख रहा।
निश्छल सौम्य मूर्ति लख तेरी, आशा से अबलम्ब रहा।
किया समर्पण तेरे दर पर, अपनाओं या दफनाओं।
जीवन....
दीन दुखी मिथ्या मत भटके, जन को पाथ दिखाते हो।

शरण गहे जो योगत्रय से, ज्ञान नन्द चखाते हो॥
रूची प्रतीति अनुभूति में, मम गुण मुझे बतलाओ।
किया समर्पण तेरे दर पर, अपनाओ या दफनओ।
जीवन...

अवगुण तज निजभूल सुधारूँ, रत्नत्रय शिवपाथ गहूँ
साथी नहीं दूसरा माना, आकर साथ निभा जाओ
किया समर्पण तेरे दर पर, अपनाओ या दफनाओ।
जीवन...

जुदाई आपकी गुरुवर

मुक्तक

कंकर को मत मारो ठोकर, हो सकता वो शंकर हो।
मुनि का मत अपमान करो, हो सकता वो तीर्थंकर हो।
मुनि परम्परा के कारण ही, धर्म जैन यह जिन्दा है।
पाप नहीं हो सकता बढ़कर, करना मुनि की निन्दा है॥

भजन

जुदाई आपकी गुरुवर, नहीं पल भर सुहाती हैं।
छवि मन आपकी गुरुवर, नहीं अब और भाती है॥ टेक

अनादिकाल से हमने, नहीं निज धर्म पहचाना
कौन आया कहाँ से है, नहीं निज रूप को जाना
मानकर वस्तु पर अपनी, आत्म मन में लुभाती है
जुदाई आपकी गुरुवर, नहीं पल भर सुहाती है...

प्रभो हम भूल अपनो से, फसें हैं मोह के फन्दे
कषायों को सगा माना, बने मिथ्यात्व में अंधे
आप्त वाणी सुनी जबसे, परणती पर पे न जाती हैं
जुदाई आपकी गुरुवर, नहीं पलभर सुहाती है॥

नाथ दर्शन किये जबसे, रूचि निज ओर जागी है

प्रतीति आत्म अनुभूति, स्वभाविक प्रीति जागी है
विभो भव भोग पर चर्चा, हेय ही हेय भाती है
जुदाई आपकी गुरुवर, नहीं पल भर सुहाती है।

किया उपकार मम् गुरुवर, जरा सा और कर देना
भावना मुक्ति पाने की, मुझे मुनि दीक्षा भी देना
रहें नित लीन निज गुण में, यही मन में समाती हैं
जुदाई आपकी गुरुवर, नहीं पल भर सुहाती है॥

हे माटी के पुतले रोता है क्यों?

मुक्तक

गुरु की बात जमाने से निराली देखी
गुरु के आशीर्वाद से फलती डाली देखी
गुरु शैतान को इंसान बना देते हैं
गुरु पत्थर को भी भगवान बना देते हैं॥

तर्ज–तुम अगर साथ देने का...

हे माटी के पुतले तू रोता है क्यों,
यह नर तन तेरे साथ जाता नहीं॥ टेक
जिसे तू अपना कहाता पराये हैं,
इनसे क्षणभर भी नेह लगाना नहीं।
भाई बन्धु बहन साथी मतलब के हैं,
मृत्यु के बाद पास आते नहीं।
हे माटी...

झूठे आँसू बहाकर बुलाते हैं तुझे,
पर तेरे साथ कोई भी साथ जाता नहीं
सब भुलाकर चिता पर जलाते तुझे,
कोई तुझको चिता से बचाता नहीं।
हे माटी...
फूल खिलता हुआ माली हँसता तो है,

फूल गिरता हुआ देखकर कोई रोता नहीं।
सुख में साथी तेरे मिलके हँसते तो हैं,
तेरे दुःख में कोई आंसू बहाता नहीं।
हे माटी...

न सुख हो तो हँस न दुःख हो तो रो,
क्योंकि इस जिन्दगी का कोई ठिकाना नहीं
नर तन पाया है तूने प्रभू गुण गा,
तेरे दुःख की घड़ी भी निकल जायेगी
हे माटी...

उसकी महिमा का गुणगान करले अगर,
मौत भी आ गई तो टल जायेगी
तू समझ ले रे मन और सुमर ले प्रभु,
इस चमड़े की जिह्वा का भरोसा नहीं
हे माटी के पुतले तू रोता है क्यों
यह नर तन मेरे साथ जाता नहीं।

गुरु वरदान पाने को

मुक्तक

कोई है जो दुआ करता हैं।
अपने में हमें भी गिना करता है।
बहुत खुश नसीब समझते हैं खुद को हम
दूर रहकर भी हमें याद किया करता है॥

भजन

गुरु वरदान पाने को, आपकी शरण आये हैं।
सुमन श्रद्धा संजोकर ये, चरण अर्चा रचाये हैं॥ टेक

जगत में बेसहारे हैं, ठोकरें खा रहे सबकी।
दिखे कोई नहीं अपना, दवाई दो प्रभो गम की,
आप गुरु दीन बन्धु हो, अर्ज लेकर के आये हैं।
गुरु वरदान पाने को, आपकी शरण आये हैं॥...

जिसे माना सगा साथी, वही निकला महा घाती।
दर्द धोके व्यथित मन है, प्रीति पल पल नहीं भाती,
तुम्हें अपना समझकर के, दुखद क्रंदन सुनाये हैं,
गुरु वरदान पाने को, आपकी शरण आये हैं॥

साथ तन भी नहीं देगा, जवानी भी रवानी है।

आस जड़ धन नहीं जिनकी, सुखद अनुभूति पानी है,
गुरु! भावन बने पावन, यही उद्देश्य लाये हैं,
गुरु वरदान पाने को, आपकी शरण आये हैं॥...

मिले मेरा मुझे वैभव, यही आशीष दे दीजे।
भँवर भव बीच नैया है, गुरु चाहो तिरा दीजे,
बने वसुनन्दि गुरुवर तुम, गुरु दरबार आये हैं
गुरु वरदान पाने को, आपकी शरण आये हैं॥...

अब तो दया करो जिनवर जी

मुक्तक

वही जिन्दा है जिसकी आस जिन्दा है
वही जिन्दा है जिसकी प्यास जिन्दा है
श्वास लेने का नाम जिन्दगी नहीं है
जिन्दा वह है जिसका विश्वास जिन्दा है।

भजन

अबतो दया करो जिनवर जी–दुखिया आया तुम्हारे द्वार।
दुखिया आया तुम्हारे द्वार॥टेक॥
विश्व पूज्य पावन तुम तारक महिमा तेरी अपार।
छत्र, चंवर भामण्डल सोहे, कलशा ढुरें हजार॥
अब तो...

सागर से श्रीपाल को तुमने, प्रभु जी किया था पार।
सोमासती जब ध्यान लगाया, किया सर्प से हार
अब तो....

क्रोध मान और पापी कर्म ने, घेरा लिया है डार।
तुम बिन जग में कोई न मेरा, अब तो जरा निहार॥
अब तो...

जग के भँवर में मेरी नैया प्रभू जी, आन फसी मझधार
खेवटिया बन करो दास की नैया भव से पार॥
अब तो...

सम्यक श्रद्धा से भक्ति करो

मुक्तक

जो सफर की शुरुआत करते हैं
वो मंजिल को पार करते हैं
बस एक बार चलने का होसला रखिये
आप जैसे राहगीरों का रास्ता भी इन्तजार करते हैं॥

तर्ज–बाबुल की

सम्यक श्रद्धा से भक्ति करो, निज शाश्वत सुख को पाओगे।
मन बाँछित फल अनुभूति मिले, सम्यक जब ध्यान लगाओगे।टेक

मुनि मानतुंग कारागृह में, वर भक्ति करी अन्तरयामी।
वह मुक्त हुये बेड़ी टूटी, तब जैन धर्म हो जग नामी
भक्तामर का नित पाठ करो, निजशक्ति सखे जगाओगे,
सम्यक श्रद्धा से भक्ति करो, निज शाश्वत सुख को पाओगे।

थे सेठ सुदर्शन श्रावक वर, रानी उन पर आसक्त हुई
नहि डिगे शील व्रत से किंचित, असि भी फूलों की माल हुई।
औ जैन धर्म की विजय हुई, गुण चिन्तन गुणी कहाओगे
सम्यक् श्रद्धा से भक्ति करो, निज शाश्वत सुख को पाओगे

सीता सति अग्निपरीक्षा दी, अग्नी से निकली जल धारा।

द्रोपति दूशासन चीर हरा, भक्ति से बढा वस्त्र सारा
जो मनोवती अंजन चन्दन, सोमासी भक्ति जगाओगी
सम्यक् श्रद्धा से भक्ति करो, निज शाश्वत सुख को पाओगे।

लखि कवि धनंजय की श्रद्धा, विषधर का जहर उतार दिया
जिन-जिन ने णमोकार सुमिरा, उन उभय लोक सुख धाम लिया
गुरु की भक्ति अनुभूति करो, निज के गुण सहज जगाओगे
सम्यक् श्रद्धा से भक्ति करो, निज शाश्वत सुख को पाओगे॥

मेरी आरजू तो भगवन

मुक्तक

जिन्दगी भर हुई गुफ्तगू गेरों से मगर
आज तक हमसे हमारी मुलाकात न हुई
दूसरों से बहुत आसान है मिलना साकी
अपनी हस्ती से मुलाकात बड़ी मुश्किल हैं

भजन

मेरी आरजू तो भगवन सुनिये, तीनो लोकों के तुम सरताज हो।
तुम्हें दुनियां कहे परमात्मा मुझ दुखिया की ये फरियाद है।। टेक

जग के भंवर में जीवन नैया—प्रभु जी डगमग डोल रही।
कोई नहीं प्रभु खेवटिया अब—तुम बिन नैया अटक रही।
नैया आके फसी मझधार है—अब हाथ में तिहारे मेरी लाज है
तुम्हें दुनिया कहे परमात्मा।।
अंजन चोर को तार के स्वामी—जामन मरण छुड़ा दिया
श्रीपाल का कुष्ठ मिटाके, मैना के दुखः को दूर किया
सती चन्दना का किया उद्धार है—द्रोपति की बचाई तूने लाज है
तुम्हें दुनिया कहे परमात्मा।।
दर पर आकर भगवन तेरे—खाली कोई ना जा सकता
मन वांछित फल मिले न उसको, ऐसा कभी न हो सकता
प्रभु दास की तो ये फरियाद है—छूटे आवागमन तेरे हाथ हैं
तुम्हें दुनियाँ कहे परमात्मा।।

पारस पदमा और महावीरा

मुक्तक

तर्ज–नगरी नगरी

हर आँख यहाँ यूँ बहुत रोती है
हर बूँद मगर अश्क नहीं होती
पर देखके रोदे जो जमाने का गम
उस आँख से आँसू गिरे वो मोती है।

भजन

पारस पदमा और महावीरा–भजले रे तू बावरिया
न जाने कब सांस का पंछी-छोड़ जाये नगरिया॥ टेक

काम क्रोध माया ममता में भूला प्रभु के द्वार को-2
जनम समय की याद विसारी भटक रहा धन धाम को-2
कर-कर अत्याचार अनेकों बांधी पाप गठरिया
पारस पदमा...

हीरा सा तन पाकर खोया बालापन हस खेल में-2
युवा भयो बहु कुटुम्ब ने घेरो या दुनियाँ की रेल में-2
बृद्ध भयो तब पिंजरा खाली–लुट गयो बीच बजरिया
पारस पदमा...

दो दिन के महमान यहाँ के–आखिर सबको जाना है-2

भोग मोह को तज दे प्राणी–जो प्रभु के गुण गाना हैं-2
इसी जाल में फंसा रहा तो बीतेगी उमरिया
पारस पदमा...

मात पिता सुत नारी न कोई–तेरे संग न जायेगा-2
जैसी करनी वैसी भरनी–जो बोया सो पायेगा-2
दास पद्म प्रभु के चरणों में–बीतेगी उमरिया
पारस-पदमा...

मुक्तक

तर्ज–कसमें वादे प्यार

दोष लकीरों को मत दे, गर कड़वे है अक्षर
जो लिखा वैसे ही तो पढना पड़ता है
छोटी-छोटी बातों में क्या रक्खा है पगले
यह जीवन है, समझौता भी करना पड़ता है...

भजन

मोर पंख से बनी ये पिच्छी–कितनी सुन्दर लगती है
क्यों रखते हैं मुनिवर इसको–कौन सी शिक्षा मिलती है।।टेक

मोर ही ऐसा पंछी होता–नहीं परिग्रह रखता है
स्वयं ही छोड़े अपने पंख को–नहीं भार को सहता है
छोड़ो परिग्रह सारा तुम भी–ये भी शिक्षा मिलती है
मोर पंख...

बहुत मुलायम होती है यह–जीव नहीं मर सकता है
मिट्टी धूलि ग्रहण न करती–भारी पन नहीं रहता है
स्वयं पंख का करे त्याग वह–त्याग की शिक्षा मिलती
मोर पंख...

पहला गुण होती मुलायम है–दूसरा जीव नहीं मरते

तीजा गुण है पानी पसीना—चौथा धूल नहीं गहते
पर वस्तु को ग्रहण न करना—यह भी शिक्षा मिलती हैं
मोर पंख...

पांचवा गुण हल्कापन इसमें—भारीपन का काम नहीं
फिर परिवर्तन क्यों करते हैं—इसका कुछ भी नाम नहीं
कह-संकल्प करो परिवर्तन, ए भी शिक्षा मिलती।
मोर पंख...

मुक्तक

मंजिल को पाने के लिए कांटों से गुजरना सीखो
मांटी को हँसाने के लिए निर्झर बन झरना सीखो।
सच्चाई पाने के लिए न जरूरत भारी शास्त्रों की,
तुम साधू बन समाधिमरण करना सीखो।

तर्ज–कस्मे वादे

केश लुंच का पहला पेपर–जो भी इसमें पास हुआ
वही करेगा केश का लुंचन–जिसके मन वैराग हुआ।
केश लुंच...
तन से ज्यादा रहता राग है–और अधिक फिर बालों से
देखो कैसे करे ये लुंचन–तन से राग हटाने को
अपने हाथ से खुद ही लुंचे–तब जानो वैराग्य हुआ
केश लुंच...
फिर आगे की करें कामना–मूलगुण अट्ठाइस की
कपड़े उतारे हुआ दिगम्बर–महाव्रतों की दुहाई की
मुनि मुद्रा को धारण करके–निज आतम में वास हुआ
केश लुंच...
जन्मे नंगा मरते नंगा–बीच में कपड़ा आया क्यों
तप करने को मिला है जीवन फिर तू पाप कमाये क्यों
राग द्वेष की इस कीचड़ में फिर क्यों तूने वास किया
केश लुंच...
रत्नत्रय को धारण करले–यही मर्ज बतलाया है

जिसने इसको धारण कीना—वही मोक्ष पद पाता है
जिसने निज आतम को जाना—वही मोक्ष में वास किया
केश लुंच...

चाँदी और सोने में उलझा

मुक्तक

अमेरिका चाहे कितना ही सोने चांदी से मढ़ जाये
या रूस, चीन, जापान सरस, कोई भी आगे बढ़ जाये
जब तक चरित्र नहीं होगा, सब फीके पड़ते जायेंगे
ये भौतिक सुख के साधन तो नरकों को गढ़ते जायेंगे

तर्ज–चांदी की दीवार

चांदी और सोने में उलझा–प्रभु का रास्ता छूट गया
माया के मृग जाल में फंसकर–प्रभु से रिस्ता टूट गया...टेक

चंद रुपये मौज शौक में, तू जीवन सुख ढूंढ रहा
स्वजन कुटुम्ब परिवार पति-पत्नी में तू बन मूढ रहा
काम कामना माया तृष्णा–वैतरणी में डूब रहा
पूर्व पुण्य खजाना तेरा–देख अरे नर लुट रहा
माया के मृग...

दया गरीबों पर ना आयी–न भाई पर प्रीत धरी
नही सुनी तूने दुर्बल की–करुण कहानी पीर भरी
दान दिया न खुले हाथों–न भूखों की पीर हरी
अब पछताना मरण खाट पर–जब तेरा सब लुट गया
माया के मृग...
राह में राही तेरी मिल्कत–मिल अपने सब लूट रहे

मन की मन में रह गई पगले–अब क्यूं माथा कूट रहे
यह स्वासों के दुर्बल धागे–अब टूटे तब टूट रहे
घड़ा पाप का भरा जीवन भर–आज अन्त में फूट गया
माया के मृग...

तेरी करनी देखके तेरा–मालिक तुझ से रूठ गया
हाथ बांध कर आया था–पर अब खाली कर मूठ गया
हाय हाय करना जीवन बगिया का माली उठ गया
मरण खाट पर खडे सनेही–मूल कजेजा चूट गया
माया...

नादानी मत करे-रे मूरख, धन वैभव नहीं तेरा है
चार दिनों की चका चोंध–आखिर जंगल में डेरा है
दान शियल तप भाव भावना–स्वर्णिम ज्ञान उजेरा है
वही विलक्षण जो जीवन में पी अमृत की घूंट गया
माया...

मुक्तक

सत्य मांगने से नहीं साधना से मिलता है
ज्ञान का दीपक पर से नहीं स्वयं से जलता है
जिस आनन्द को खोजते हो दूसरों के पास
भीतर झाकों उसका द्वार, अपने आप में खुलता है।

भजन

हे आदिश्वर भव दुःख हरता–तेरे ही गुण गावे रे
जन्म जरा मिट जाय प्रभू जी–यही भावना भावे रे–टेर

आतम के अनुपम स्वरूप को–अब तक न पहचान सका।
विषय जाल के अंधकार को–अब तक न मैं काट सका,
इस दुनियाँ का ये दुख स्वामी–हमसे सहा न जावे रे॥–2
हे आदिश्वर...

मैना सुन्दरि तिलका को भी–तूने भव से पार किया।
अंजन चोर से अधमी का भी–तूने है उद्धार किया॥
तारे ऐसे भक्त अनेकों–तुम पद शीश नबावें रे॥–2
हे आदिश्वर...

अंतरंग मम ज्ञान चेतना दिव्य ध्वनि से भर देना
मोह तिमिर और राग द्वेष का–हे प्रभु जी क्षय कर देना
दास करे कर जोड अर्ज ये–भव बन्धन कट जावें रे॥–2
हे आदिश्वर...

हे माटी पुतले

मुक्तक

जब फूल ही धोखा देते हैं, कांटो का भरोसा कौन करे।
रक्षक भी भक्षक होते हैं, चोरों का भरोसा कौन करे॥

भजन

हे माटी के पुतले तू रोता है क्यों
यह नर तन तेरे साथ जाता नहीं
जिसे तू अपना कहता पराये हैं सब
इनसे क्षण भर नेह लगाता नहीं॥हे माटी...

भाई बन्धु बहन साथी मतलब के हैं
मृत्यु के बाद कोई पास आता नहीं
झूठे आँसू बहाकर बुलाते हैं तुझे
पर तेरे साथ कोई भी, साथ जाता नहीं॥हे माटी...

सब भुलाकर चिता पर जलाते तुझे
कोई तुझ को चिता से बचाता नहीं
फूल खिलता हुआ माली हंसता तो है
फूल गिरता हुआ देख कोई रोता नहीं॥हे माटी...

सुख के साथी तेरे मिलके हँसते तो है
तेरे दुःख में कोई आंसू बहाता नहीं

न सुख हो तो हंस न दुख हो तो रो
क्योंकि इस जिन्दगी का ठिकाना नहीं॥हे माटी...

नर तन पाया है तूने प्रभू गुण गा
तेरे दुख की घड़ी भी निकल जायेगी
उसकी महिमा का गुण गान करले अगर
मौत भी आ गई तो टल जाएगी॥हे माटी...

तु समझ ले रे मन और सुमर ले प्रभु
इस चमड़े की जिह्वा का भरोसा नहीं॥हे माटी...

भूल गये हम पिछली

मुक्तक

मोक्ष की राह से हट गये हम लोग
इतने भटके कि अन्धेरों से घिर गये हम लोग
लोगों को तो अन्धेरों ने भटकाया है
मगर प्रकाश में आकर भटक गये हम लोग

भजन

भूल गये हम पिछली बतियां, क्या क्या कष्ट उठाये हैं-2
सत् गुरु हमको राह बतायें फिर भी समझ न पाये हैं॥ टेक

सांचे देव मिली जिनवाणी, सत् गुरु आशीष पाया है
मोह की नींद न टूटी अब तक, अपना होश गंवाया है
जब तक खुद को जान न पाये, तब तक ही भरमाये हैं
भूल गये हम पिछली
सागर में गिर जाये रत्न तो, फिर से पाना मुश्किल है
ऐसे ही नर जन्म गया तो, फिर मिल पाना मुश्किल है
अवसर पाया व्यर्थ न खोना, सत् गुरु वचन सुनाये है
भूल गये हम पिछली
सप्त व्यसन और चार कषायें, ये ही दुखः का कारण है
जिसने इनसे नाता तोड़ा, उसने पाया शिव धन है
मुक्ति रमा के बने पुजारी, कर्म बन्ध छुड़ाये है
भूल गये हम पिछली

गुरुदेव तुमको

मुक्तक

मुनिराज के चरणों में धर्म का सार मिलता है।
मुनिराज के चरणों में जीवन का आधार मिलता है॥
मुनिराज के चरण ही मोक्ष के मूल हैं मीत।
मुनिराज के चरणों में ही मोक्ष का उपहार मिलता है॥

अखण्ड आत्म नायक, अखण्ड मुक्ति दायक
गुरूदेव तुमको 'नमस्ते नमस्ते'
तुम्हारे चरण में जो लग जाय रहने
वो पा जाये मुक्ति फिर हँसते-हँसते-2

गुरुदेव तुमको नमस्ते ......

तुम्हारे चरण के परस में जो आये
वो मिथ्या को तज के सम्यक को पाये
तुम्ही ने तो खोले हैं "आगम के रस्ते-2"

गुरुदेव तुमको नमस्ते...

तुम्हारे चरण से मिले ज्ञान पानी
तुम्हारे चरण में कटे जिंदगानी
कई जन्म से खोती आई हैं सुधियाँ
भोगों के पथ पर 'तरसते तरसते-2'

गुरुदेव तुमको नमस्ते...

चिदानंद तुम हो दयानंद तुम हो
हमारे लिये तो श्री कुन्द तुम हो
उपदेश देकर निकाला है हमको
मोह कीच माया में यूँ 'फँसते-फँसते'-2

गुरुदेव तुमको नमस्ते...

नहीं पार पाया किसी ने तुम्हारा
जो आया शरण में वो पाये सहारा
विमल सिन्धु गहरा हूँ छोटी नदी सा
मिला लो स्वयं में 'आहिस्ते-आहिस्ते'-2

गुरुदेव तुमको नमस्ते...

लहराता उपवन हो विद्या धनी का
इठलाता यौवन है नन्हीं कली का
करता हूँ विनती है विमल सिन्धु गुरुवर
खिला लो कली को 'महकते-महकते'-2

गुरुदेव तुमको नमस्ते...।

इतनी शक्ति हमें देना गुरुवर

मुक्तक

मेरे गुरुदेव वे हैं जो मोहांतक से निर्द्वन्द है।
मेरे गुरुदेव वे हैं जा समाज की रूढ़ियों से निर्वध हैं॥
आत्म कल्याण व विश्व कल्याण के मार्ग में रत हैं जो।
वात्सल्य रत्नाकर परम पूज्य गुरुदेव वे एलाचार्य वसुनन्दी हैं॥

भजन

इतनी शक्ति हमें देना गुरुवर
मन का विश्वास कमजोर हो न
हम चले नेक रस्ते पर हमसे
भूलकर भी कोई भूल हो ना
इतनी शक्ति....

दूर अज्ञान के हो अंधेरे
तू हमें ज्ञान की रोशनी दे

हर बुराई से बचकर रहें हम
जितनी भी दे भली जिंदगी दे
बैर हो ना किसी का किसी से
भावना मन से बदले की हो न
इतनी शक्ति....

हर तरफ जुल्म है, बेबसी है
सहमा सहमा सा हर आदमी है

पाप का बोझ बढ़ता ही जाये
जाने कैसे ये धरती थमी है

बोझ ममता का तू ये उठा ले
तेरी रचना का ही अंत हो न
इतनी शक्ति......

हम ये न सोचें हमें क्या मिला है
हम ये सोचें किया क्या है अर्पण

फूल खुशियों के बाँटें सभी को
सबका जीवन ही बन जाये मधुवन

अपनी करुणा का जल तू बहाकर
कर दे पावन हर एक मन का कोना
इतनी शक्ति......

कभी तो ये गुरुवर

मुक्तक

संयमी के सिर पर धर्म का ताज लगा होता है।
संयमी के हृदय में मानवता का राज छुपा होता है।।
संयमी ही स्व के सच्चे हितैषी हैं मेरे मीत।
उनके नाम के साथ भी देखो महाराज लगा होता है॥

भजन

कभी तो ये गुरुवर, माँझी बन जाते हैं-2
कभी तो ये गुरुवर, साथी बन जाते हैं-2
ऊँगली पकड़ मेरी 'रास्ता दिखाते हैं-3 तो बोलो ना
कभी तो ये गुरुवर माँझी....

जो ठुकरा दिया तुमने, हम किससे बोलेंगे-2
दर तेरे खड़े होकर छुप-छुप के रोलेंगे...SSS तो बोलो ना
कभी तो ये गुरुवर माँझी....

मेरे इस जीवन की बस एक तमन्ना है-2
तुम सामने हो मेरे और प्राण निकल जायें....SSS
कभी तो ये गुरुवर माँझी.....,

गुरूदेव की महिमा को हम मिलके गायेंगे-2
इस चतुर्मास को हम सफल बनायेगे....SSS
कभी तो ये गुरुवर माँझी.....

सुनते हैं तेरी रहमत दिन-रात बरसती है-2
एक बूँद जो मिल जाये किस्मत ही बदल जाए...ऽऽऽ
कभी तो ये गुरूवदर माँझी.....

आँखों में बसाया है तुझे दिल से गाया है
मेरी हर धड़कन मे बस तू ही समाया है....ऽऽऽ
कभी तो ये गुरुवर माँझी.....

ठोकर लगी मुझको, पत्थर नुकीला था-2
पर चोट ना आयी, गुरुवर ने सम्हाला था...ऽऽऽ
कभी तो ये गुरुवर माँझी.....

मैली चादर ओढ़ के

मुक्तक

चित्त की कलुषिता को साफ कर लो।
दूसरों के गुनाह भी तुम माफ कर दो॥
दूसरों के नहीं खुद के ही दोष देखिये।
आत्मा की अदालत में अपना इंसाफ कर लो॥

तर्ज–मैली चादर ओढ़ के कैसे

मैली चादर ओढ़ के कैसे, द्वार तुम्हारे आऊँ
हे पावन परमेश्वर मेरे, मन ही मन शरमाऊँ
मैली चादर ओढ़.......

निर्मल वाणी पाकर तुझसे, नाम न तेरा गाया।
नैन मूंदकर हे परमेश्वर, कभी न तुझको ध्याया
मन वाणी की तारें टूटीं, अब क्या गीत सुनाउँ
मैली चादर ओढ़.....

इन पैरों से चलकर तेरे, मन्दिर कभी न आया
जहाँ-जहाँ हो पूजा तेरी, कभी न शीश झुकाया
हे जिनेश्वर मैं हार के आया, अब क्या हार चढ़ाऊँ
मैली चादर ओढ़.....

मुझे ऐसा वर दे

मुक्तक

फूल से फूल व खार से खार मिलता है॥
घृणा से घृणा और नमस्कार से नमस्कार मिलता है॥
नीम की निबोली कभी दाख नहीं बनती मेरे मीत।
इज्जत से इज्जत और प्यार से प्यार मिलता है॥

तर्ज–संसार है एक नदिया

मुझे ऐसा वर दे दे, गुणगान करूँ तेरा।
इस बालक के सिर पर, गुरु हाथ रहे तेरा॥टेक॥

सेवा नित तेरी करूँ, तेरे द्वार पे आऊँ मैं-2
चरणों की धूलि को, निज शीश लगाऊँ मैं-2
चरणामृत पाकर के हित कर्म करो मेरा-2
इस बालक के सिर...

भक्ति और शक्ति दो, अज्ञान को दूर करो-2
अरदास करूँ, गुरूवर, अभिमान को दूर करो
नहीं द्वेष रहे मन से, रहे वास गुरू तेरा-2
इस बालक के सिर...

विश्वास हो ये मन में, तुम साथ ही हो मेरे-2
तेरे ध्यान में सोऊँ मैं, सपनों में रहो मेरे-2

चरणों से लिपट जाऊँ, तुम ख्याल रखो मेरा-2
इस बालक के सिरा...

मेरी यशकीर्ति को, गुरू मुझसे दूर करो-2
इस मन मंदिर में, तुम भक्ति भरपूर भरो
तेरी ज्योति जगे मन में, नित ध्यान धरूँ तेरा-2
इस बालक के सिर....

थोड़ा ध्यान लगा

मुक्तक

'लाइट के आते ही बल्ब जल जाते हैं।
सूर्योदय के होते ही कमल खिल जाते हैं॥
चन्द्रोदय से कुमुदनी भले ही खिल जाये।
भक्त के हृदय तभी खिलते हैं, जब गूरु मिल जाते हैं॥

भजन

थोड़ा ध्यान लगा-2 गुरुवर गुरुवर दौड़े-दौड़े आयेंगे-2
भक्ति में रंग जा, तेरे पाप वो जलायेंगे॥
तुझे गले से लगायेंगे
थोड़ा ध्यान लगा...

हे राम रमैया तू, हे कृष्ण कन्हैया तू, तू ही, मेरा ईश है
सत्कर्म राहों पर, चलना सिखा दे वो, वही जगदीश्वर है
हो ऽऽ प्रेम से पुकार कर तेरे पाप वो जलायेंगे,
तुझे गले से लगायेंगे।
थोड़ा ध्यान लगा...

कृपा की छाया में, बैठायेंगे तुझको, कहाँ तुम जाओगे
उनकी दया दृष्टि जन-जन में पड़ेगी तो, ये भवतर जायेंगे
हो ऽऽ ऐसा है विश्वास-2 मन में ज्योति वो जलायेंगे

तुझे गले लगायेंगे,
थोड़ा ध्यान लगा.....
मुनियों ने ऋषियों ने गुरु शिष्य महिमा का, किया गुणगान है
गुरूवर के चरणों में सकल दृष्टि, झुके भगवान हैं
हो ऽऽ महिमा है अपार-2 सबको राह वो दिखायेंगे।
तुझे गले से लगायेंगे,
थोड़ा ध्यान लगा....

मेरे सर पर रख दो

मुक्तक

यह हमारी छोटी सी जैन समाज है।
कर्तव्यनिष्ठ होने से हमें इस पर नाज है॥
अहिंसा से ही प्रतिष्ठा बढ़ी है इसकी,
गुरुओं का आशीष ही इनकी समृद्धि का राज है॥

भजन

मेरे सर पर रख दो गुरुवर, अपने ये दोनों हाथ।
देना है तो दीजिये जन्म-जन्म का साथ॥

सुना है अपने शरणागत को अपने गले लगाते हो
ऐसा मैने क्या माँगा, जो देने से घबराते हो।
चाहे कुछ भी करो, हे गुरुवर-2 बस थामे रहना हाथ
देना है तो दीजिये....
गम की धूप से झुलस रहे हैं, प्यार की छाया कर दे तू
बिन माँझी के नाव चले न, अब पतवार पकड़ ले तू
मेरा रास्ता रोशन कर दो, छाई अँधियारी रात
देना है तो दीजिये....
भव भव में हम भटक रहे हैं, अपने गले लगाले तू
जीना था बेकार हमारा, अपनी शरण बुलाले तू
मेरा जीवन सरल बना दो, अब करना न इन्कार
देना है तो दीजिये....

मेरे सर पर रख दो

मुक्तक

इसमें तो छिलके मिलेंगे क्योंकि ये प्याज है।
जितनी खुजाओगे उतनी ही पीड़ा मिलेगी क्योंकि ये खाज है॥
धर्म का काम मात्र कहने सुनने से नहीं चलेगा,
जैसा करोगे वैसा मिलेगा, यही धर्म का राज है॥

भजन

मेरे सर पर रख दो गुरुवर अपने ये दोनों हाथ
देना है तो दीजिये, जन्म-जन्म का साथ-2

इस जन्म से सेवा देकर, बहुत बड़ा उपकार किया-2
देव दयालू तुम हो गुरुवर, मैंने तुम्हें पहचान लिया-2
हम साथ रहे जन्मों तक-2, बस रख लो अपनी बात
देना है तो.....

बड़े ही निर्मल हाथ हैं तेरे, चारों ओर अँधेरा है-2
थामें रहना हाथ गुरुवर, एक सहारा तेरा है-2
बस इतना करना गुरुवर-2, जाये न मेरी लाज
देना है तो....

मेरे जैसे दीन हीन का, कोई नहीं है रखवाला-2
झूठी तसल्ली भी गूरुवर, कोई नहीं देने वाला
मुझे कुछ न सूझे गुरुवर-2, छायी है गम की रात
देना है तो....

जब कोई नहीं आता

मुक्तक

आत्मोत्थान हेतु संयमी से नाता जोड़िये।
मिथ्यात्व, असंयम व अज्ञान के अंधेरों को छोड़िये॥
रत्नत्रय के आलोक में बढ़ाइये कदम।
इससे भी पहले आप अपने अहंकार को तोड़िये॥

भजन

जब कोई नहीं आता, मेरे गुरुवर आते हैं।
मेरे दुख के दिनों में वो, बड़े काम आते हैं॥
वो इतने बड़े होकर, दीनों से प्यार करें-2
अपने भक्तों को ये, पल में स्वीकार करें
ये बिन बोले सबको, पहचान लेते हैं
मेरे दुख के दिनों में.....
मेरी नैया चलती है, पतवार नहीं होती-2
किसी ओर की अब तो, दरकार नहीं होती
वे डरते नहीं रास्ते सुनसान आते हैं
मेरे दुख के दिनों में .....
कोई याद करे उनको, दुख हल्का हो जाये-2
कोई भक्ति करे उनकी उन जैसा बन जाये
वे भक्तों का कहना-2 झट मान जाते हैं
मेरे दुख के दिनों में.....

झूठी दुनिया से मन को हटा ले

मुक्तक

कुछ लोग कहते हैं कि वह दुष्ट है, नीच है, खराब है।
कुछ ऐसा भी कहते हैं, वह धर्मी है, शाही है, नबाव है॥
वह कैसा है, कैसा नहीं, मैं इसमें नहीं जाता।
दुसरों की निन्दा करने वाले के दिल में ही दुराव है॥

भजन

झुठी दुनिया से मन को हटा ले
ध्यान गुरु के चरणों में लगा ले
नसीबा तेरा जाग जायेगा
झूठी दुनियाँ....

झूठे संसार का चलन ये अनोखा है
पग-पग मिले यहाँ धोखा ही धोखा है
मान जाये तू इनको मना ले
नसीबा तेरा जाग जायेगा-2
झूठी दुनियाँ...

माल तेरे पास है तो माल तेरा खायेंगे
हुआ खत्म तो नजर नहीं आयेंगे
मुनिराज को तू अपना बना
प्यार सच्चा तू इनका पा ले

नसीबा तेरा जाग जायेगा-2
झूठी दुनियाँ....

सारा ये जहाँ तेरे चरणों का दीवाना है
सारा जग झूठा सच्चा तेरा ही ठिकाना है।
हाथ इनका तू सिर पे धरा ले
काम फिर चाहे जितने करा ले
नसीबा तेरा जाग जायेगा-2
झूठी दुनिया.....

कौन सुनेगा किसको सुनायें

मुक्तक

काव्य रचना के लिए अक्षर जोड़ना सीखो।
उत्तम भवन बनाने हेतु पत्थर जोड़ना सीखो॥
समाज की समृद्धि और धर्म का विकास चाहते हो अगर।
तो स्वार्थों को छोड़कर युवाओं को जोड़ना सीखो॥

भजन

कौन सुनेगा किसको सुनाएँ, इसीलिये चुप रहते हैं
हमसे अपने रूठ न जाए, इसीलिये चुप रहते हैं

अति संघर्ष भरे जीवन से दिल ये अब घबराया है।
गैरों की क्या कहें हमें तो अपनों ने ही गिराया है।
राज ये दिल का-2 खुल न जाए
इसीलिए......

मेरी जीवन वीणा में तार दुःखों का जोड़ दिया
आया था तेरे पास में तुमने, मुख क्यों अपना मोड़ लिया
टूटी ये वीणा-2 कैसे गाए
इसीलिए....

संयम देकर तुमने मुझको अपने से क्यों दूर किया

गम से तड़पते रहने को, तुमने क्यों मजबूर किया
दर्द विरह का-2 किसको दिखायें
इसीलिए...

तुमसे दूर होकर गुरुवर, गम में गोते लगाते हैं
दुनिया वाले जान न पाए, अधर मेरे मुस्कराते हैं
आँखों से आँसू-2 बह न जाए इसीलिए...

इस योग्य हम कहाँ हैं

मुक्तक

समय की मांग है समाज को बदलो।
मिथ्यानीति व रूढ़ि रिवाज को बदलो॥
राज, ताज, साज बदलने से काम नहीं चलेगा।
कल को बदलना चाहते हो तो आज को बदलो॥

भजन

इस योग्य हम कहाँ हैं, गुरुवर तुम्हें रिझायें।
फिर भी मना रहे हैं, शायद तू मान जाये

जब से जन्म लिया है, विषयों ने हमको घेरा है
छल और कपट ने डाला, इस भोले मन पे डेरा है।
सद्‌बुद्धि को अहम ने हरदम रखा दबाये
इस योग्य....

निश्चय ही हम पवित्र हैं, लोभी हैं, स्वार्थी हैं
तेरा ध्यान जब लगाये, माया पुकारती है
सुख भोगने की इच्छा, कभी तृप्त न हो पाये
इस योग्य.....

जग में जहाँ भी देखा, बस एक ही चलन है
एक दूसरे के सुख से, सबको बड़ी जलन है

कर्मों का लेखा जोखा, कोई समझ न पाये।
इस योग्य.....

जब कुछ न कर पाये, तब तेरी शरण में आये हैं
अपराध मानते हैं सह लेंगे सब सजाये
अब ज्ञान हमको देवे, कुछ और हम न चाहें
इस योग्य....

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं

मुक्तक

हिंसा के साम्राज्य को बदलना होगा।
अनीतियों के राज को बदलना होगा॥
दूसरों को बदलना चाहते हैं गर आप।
तब खुद को बदलकर धर्म मार्ग पर चलना होगा॥

भजन

कभी प्यासे को पानी पिलाया नहीं
बाद अमृत पिलाने से क्या फायदा
कभी गिरते हुए को उठाया नहीं
बाद आँसू बहाने से क्या फायदा
कभी प्यासे को पानी............

मैं तो मन्दिर गया, पूजा आरती की
पूजा करते हुए ये, ख्याल आ गया
कभी माँ-बाप की, सेवा की ही नहीं
सिर्फ पूजा ही करने से क्या फायदा
कभी प्यासे को ....

मैं तो मंदिर गया, पूजा आरती की
गुरुवाणी को सुनकर, ख्याल आ गया

जैन कुल में हुआ, जैनी बन न सका
सिर्फ जैनी कहाने, से क्या फायदा
कभी प्यासे को..........

मैं काशी बनारस मथुरा गया
गंगा नहाते हुये, ये ख्याल आ गया
तन को धोया मगर, मन को धोया नहीं
सिर्फ गंगा नहाने से क्या फायदा
कभी प्यासे को......

मैंने दान किया मैंने जप तप किया
दान करते हुए, ये ख्याल आ गया
कभी भूखे को भोजन कराया नहीं
दान लाखों का कर लूँ तो क्या फायदा
कभी प्यासे को......

सजधज कर जिस दिन

मुक्तक

अपनो की विदाई के समय नयन गीले हो जाते हैं।
क्रोध में गोरे चहरे भी लाल पीले हो जाते हैं॥
दुनियां की नहीं आगम अनुभव की बात है।
अपनों को जीतने में व्यक्ति के तेवर ढीले हो जाते हैं॥

भजन

सजधज कर जिस दिन मौत की शहजादी आयेगी
न सोना काम आयेगा न चाँदी काम आयेगी
सज धज......

छोटा सा तू इतने बड़े अरमान हैं तेरे
मिट्टी का तू सोने के सब सामान हैं तेरे
मिट्टी की काया मिट्टी में हो ऽऽ
मिट्टी की काया मिट्टी में, जिस दिन समायेगी
न सोना काम.....

पर खोल के पंछी तू पिंजरा तोड़ के उड़ जा
माया महल के सारे बंधन तोड़ के उड़ जा
कण-कण में तेरी जिन्दगानी हो ऽ ऽ ऽ
कण-कण में तेरी जिन्दगानी मुस्कुरायेगी

न सोना काम....

मोह माया को तू छोड़ दे प्रभु नाम को जप ले
मतलब के सब साथी हैं ये, तू ध्यान में रख ले
लालच में तेरी जिन्दगानी बीत जायेगी
न सोना काम ......

पालन हार बनके

तर्ज-कभी राम बनके

मुक्तक

"मोह की नींद टूटती नहीं तोड़ी जाती है।
परमात्मा से प्रीति जुड़ती नहीं जोड़ी जाती है॥
संयम तप त्याग फलितः होता है वैराग्य से स्वतः ही।
किन्तु बुरी आदत छूटती नहीं, छोड़ी जाती है॥

भजन

पालन हार बनके, तारण हार बनके
चले आना प्रभु जी चले आना
चले आना......

तुम पार्श्व प्रभु जी आना
नाग नागिन के प्राण बचाना
आत्म ध्यान करके नवकार धर के
चले आना प्रभु जी चले आना......

तुम वीर प्रभु जी आना
अहिंसा का दीप जलाना
समता धारी बनके, सारी पीड़ा हरके
चले आना प्रभुजी चले आना......
तेरे दर्शन के प्यासे हैं नैना

हमें दुखड़ों से तुम तार देना
कभी ज्ञानी बनके, केवल ज्ञानी बनके
चले आना प्रभु जी चले आना......

सारे भक्त तेरे दर आये
मन में श्रद्धा के दीप जलाये
दोनों हाथ जोड़ के, मन में भाव जगा के
चले आना प्रभु जी चले आना....

ये धर्म है आतम ज्ञानी का

तर्ज–ये देश है वीर जवानों का

मुक्तक

धर्मात्मा के द्वारा कोई आत्मा सताई नहीं जाती।
मंदिर की सम्पत्ति दानियों द्वारा खाई नहीं जाती॥
अवसर के रहते पुण्य कमालो मेरे मीत।
पुण्य की कमाई पाप में गमाई नहीं जाती॥

भजन

ये धर्म है आतम ज्ञानी का
सीमंधर महावीर स्वामी का
इस धर्म का भैय्या हो ऽऽ
इस धर्म का भैय्या क्या कहना।
यह धर्म है वीरों का गहना
जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, जय

यहाँ णमोकार का चिन्तन है
यहाँ आगम सार का मंथन है
यहाँ रहते है ज्ञानी हो ऽ ऽ ऽ
यहाँ रहते हैं ज्ञानी मस्ती में
मस्ती है रब की हस्ती में
जय हो, जय हो, जय हो...

यहाँ पद्मावती धरणेन्द्र हुए
इनके सुमिरन से धन्य हुए
हुई निर्मल काया हो ऽ ऽ ऽ
हुई निर्मल काया भक्ति में
जय हो, जय हो, जय हो...

यहाँ जिनवाणी सी माता है
भक्तामर स्त्रोत की गाथा है
यहाँ सत्य अहिंसा हो ऽ ऽ ऽ
यहाँ सत्य अहिंसा संयम है
संयम ही साधु जीवन है।
जय हो जय हो जय हो...

मंत्र नवकार

मुक्तक

कोरी चर्चा करने से जीवन में सार न मिलेगा।
समर्पण के बिना सच्चा आधार न मिलेगा॥
किताबों में धर्म को जो खोजते हैं दम्भी।
उन्हें परमात्मा तो क्या आत्मा का भी प्यार न मिलेगा॥

भजन

मंत्र णमोकार हमें प्राणों से प्यारा
ये है वो जहाज हो ऽ ऽ ऽ
ये है वो जहाज है जिसने लाखों को तारा
मंत्र णमोकार हमें..........

अरिहंतों को नमन हमारे
अशुभ करम अरि हनन करें-2
सिद्धों के सुमरन से आत्मा
सिद्ध क्षेत्र को गमन करें-2
भव-भव में हो ऽऽ
भव-भव में नहीं भ्रमे दुबारा
मंत्र णमोकार हमें..........

आचार्यों के आचारों से
निर्मल निज आचार करें

उपाध्याय का ध्यान धरें हम
संवर का सत्कार करें
सर्वसाधु को हो ऽ ऽ ऽ
सर्वसाधु नमन हमारा
मंत्र णमोकार हमें..........

सोते उठते चलते फिरते
इसी मंत्र का जाप करो-2
आप कमाओ पाप पुण्य का
क्षय भी अपने आप करो-2
इसी महामंत्र का हो ऽ ऽ ऽ
इसी महामंत्र का ले लो सहारा
मंत्र णमोकार हमें..........

णमो अरिहंताणं
णमों सिद्धाणं
णमो आर्यारियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं
मंत्र णमोकार हमें..........

पुरानी हो गयी बस्ती

मुक्तक

आलसी के द्वारा दुर्भाग्य की रेखा मिटाई नहीं जाती।
मेहनत से अर्जित सम्पत्ति विलासिता में लुटाई नहीं जाती॥
बेटा भले ही माता-पिता के कर्त्तव्यों को भूल जाये।
किन्तु माँ के द्वारा बेटे के प्रति ममता मिटाई नहीं जातीं ॥

भजन

पुरानी हो गयी बस्ती, पुराना आशियाना है
चलो चिड़िया हुआ पूरा, यहाँ का अब दाना है।
पुरानी.............

पुराना हो गया आँगन, पुरानी हो गयी खिड़की-2
जहाँ ताला लगाते थे, ये वो दरवाजा पुराना है-2
चलो चिड़िया..........

छोड़कर जाएगा जिस दिन, तू अपनी धर्मशाला को-2
तुझे उस रोज कमरे का, किराया भी चुकाना है-2
चलो चिड़िया..........
रजत और स्वर्ण आकर्षण, विकर्षण हो गये सारे-2
कि अब तो शून्य देहरी पर, अलख अपनी जगाना है-2
चलो चिड़िया..........

लोक परलोक की इस यात्रा में, है यही तो एक अन्तर है
किसी से दूर जाना है किसी के पास जाना है-2
चलो चिड़िया...........

जन्म और मृत्यु के क्रम में, जरा सा भेद होता है-2
कहीं दीपक जलाना है, कहीं दीपक बुझाना है-2
चलो चिड़िया...........

गए जब राम से शूरवीर, ईसा और मोहम्मद भी-2
अगर हम भी चले जाए, तो आँसू क्या बहाना है-2
चलो चिड़िया...........

बहती ज्ञान की धार

मुक्तक

तेरी नजरें इनायतें क्या बदलीं
नजारे बदल गये।
किश्ती ने बदला रुख,
किनारे बदल गये॥

भजन

बहती ज्ञान की धार गुरूवर तेरे द्वार
वसुनन्दी जी महाराज तुम तो मेरे गुरुवर हो
तुम्हीं तो ....
संसार तो है नश्वर, संसार में क्या रहना
जो साथ में न जाए, क्या साथ उसके रहना
दो ऐसी ज्योति हमको-2 कर दो मेरा उद्धार
बहती ज्ञान की धार..........
ये दुनिया काम न आई, तेरे ज्ञान में है सच्चाई
इसलिये छोड़ के दुनिया-तेरे द्वार पे आई
हे गुरुवर तुमको वंदन-2 कर दो मेरा उद्धार
बहती ज्ञान की धार ....
भटके जिया भव-भव में, न चैन पल भर आये
नरकों में गिरकर देखा, ये इतना कष्ट उठाये
मिले तुझसे ज्ञान हमको-2 है जीवन से उद्धार
बहती ज्ञान की धार..........

कैसे अदा करेंगे

है अगर विश्वास तो मंजिल मिलेगी।
शर्त यह है बिना रुके चलना पड़ेगा,
जहाँ कहीं भी हो अमावस की हकूमत।
दीप सा तुमको जलना पड़ेगा॥

तर्ज–चूड़ी मजा न देगी

कैसे अदा करेंगे, उपकार हम तुम्हारे
हम तो बने सितारे, बस आपके सहारे

तन को रचा हमारे, माता-पिता ने मेरे
जीवन सम्हारा तुमने, भर ज्ञान उर हमारे
कैसे अदा......
तुम देवता से बढ़कर, मेरे लिये हो ईश्वर
चरणों में शीश मेरा, हे ईश जी हमारे
जब तक हैं जमी पर, विस्मृत न कर सकेंगे
पथ के प्रदीप मेरे, गुरुदेव हो हमारे
कैसे अदा.....
तुमसे मिला है सब कुछ, तुमको क्या भेंट दूँ मैं
सूरज के आगे जुगनू की, बात क्या करूँ मैं
जीवन सजाने वाले, बस इतनी आरजू है
नजरें न मोड़ लेना, कभी दूर से हमारे
कैसे अदा..........

किसको विपत सुनाऊँ

मुक्तक

भीषण अंधेरों में तूफान जब आता है।
इन्सान की तो क्या बात हैवान भी घबराता है,
कर्मों के तूफान आते हैं जीवन में।
जीवन की तो बात क्या काल भी घबराता है॥

भजन

किसको विपत सुनाऊँ, हे नाथ तू बता दे
तेरे सिवा न कोई, जो कष्ट मिटा दे।

अपराध नाथ बेशक, हमने किये हैं भारी
हे दीन के दयालु, उनकी मुझे सजा दे
किसको विपत.........
यह दुष्ट कर्म मुझको भटका रहे हैं दर-दर
जीवन-मरण के दुःख से, हे नाथ तू बचा दे
किसको विपत..........
धन ज्ञान अपना खोकर, परेशान हो रहा हूँ
शांति हृदय में आये, वो उपाय तू सुझा दे
इसके विपत............
टाले नहीं टलता, विधि का उदय किसी से
शिव राम शोक चिंता, तू चित्त से हटा दे।
किसको विपत.......

गुरू हमें दिल से बनाना चाहिए
मुक्तक

सीप में मोती कभी-कभी मिला करते हैं।
दुर्दिन में पुष्प कभी-कभी खिला करते हैं,
मिल जाते हैं गज मुक्ता किसी-किसी हाथी के मस्तक में।
ऐसे चौथे काल जैसे गुरु वसुनन्दी कभी-कभी मिला करते हैं॥

तर्ज–चप्पा चप्पा चरखा चले।

गुरू हमें दिल से बनाना चाहिये
उनके सिफत को ही गाना चाहिये
कोई कुछ कहे फिर आकर हमें
बातों में किसी की नहीं आना चाहिये। गुरु हमें...

गुरू तो गुरू हैं गुरु शिष्य नहीं हैं
शिष्य को कभी भी वो अशिष्ट नहीं हैं
गुरु महिमा को गर जानना तुम्हें
तो शिष्य को गुरू की याद आनी चाहिये। गुरु हमें...

रास्ता बताने वाले गुरु हैं महान
गुरू बिन शिष्य बेजान हैं वीरान
गुरू की कृपा को गर पाना है दिले
तो चरणों में सिर को झुकाना चाहिये। गुरु हमें...

अपने को छोड़ दिया गुरु के चरन्

उसको किया है मुक्ति रमा ने वरन्
गुरू के ही दिल में बनाना हो जगह
तो शिष्य भाव खुद में लाना चाहिये। गुरु हमें...

कमल का फूल गुरू शिष्य के लिये
भव का फूल गुरू शिष्य के लिये
गुरू जैसा ज्ञान गर पाना है तुम्हें
तो गुरू के चरण में ही आना चाहिये। गुरु हमें...

गुरू ने ही आइना बताया है हमें
आइना में क्या है ये दिखाया है हमें
अक्स देख कालिमा हटाना हो अगर
तो गुरू को ही अपना बनाना चाहिये। गुरु हमें...

गुरू का आशीष जिसे मिल गया है
उसका हृदय यहाँ खिल गया है
मरण समाधि गर करना तुम्हें
तो छोड़ ख्याति पूजा गुरू ध्याना चाहिये। गुरु हमें...

भला किसी का कर न सको तो

मुक्तक

बड़ों के कहने का नहीं, बड़ों के व्यवहार का असर पड़ता है
ऊँचे भाषणों का नहीं, ऊँचे आचार का असर पड़ता है।
तुमने तो चाबी ही उल्टी पकड़ ली, ताला कैसे खुले।
आदमी पर फटकार का नहीं, प्यार का असर पड़ता है।

भजन

भला किसी का कर न सको तो, बुरा किसी का मत करना
पुष्प नहीं बन सकते तो, तुम काँटे बनकर मत रहना।

बन न सको भगवान अगर तुम कम से कम इंसान बनो
नहीं कभी शैतान बनो तुम, नहीं कभी हैवान बनो।
सदाचार अपना न सको तो-2 पापों में पग मत धरना
पुष्प नहीं ....

सत्य वचन ना बोल सको तो, झूठ कभी भी मत बोलो
मौन रहो तो ही अच्छा, कम से कम विष तो मत घोलो
बोलो यदि पहले तुम तोलो, फिर मुँह खोला करना
पुष्प नहीं...........
घर ना किसी का बसा सको तो, झोंपड़ियाँ न जला देना

मरहम पट्टी कर ना सको तो, नोन मिर्च न लगा देना
दीपक बनकर जल ना सको, तुम अँधियारा भी मत करना
पुष्प नहीं............

अमृत पिला सको ना किसी को, जहर पिलाते भी डरना
धीरज बँधा नहीं सकते तो, घाव किसी के मत करना
गुरू नाम की माला लेकर, सुबह शाम जपा करना
पुष्प नहीं............

जिस दिन प्रभू जी तेरा दर्शन होगा

मुक्तक

आज कोई हमारे फटे दिलों को सीने वाला चाहिये
आग लगाने वाला नहीं, बुझाने वाला चाहिये
सत्य अहिंसा के उपदेश सुनते-सुनते थक चुके हैं
आज उपदेश देने वाला नहीं, उपदेश लेने वाला चाहिये।

तर्ज-झिलमिल सितारों का आँगन होगा

जिस दिन प्रभू जी तेरा दर्शन होगा
उस दिन सफल मेरा जीवन होगा
तन-मन मेरा तेरे पे जब अर्पण होगा
जिस दिन......

मेरे मन के मन्दिर में मैं तुझको बैठाऊँगा
मेरे मन के मन्दिर में हाँ..........
भाव भरे उपहार तेरे चरणों में चढ़ाऊँगा
असुअन की धारा से अर्चन होगा
उस दिन सफल मेरा जीवन होगा
जिस दिन ....

तेरा मेरा रिश्ता प्रभु जी बहुत है पुराना
तेरा मेरा रिश्ता हो ऽ ऽ ऽ...........

मुझको प्रभु जी मेरे कभी न भुलाना
ध्यान तेरा जब निश दिन होगा
उस दिन सफल मेरा जीवन होगा।
जिस दिन.........

जैसा भी कहोगे मुझको वैसा ही मंजूर है
दया भी तेरी मेरे पर भरपूर है
तेरी कृपा से मन दर्पण होगा
उस दिन सफल मेरा जीवन होगा
जिस दिन.........

दुनियां में ऐसा कहाँ

मुक्तक

ओरों को बदलने के लिये, खुद को बदलना सीखो।
औरों को बनाने के लिए सब से मिलना सीखो।
उजाले की प्रशंसा न मिलेगी किताबों में तुम्हें।
उसे पाने के लिए खुद दीपक बन जलना सीखो।

तर्ज-दुनिया में ऐसा कहाँ सबका नसीब है

दुनियाँ में ऐसा कहाँ सबका नसीब है।
कोई कोई अपने गुरू के करीब है॥

कोई बुझा दे चाहे दीपक सारे
गुरू ही दिखाये आगे राह के तारे
पास हो मांझी तो किनारा करीब है।
दुनियाँ में ....
आँख भरी है पथ अंधियारा
राह न सूझे, गुरूवर दे दो सहारा
गुरू चरणों में हो वो खुशनसीब
दुनियाँ में...............
गुरू तुम छोड़ के आये दुनिया के रिश्ते
इनको तिरा दो गुरूवर दल-दल के बीच से
मन में मेरे गुरू भक्ति का संगीत है
दुनिया में...............

मिलता है सच्चा गुरू

मुक्तक

बढ़िया कपड़ों से कोई महान नहीं होता
बढ़िया लेबल से बढ़िया पकवान नहीं होता
बाहर में मत उलझो, अन्तर को पहचानो
आँखों के मूंदने से, कोई ध्यान नहीं होता।

भजन

मिलता है सच्चा सुख केवल, गुरुदेव तुम्हारे चरणों में
यह विनती है पल-पल छिन-छिन, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
चाहे बैरी सब संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में।
मिलता.............

चाहे अग्नि में मुझे जलना हो, चाहे कांटों पर मुझे चलना हो
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
मिलता.............

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अंधेरा हो
पर मन न मेरा डगमग हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
मिलता.............

जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरी याद सुबह शाम रहे
तेरी याद में प्राणायाम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में
मिलता.............

दुनिया में रहने वाले

मुक्तक

आज दुनियाँ में कोई इन्सान नहीं है।
मन्दिर भी है मस्ज़िद भी है, ईमान नहीं है।
आज इन्सान को मापा जाता है, दौलत से
क्योंकि आदमी को आदमी की पहचान नहीं है।

गजल

दुनिया में रहने वाले क्या तुझको ये खबर है
दो दिन की जिंदगी है, पल भर का ये सफर है
जीना जो चाहते थे वो भी तो जी न पाये
घर बार छोड़कर सब मिट्टी में जा समाये
कल तेरा मेरा सबका अंजाम ये असर है।
दो दिन की जिंदगी है.........
मत नाज कर तू अपने सहभागी दोस्तो पर
छोड़ आयेंगे ये तुझको सब खाक में मिलाकर
तेरा यहाँ न कोई हमदम न हमसफर है।
दो दिन की जिंदगी है........
मरने से पहले तौबा अपने गुनाहों से कर ले
अंजाने मान जा तू बातें खुदा से कर ले
मरने के बाद तेरा मुश्किल बहुत सफर है
दो दिन की जिंदगी है........
कुछ भी नहीं है तेरा दो गज जमीं है तेरी

मिल जाए गर ये तुझको ये भी नहीं जरूरी
इस बात का पता तो होता नहीं किसी को
दो दिन की जिंदगी है.........
आंखों ने तेरी तुझको कितने दिखाये मुर्दे
कंधों से अपने तूने कितने उठाये मुर्दे
फिर भी बना है अंधा जिस पे तेरी नजर है
दो दिन की जिंदगी है.........
जब मौत ने पुकारा कुछ भी काम न आया
मरते हुए को देखो कोई बचा न पाया
सच्चाई से तू उसकी क्यूँ आज बेखबर है
दो दिन की जिंदगी है......
मरते समय ना आयी कुछ काम झूठी माया
सब कुछ था पास लेकिन कुछ भी ना काम आया
बेकार निकली आखिर दुनिया की हेरा फेरी
दो दिन की जिंदगी है.......
इस बात का पता तो होता नहीं किसी को
किस वक्त मौत आए कब खत्म जिन्दगी ये
यूँ ही पड़ी रहेगी बेजान लाश तेरी
दो दिन की जिंदगी है.........
किससे मिलेगी मिट्टी किससे कफन मिलेगा
क्या जाने कोई तुझको कंधा भी दे सकेगा
अंजाने याद रखना इस बात को तू मेरी
मिल जाए गर ये तुझको ये भी नहीं जरूरी
दो दिन की जिंदगी है.........

ढोल बजा के

मुक्तक

यह दुनिया बड़ी अजीब है, यहाँ ईमान बिकता है
यह बाजार बड़ा बेदर्द है, यहाँ इन्सान बिकता है।
और इससे भी कड़वा सत्य, यह भी सुन लीजिये
इन्सान के हाथों अदालत द्वारा भगवान बिकता है।

भजन

ढोल बजा के बोल गुरुवर मेरे हैं.......2
ताली बजा के बोल गुरूवर मेरे हैं.....2
मेरे हैं मेरे हैं-3
ढ़ोल बजा के बोल.........
कोई कहे मेरे कोई कहे तेरे......2
कोई कहे पतले कोई कहे मोटे
गुरुवर गोल मटोल गुरूवर मेरे हैं।
ढोल बजा के बोल..........
कोई कहे महँगे कोई कहे सस्ते.......2
गुरुवर हैं अनमोल गुरूवर मेरे हैं
ढोल बजा के बोल..........
कोई कहे पूरब कोई कहें पश्चिम
कोई कहे उत्तर कोई कहे दक्षिण
गुरूवर चित्त चकोर गुरूवर मेरे हैं

ढोल बजा के बोल........

कोई कहे सोना कोई कहे चाँदी
कोई कहे हीरा कोई कहे मोती
गुरुवर है बेमोल गुरूवर मेरे हैं
ढोल बजा के बोल........

दीनबंधु दयालु

मुक्तक

गम सहकर मुस्काओ दुनियाँ में
यहाँ बुज़दिलों की गुजर नहीं होती
हँसना भी जरूरी है दुनिया में
रोकर जिंदगी बसर नहीं होती

भजन

दीन बंधु दयालु दया कीजिये
वरना हमको जहाँ से उठा लीजिये

मेरे भगवान गरीबी किसी को न दे
मौत दे दे मगर बदनसीबी न दे
घटनाओं से हमको बचा लीजिए
वरना हमको ....

मेरी नैय्या पुरानी भंवर में पड़ी
बीच सागर में जाकर के लहरा रही
पार कर न सको तो डुबा दीजिए
वरना हमको.........

मैं गुनाहगार हूँ तेरे द्वारे खड़ा

हाथ जोड़े खड़ा सिर झुकाये खड़ा
माफ कर ना सको तो सजा दीजिये
वरना हमको.......

तुमने मुझको बुलाया चला आया मैं
मेरी दुनिया में आकर के भरमाया मैं
मेरी बिगड़ी दशा को बना दीजिए

नहीं चाहिये दिल

मुक्तक

भगवान को पहचानना है तो, पहले इन्सान को पहचानो
और आध्यात्म को जानना है तो पहले ईमान को जानो
बिन्दु को पहचाने बिना, सिंधु को कैसे पहचानोगे
भगवान के अहसान से पहले, आदमी के अहसान को मानो

भजन

नहीं चाहिए दिल दुखाना किसी का
सदा न रहा है, सदा न रहेगा ये जमाना किसी का
नहीं चाहिए दिल.........
आयेगा बुलावा तो जाना पड़ेगा, सर तुमको आखिर झुकाना पड़ेगा
वहाँ न चला है, वहाँ न चलेगा ये बहाना किसी का
नहीं चाहिए दिल.........
पहले तो तुम अपने आप को संभालो, इक नहीं तुमके बुराई औरों में निकालो
बुरा है बुरा जग में-2 बताना किसी का
नहीं चाहिए दिल........
दुनियाँ का गुलशन तो सजा ही रहेगा, ये तो जहाँ में लगा ही रहेगा
आना किसी का जग में-2 जाना किसी का
नहीं चाहिए दिल.........
शोहरत तुम्हारी रह जायेगी ये, दौलत यहाँ पर रह जायेगी ये
नहीं साथ जाता-2 ये खजाना किसी का
नहीं चाहिए दिल ....

जो बीत गये फिर

मुक्तक

प्यासी है धरती नीर चाहिये, बुद्ध राम रहीम चाहिए
बैठी है आज सारी धरती, बारूद के ढेर पर
हमें एक बार फिर जीते, जागते महावीर चाहिए'

भजन

जो बीत गये फिर वो जमाने नहीं आते-3
आते हैं नये लोग पुराने नहीं आते-2
जो बीत गये फिर......

लकड़ी के मकानों में चिरागो को न रखिये-2
अब आग पड़ौसी भी बुझाने नहीं आते-2
जो बीत गये फिर.....

मैं आज के इस दौर का वीराना खण्डहर हूँ-2
बच्चे भी यहाँ शोर मचाने नहीं आते-2
जो बीत गये फिर.....

इस पेड़ की हर शाख तो सूखी ही पड़ी है-2
पंछी भी यहां रात बिताने नहीं आते-2
जो बीत गये फिर......

प्रभु ध्यान में लग जा यह हमारी है प्रार्थना
तप करके मोक्षा जाने वाले फिर नहीं आते
जो बीत गये फिर........

जिस भजन में

मुक्तक

ये रंग बदलकर तस्वीर बदल देते हैं
कमान से निकला हुआ तीर बदल देते हैं
इतनी शक्ति है गुरूवर के चरणों में
कि ये इंसान की तकदीर बदल देते हैं।

भजन

जिस भजन में प्रभु का नाम न हो।
उस भजन को गाना न चाहिये॥

जिस सभा में अपना मान न हो।
उस सभा में जाना न चाहिये ॥
चाहे बेटा कितना लाड़ला हो।
उसे सिर पर बैठाना न चाहिये॥
चाहे बेटी कितनी लाड़ली हो।
उस घर-घर घुमाना न चाहिये ॥
जिस भजन ....

जिस पिता ने हमको पाला है।
उसे कभी भुलाना न चाहिये॥
जिस माँ ने हमको जन्म दिया है।
उसे कभी सताना न चाहिये॥
जिस भजन......

चाहे मित्र हमारा बैरी हो
उसे कभी हराना नहीं चाहिए
चाहे बीबी कितनी सुन्दर हो
उसे हर राज बताना नहीं चाहिए
जिस भजन.....

चाहे कितनी अमीरी आ जाये
प्रभु नाम भुलाना नहीं चाहिये
चाहे कितनी गरीबी आ जाये
पर खेद बढ़ाना न चाहिये
जिस भजन......

गुरू चरण की भक्ति

तर्ज–दिल के अरमा आँसुओं में बह गये।

मुक्तक

प्रायः सत्य बोलने वालों की मजाक हुआ करती है
मरने के बाद उनकी तारीफ हुआ करती है
चोट पर जलन करती है दवा तो समझो
कड़वी दवा भी हितकारी हुआ करती है।

भजन

गुरू चरण की भक्ति जो भी कर गये
पाप भव बन्धन से वो नर तर गये
गुरू चरण......
सब ही करते गुरू भक्ति का भजन
हर भजन में स्वार्थ ही बस रह गये
पाप भव बन्धन से वो नर तर गये
गुरू चरण......
जो भी तेरे द्वार पर आया गुरूवर
आके तेरी भक्ति में वो रम गये
पाप भव बन्धन से तो नर तर गये
गुरू चरण......

मिलती है साधुओं

तर्ज–होती है जिंदगी में

मुक्तक

गर पाप से बचना है तो व्यसन करना छोड़ दो
गर मौत से बचना है तो कषाय करना छोड़ दो
अगर आत्मा का दर्शन करना है तुम्हें तो
संयम का हथौड़ा ले कर्मों का महल तोड़ दो।

भजन

मिलती है साधुओं की संगत कभी-कभी
चढ़ती है मन पे धर्म की रंगत कभी-कभी
निर्धन के घर में शहंशाह मुश्किल से आते हैं
नदियों पे जैसे हंसों की पवित्री कभी-कभी
मिलती है......
आये उदय में भाग्य तो मिले महात्मा
जी भर के कर लो दोस्तो संगत कभी-कभी
मिलती है......
बन्दे को रहना चाहिये ऐबों से दूर ही
दलदल में ले डूबती है कुसंगति कभी कभी
मिलती है.......
गुरूओं की शरण आकर कर लो सफल जन्म
मिलती है आदमी को संगत कभी-कभी
मिलती है.................

रंग माँ रंग माँ

तर्ज–प्रभु के रंग में

मुक्तक

रागियों को हर समय राग नजर आता है
सामने हीरा तो पत्थर नजर आता है
क्योंकि अज्ञान ने घेरा है उनको
उन्हें हिन्सा में भी धर्म नजर आता है

भजन

रंग मा रंग मा रंग मा रे
प्रभु थारी ही रंग मा रंग गयो रे।टेक
आया मंगल दिन मंगल अवसर
भक्ति में थारी हूँ नाच रहो रे। प्रभु थारे...
गाओ रे गाना आतमराम का-2
आतम देव बुलाए रहो रे। प्रभु थारे...
आतम देव को अन्तर में देखा-2
सुख सरोवर उछल रहो रे। प्रभु थारे...
भाव भरी हम भावना से यारो
आप समान बनाय लियो रे। प्रभु थारे...
समयसार में कुन्दकुन्द देव
भगवान कहीं ने बुलाय रहो रे। प्रभु थारे...
आज हमारी उपयोग पलट्यो
चैतन्य-चैतन्य भाग्य रहो रे। प्रभु थारे...

मीठो-मीठो बोल

तर्ज–धीरे धीरे बोल कोई

मुक्तक

पानी वहीं रूकेगा जहाँ ढलान नहीं है
सोख्य वहीं रहेगा जहाँ तनाव नहीं है
मन्दिर, मस्जिद में जाकर भक्त बनाने वालो
धर्म वहीं रूकेगा जहाँ दुराव नहीं है।

भजन

मीठो-मीठो बोल थारो काई बिगड़े-2
आ जीवन या दम नहीं।
कब निकले प्राण मालूम नहीं।
मीठो-मीठो........

सोच समझ ले स्वारथ का ये संसार।
लाख जतन कर छूटे न घर बार।
तू जाग जा तू मान जा, पहचान जा।
संसार किसी का घर नहीं।
कब निकले प्राण मालूम नहीं।
मीठो-मीठो........

युग-युग से गुरु कहते बारं-बार

गुरुवर तेंरे चरणो

तर्ज–गुरुवर तेरे चरणों की

मुक्तक

बात वही पचा सकता है जो गम्भीर हो
कटु वचन को वही सुन सकता है जो धीर हो
बाहर के दुश्मनों को पराजित करने वालो
आत्मशत्रु को वही जीत सकता है जो सच्चा वीरहो

भजन

गुरुवर तेरे चरणों की, मुझे धूल जो मिल जायें।
चरणों की रज पाकर, तकदीर बदल जाये।टेक

मेरा मन बड़ा चंचल है, इसे कैसे मैं समझाऊँ।-2
इसे जितना भी समझाऊँ, उतना मचल ही जाये।
गुरूवर तेरे चरणों........

मेरी नाव भवंर में है, इसे पार लगा देना।-2
तेरे एक इशारे से, मेरी नाव उभर जाये।
गुरुवर तेरे चरणों.......

नजरों से गिराना न, चाहे जितनी सजा देना।-2
नजरों से जो गिर जाये तो कैसे सम्भल पाये।

गुरुवर तेरे चरणों.........

बस एक तमन्ना है, गुरु सामने हो मेरे।-2
गुरू सामने हो मेरे, चाहे प्राण निकल जाये।
गुरूवर तेरे चरणों.......

आचार्य मेरे प्यारे

मुक्तक

दिल से मोह नहीं तोड़ा तो साधना बेकार है।
क्रोध को नहीं जीता तो विजय भी हार है।
हर मानव समझता है पृथ्वी पर इस तथ्य को
क्रोधी मानव को मिलती हर जगह फटकार है।

तर्क–अश्कों के लेके धारे

आचार्य मेरे प्यारे-2
दे दो हमें सहारे
इस टूटी जिन्दगी के-2
बस आप ही किनारे, आचार्य.....

सूरज हो इस धरा के, हमको उजाला दे दो
तुम ज्ञान के हो सागर, भक्ति का प्याला दे दो
दिल कह रहा है हमसे, महावीर हो हमारे
इस टूटी जिन्दगी के-2......

चरणों की धूल से ही, हर भाग्य जगमगाया
जो पास तेरे आया, चन्दन उसे बनाया
अब जिन्दगी हमारी, है हाथ में तुम्हारे
इस टूटी जिन्दगी के-2.......

शिष्य भूल जाये रे

तर्ज-हम भूल गये हर बात, मगर तेरा प्यार नहीं भूले

मुक्तक

दुश्मन को जीतना है तो बाहों में शक्ति चाहिये
मंजिल को यदि पाना है तो पैरों में गति चाहिये
कोशिश करो इस दुनियाँ में सब सम्भव है
भगवान को यदि पाना है तो दिलों में भक्ति चाहिये

भजन

शिष्य भूल जाय रे हर द्वार, मगर गुरूद्वार नहीं भूले
गुरु के जीवन के आधार, मगर उपकार नहीं भूले।
गुरू जीवन के आधार.....

जब शिष्य नहीं चल पाता है, तब गुरु ही उसे चलाते हैं।
वह ठोकर खाकर गिर जाता है, तब गुरू ही उसे उठाते हैं
भव से गुरु करते पार, नहीं यह शिष्य कभी भूले
गुरु जीवन के आधार ....

गुरु के बिन जीवन शुरू नहीं गुरु ही शुभ फूल खिलाते हैं
गुरु ब्रह्मा है गुरू विष्णु हैं गुरु ही महेश कहलाते हैं।
गुरू देव जीवन का सार, यह बात नहीं भूले
गुरु जीवन के आधार.......
गुरु दृष्टि द्रव्य प्रदाता है गुरु ही सम्यक्त्व विधाता है-2

गुरू माता-पिता है भ्राता है गुरू भक्ति मार्ग प्रदाता है।
गुरू है जीवन के द्वार नहीं शिष्य राह कभी भूले
गुरू जीवन के आधार.....

गुरु ही सतधर्म बताते हैं, गुरु किस्मत नई बनाते हैं
गुरुदेव जगत के सूरज हैं जो अंतर ज्योति जलाते हैं
गुरु ज्योति पुँज किरदार, नहीं बात कभी भूले
गुरु जीवन के आधार.....

गुरू के द्वय चरण हृदय में हों, मम हृदय रहे गुरू चरणों में-2
दो मरण समाधि हे गुरुवर मम हृदय रहे गुरु चरणों में-2
कर दो मेरा उद्धार नहीं उपकार कभी भूले
जीवन के आधार.....

आगे-आगे अपनी

मुक्तक

मानव वही है जो मधुर वचन बोलता है
दानव वही है जो वाणी में जहर घोलता है
इससे बढ़कर मनुष्य की कोई पहचान नहीं है
त्रियोग से सरल मानव शिव द्वार खोलता है।

भजन

आगे-आगे अपनी ही अर्थी के मैं गाता चलूँ
सिद्ध नाम सत्य है अरहंत नाम सत्य है

पीछे-पीछे दूर तक दिख रही जो भीड़ है
पंछी शाख से उड़ा खाली पड़ा नीड़ है
सृष्टि सारी देख ली पर्याय ही अनित्य है
सिद्ध नाम सत्य है.......

जिसको मेरे सुखों दुखों से कुछ नहीं था वास्ता
उनके ही कांधों पर मेरा कट रहा है रास्ता
आँख जब मूंदी तो कोई शत्रु है न मित्र है
सिद्ध नाम सत्य है.......

डोरियों से मैं नहीं बँधा मेरा संस्कार था

एक कफन पर ही मेरा रह गया अधिकार था
तुम उसे उतारने जा रहे यह सत्य है
सिद्ध नाम सत्य है........

आपके अनुराग को आज क्या हो गया।
जिस क्षण चिता पर चढ़ा महान कैसे हो गया
जो अनित्य वो ही नित्य नित्य ही अनित्य है
सिद्ध नाम सत्य है........

मैं अरूपी गंध दूर उड़ गई थी फूल से
लहर भी चली गई थी दूर मृत्यु कूल से
सत्य देख हँस रहा कि जल रहा असत्य है।
सिद्ध नाम सत्य है......

मैं तुम्हारे वंश से भटका हुआ हूँ देवता
आत्म तत्व छोड़कर मैं जगत को देखता
यह अनादि काल की भूल का ही कृत्य है
सिद्ध नाम सत्य है.....

उड़ चला पंछी'' (विहार)

मुक्तक

दीपक की भांति जलता है कोई कोई
वृक्षों की भांति फलता है कोई कोई
आदर्शों की बात तो कई लोग करते हैं
आदर्श के पथ पर चलता है कोई कोई

भजन

उड़ चला पंछी रे, हरी भरी डाल से-2
रोको रे रोको, कोई, मुनि को बिहार से
उड़ चला पंछी.....

सोचा कभी न हमने, आके जगाओगे
आके जगाके हमको, यूँ ही छोड़ जाओगे
दान देना जीवन का, फिर से पधार के
रोको रे रोको........

सरगम की ताने टूटी रूठी हुई है सांसें
आके मनाओ गुरुवर रो रही हैं आँखें
दीप जलाओ सम्यक का, दीवाली मनायें
रोको रे रोको.........

पास जो रह के तेरे, भजन मैंने गाये हैं
जीवन में उतने मैंने, पुण्य कमाये हैं
पुण्य की वर्षा करो, नगर में पधार के
रोको रे रोको........

कम्पित है मन की बगिया, हरियाली आज है
पतझड़ न आ जाये, सूखा वृक्ष आज है
कर्मो का पुण्य नदी है, जाये गुरू आज रे
रोको रे रोको........

शुद्ध हृदय हो पल में

तर्ज–सावन की महिमा

मुक्तक

धर्म वह है जो तम को भगा आलोक कर दे
धर्म वह है जो अज्ञान को हटा ज्ञान भर दे
धर्म ऐसा कल्प वृक्ष है ये मेरे साथियों
जो मुरझाये सुमन में सुवास भर दे

भजन

शुद्ध हृदय हो पल में, हो जाता है कल्याण
बगुला भक्तों को न मिल सकते हैं भगवान

हाथ में माला दिल पर काला
भला ऐसी माला से, क्या है मिलने वाला?
दिल में पाप भरा है और मुँह में कहते राम
बगुला भक्तों........

मन्दिर में जाते हो, प्रभु गीत गाते हो,
पर मौका पाकर चित्त चुराते हो
ऐसी भक्ति हर गिज न बन सकती वरदान
बगुला भक्तों........

पीने में धोखा है खाने में धोखा
दुनिया की हर शै है धोखा ही धोखा
जब जीवन है इक धोखा, फिर कैसे हो उत्थान
बगुला भक्तों........

छल और कपट के, विष को जला दो
सच्चे हृदय से, भक्ति धन कमा लो
हेरा फेरी छोड़ो, यह कहते हैं, ''मुनि जन''
बगुला भक्तो....

जब तेरी डोली

चार दिन की चाँदनी आखिर अँधेरी रात है,
सारी दौलत धरी रह जायेगी, कहने की झूठी बात है।
न किसी का है भरोसा न किसी का साथ है
चलती दफा देखा तो, दुनियाँ से दोनों खाली हाथ हैं

भजन

जब तेरी डोली निकाली जायेगी
बिन महूरत उठा ली जायेगी
जब तेरी डोली..........

उन हकीमों से कह दो बोल कर
दावा करते जो किताबें खोल कर
दे दवा हरगिज न खाली जायेगी
जब तेरी डोली..........

क्यों गुलों पर हो रही बुलबुल निसार
है खड़ा पीछे शिकारी खबरदार
मार कर गोली गिरा ली जायेगी
जब तेरी डोली..........

अय मुसाफिर क्यों पसरता है यहाँ
ये मिला तुझको किराये का मकान
कोठी खाली करा ली जायेगी
जब तेरी डोली..........

जर सिकन्दर का यहीं पर रह गया
मरते दम लुकमान भी यह कह गया
ये घड़ी हरगिज न टाली जायेगी
जब तेरी डोली..........

चेत भइया अब श्री जिनवर भजो
मोह रूपी नींद को जल्दी तजो
वरना ये पूँजी उठा ली जायेगी
जब तेरी डोली......

मेरा जीवन कोरा

मुक्तक

कोई किसी बांट नहीं सकता ये पक्का है।
फिर अपनी बात सुनाने में क्या रखा है,
सह लिया जाता है सारे गमों को मूक होकर मेरे भाई।
कोई कर भी क्या सकता है हमारी किस्मत यही लिक्खा है॥

भजन

मेरा जीवन कोरा कागज कोरा ही रह गया।
जिंदगी को लख न पाया, यूँ ही गुजर गया।।

चंद दिन की उम्र मैंने जिंदगी जानी-2
गुरू ने बतलाया बहुत पर एक न मानी-2
मौत जब लेने आई दंग रह गया ऽ ऽ
मेरा जीवन.......
हम अहं में जी रहे हैं, ज्ञान को तजकर-2
घूँट विष का पी रहे हैं, पाप को भजकर-2
झुक न पाया मैं विनत हो, चूर हो गया-ऽ ऽ
मेरा जीवन......
जागना था हमको यहाँ पर, सो गये आकर-2
जग से हमको था निकलना, खो गये आकर-2
भोग विषयों में रचा और फँस के रह गया-ऽऽ
मेरा जीवन.......

जिंदगी गुलशन हमारी, खुद ही वीरान की-2
सपना अपना मान करके पर में ही जान दी-2
पाक जीवन था मगर नापाक कर गया-ऽऽ
मेरा जीवन........

जानता तो सब यहाँ था, पर कुछ न किया-2
भोग विषयों में लिपटकर मैं यहाँ जिया-2
आपको नहीं जान पाया पर मैं मर गया-ऽऽ
मेरा जीवन.....

गुण अनन्त है आत्मा में, कौन कह सके-2
जिसने पाया सत्य को वह पद में रह सके-2
छोड़कर तेरे चरण मैं भव में मर गया-ऽऽ
मेरा जीवन......

चार दिन की जिंदगानी में गम कमाये हैं
हर तरफ है आग भरी, दर्द पाये हैं
कोई भी मेरा सहारा, अब न रहा गया
मेरा जीवन......

जिनको अपना माना हमने, जिंदगी खो दी
एक दिन उनमें ही हमने ठोकरें दे दी
मौत आयी तो अकेला होकर मर गया
मेरा जीवन.......

दोस्त माना हमने जिनको, साथ उनके था
उनके कंधे पर लदा था, दूर उनसे था
अब चिता पर जल गया, तो राख हो गया
मेरा जीवन.......

दोस्त अच्छे वक्त में सब लोग बनते हैं
गम के दिन जो काम आये दोस्त कहलाते हैं
दोस्ती नहीं जान पाया, भूल कर गया।
मेरा जीवन.......

हर बात को

तर्ज–बाबुल की दुआयें

मुक्तक

राही चले जिस राह पर उसे हम पंथ कहते हैं
रखे जो श्रेष्ठ बुद्धि उसे धीमन्त कहते हैं
रखे जो लाज लक्ष्मी की उसे श्री मन्त कहते हैं
चले जो मुक्ति पथ की ओर उन्हें गूरू वसुनन्दी कहते

भजन

हर बात को तुम भूले भले
माँ बाप को तुम मत भूलना
उपकार इनके लाखों हैं
इस बात को तुम मत भूलना
हर बात.........

धरती पर वो गो पूजा भगवान को लाख मनाया है
अब तेरी सूरत पायी है संसार में तुमको बुलाया है
इन पावन लोगो के मन को पत्थर बन कर मत तोड़ना
उपकार..........

गीले में सदा ही सोये हैं सूखे में तुझको सुलाया है
बाहों का बना करके झूला तुझे दिन और रात झुलाया है

इन निर्मल निश्छल आँखों में इक आँसू भी मत घोलना
उपकार.........

अपने ही पेट को काटा है और तेरी काया सजायी है
अपना हर कौर खिलाया तुझे तब तेरी भूख मिटाई है
इन अमृत देने वालों के जीवन में जहर मत घोलना
उपकार..........

जो चीज भी तूने मांगी है वो सब कुछ तूने पाया है
हर जिद को लगाया सीने से बड़ा तुझसे नेह लगाया है।
इन प्यार लुटाने वालों का तू प्रेम प्यार मत भूलना
उपकार...........

चाहे लाख कमाये धन दौलत ये बंगला, कोठी बनाया है
माँ बाप ही ना खुश हैं तेरे बेकार ये सारी कमाई है
ये लाख नहीं ये खाक है इस राज को तुम मत भूलना।
उपकार.......

हर बात को तुम भूलो भले
माँ बाप को तुम मत भूलना
उपकार......

भगवान तुझे

मुक्तक

कोरवों की भावना थी, मेरा सो मेरा, तेरा भी मेरा
पाण्डवों की भावना थी, मेरा सो मेरा, तेरा सो तेरा
श्री राम की भावना थी, तेरा सो तेरा, मेरा भी तेरा
भ. महावीर की भावना थी, ना मेरा, ना तेरा, ये दुनिया रैनबसेरा'

भजन

भगवान तुझे मैं खत लिखता, पर पता तेरा मालूम नहीं
रो-रो लिखता, हँस-हँस लिखता, पर पता तेरा मालूम नहीं ।टेक

मैंने चंदा से पूछा सूरज से, और पूछा गगन से तारों से
तारों ने कहा आकाश में है, पर पता तेरा मालूम नहीं भगवान...

मैंने पूछा फूलों से माली से और पूछा वृक्ष की डाली से
डाली ने कहा माटी में है पर पता तेरा मालूम नहीं। भगवान...

मैंने संतों से पूछा गुरूओं से, और पूछा ज्ञानियों और ध्यानियों से
सबने कहा कण-कण में है, पर पता तेरा मालूम नहीं भगवान...

मैंने गंगा से पूछा यमुना से ओर पूछा गहरे सागर से
सागर ने कहा पानी में है, पर पता तेरा मालूम नहीं भगवान...

मैंने मीना से पूछा, गूजर से और पूछा वहां के गवालों से
ग्वाले ने कहा टीले में है पर पता तेरा मालूम नहीं भगवान...

मैंने तेरे ही

मुक्तक

सदा धर्म ने ही गुलाम नर को आजाद किया है
और उसी ने उजड़े लोगों को आबाद किया है
किन्तु न माफ करेगा उसे जमाना जिस धार्मिक ने
निज ऐश्वर्य जुटाने लाखों को बर्बाद किया है

भजन

मैंने तेरे ही भरोसे पार्श्वनाथ, भंवर में नैय्या डाल दई
काहे की तेरी नाव बनी है, काहे की पतवार 2
धर्म की मेरी नाव बनी है, समकित की पतवार
मैंने तेरे......
कौ है जामें बैठन हारो को है खेवन हार
आतम जामें बैठन हारो, गुरु है खेवन हार
मैंने तेरे......
श्रीपाल का कुष्ट मिटाया, द्रौपदी चीर बढ़ाया
मैना के सब संकट टारे, भई कंचन सी काया
मैंने तेरे......
लाख चौरासी भव-भव भटके, काल अनादि खोये
अपने कारण कुछ नहीं कीना, बीज पाप के बोये
मैंने तेरे......
पूजा-पाठ करो सुन भाई, मन्त्र जपो नवकार
रत्नत्रय की नाव बनाकर, हो जाओ भव से पार
मैंने तेरे......

साँवलिया पारसनाथ

मुक्तक

हर हालत में खुश रहो ये जीने की कला है
जो पैदा हुआ है वह एक दिन मिट्टी में मिला है
बुरा आदमी चाहता है सुख आनन्द से जीना
खुद जिओ ओर दूसरों को जीने दो इसी में भला है

भजन

सांवलिया पारसनाथ शिखर भले विराजे जी
टोंक टोंक पर ध्वजा विराजे झालर घण्टा बाजे
घण्टे की घननाद घनाघन, अनहत बाजा बाजे जी हो
सांवलिय पारसनाथ............
दूर दूर से यात्री आवे मन में ले लेकर चाव
अष्ट द्रव्य से पूजा कीनी मनवाँछित फल पावे जी
सांवलिया पारसनाथ.........
काली काली भिलनी आवे, जिनकी लम्बी चोटी
जिसके मन में दया धर्म नहीं, उसकी किस्मत खोटी
सांवलिया पारसनाथ.........
ऊँचा नीचा पर्वत सोये, जहाँ भीलो को वासा
उसी जगह से प्रभु मोक्ष गये, वहाँ से लिया निवास
सांवलिया पारसनाथ.........

सोते सोते निकल गई

मुक्तक

उड़ने की चाह हो तो आसमान भी मिल जाता है
प्यासे को रेगिस्तान में भी पानी मिल जाता है
जिसके दिल में कुछ करके गुजरने की सच्ची लगन हो
उसे इस धरती पर स्वयं भगवान भी मिल जाता है

भजन

सोते सोते ही निकल गयी सारी जिन्दगी
बोझा ढोते-ढोते ही निकल गयी सारी जिन्दगी
जिस दिन जन्म लिया पृथ्वी पर तूने रूदन मचाया
आँख तेरी खुलने न पाई, भूख भूख चिल्लाया
खाते खाते ही निकल गई सारी जिंदगी
बोझा ढोते ही.........

यौवन बीता आया बुढ़ापा डगमग डोले काया
सब के सब रोगों ने आकर डेरा खूब जमाया
रोगों भोगों में निकल गई सारी जिन्दगी
बोझा ढोते ही.......

जिस तन को तू अपना समझा दे बैठा वह धोखा
प्राण जाए और जल जाएगा यह काठी का खोका

खोका ढोते ही निकल गयी सारी जिन्दगी
बोझा ढोते ही.......

जीवन भर नहीं धर्म किया और अंत समय पछताया
पैसा-पैसा करते करते पेटी बहुत भराया
भोगो-भोगों में निकल गयी सारी जिंदगी
बोझा ढोते ही........

जिन्दगी एक सफर है सुहाना

मुक्तक

कीचड़ भरे सरोवर में कमल खिलते हैं
सिन्धु के खारे जल में रत्न मिलते हैं।
इसलिए कभी अपने को हीन मत समझो
महा पुरुष सदा अभावों में पलते हैं

भजन

जिन्दगी एक सफर है सुहाना
आया सास बहू का जमाना
सास कहे बहु आयेगी जरूर
आके आटा लगायेगी जरूर
देखो सास लगा रही आटा
बहु करके चली गयी टाटा
जिन्दगी एक सफर..........

सास कहे बहु आयेगी जरूर
आके रोटी बनायेगी जरूर
देखो सास बना रही रोटी
बहु करने चली गई चोटी
जिन्दगी एक सफर..........

सास कहे बहु आयेगी जरूर
आके बर्तन माजेंगी जरूर
देखो सास माँज रही बर्तन
बहु करने चली गई फैशन
जिन्दगी एक सफर..........

सास कहे बहु आयेगी जरूर
आकर बिस्तर लगायेगी जरूर
देखो सास लगा रही बिस्तर
बहु देखने चली गई पिक्चर
जिंदगी एक सफर..........

गुरूदेव मेरे तुमको

मुक्तक

लहरें तो बहुत हैं पर समुन्दर एक है
देश तो अनेक हैं पर भारत एक है
भक्त तो अनेक हैं पर भगवान एक है
शास्त्र तो अनेक हैं पर सार सबका एक है

भजन

गुरुदेव मेरे तुमको भक्तों ने पुकारा है।
आओ अब आ जाओ, एक तेरा सहारा है॥
हो चारों तरफ छाया ये घोर अंधेरा है
सब आयें कहाँ बोलो तुफां ही सहारा है
हे नाथ अनाथों को तेरा ही सहारा है।
गुरूदेव मेरे तुमको..........

मझाधार पड़ी नैय्या डगमग गोता खाये
मिल जाओ हमें आकर इस भव से तर जाये
बिन तेरे नहीं जग में इक पल भी गुजारा है
गुरुदेव मेरे तुमको.....

तेरे इन चरणों की धूली भी तो मिल जाये
भटके हुए राही को फिर मंजिल भी मिल जाये
किस्मत भी चमक जाये तो चमके सितारा है
गुरूदेव मेरे तुमको.....

भ्रम सम गुरू शक्ति को कोई पार नही पाये
दो दर्शन अब गुरूवर चरणों में लिपट जाये
ये भक्त सदा करता गुणगान तुम्हारा है
गुरुदेव मेरे तुमको......

मिट्टी में पड़कर

तर्ज–जीवन के किसी....

मुक्तक

एक सोता है भूख लिए जब एक घर में है दिवाली
एक की अमावस भी उजली; जब एक की पूनम भी काली
तुम्ही बताओ दोनों में से कौन, भिखारी कौन धनी,
एक बाहर से खाली है जब एक है भीतर से खाली

भजन

मिट्टी में पड़कर फूल गुलशन महका सकता है।
भोगों में पड़कर प्राणी, भव सागर तिर सकता है।
मिट्टी में......

बादल का बनना मिटना, सागर बिन बूँद तड़पना
घर में रहकर वैरागी, जल में कमलों सा खिलना
पल-पल में जो चिंतनधारी वह सब कुछ कर सकता है।
भोगों में...........

चेतन तो है अविनाशी, हम भूले हैं मर मर के
वैसा ही जीवन होता, जैसा हम विचार करते
वो परम साध्य दिखलाता, जो साधक बन सकता है।
भोगों में...........

गुरुवर हैं शिव सुखदायी, मंजिल की राह बताते
कोई हो शिष्य विनम्र, कर देकर ज्ञान बढ़ाते
वो गुरु सुलझाया सबको, जो स्वयं सुलझ सकता है
भोगों में..........

गर सच्चा ज्ञान भरा हो तो पल-पल कारण आए
त्यागी बन दीक्षा लेता वो पूर्व कमाके लाये
दे वही सहारा सबको जो स्वयम् सम्भल सकता है।
भोगों में..........

मुझे तजकर मेरे

मुक्तक

नज़रें तेरी बदली तो नज़ारे बदल गये
किश्ती ने बदला रुख तो किनारे बदल गये
अरे! कोई बदले या न बदले हम क्या करें?
हम गुरु की शरण पाकर हम तो बदल गए

तर्ज–मेरा जीवन..........

मुझे तजकर मेरे गुरुवर किधर चल दिये
बिन तुम्हारे आज हम किस तरह जिये
मुझे तजकर...........

हो दयालु माफ करना यदि हुई कुछ भूल-2
मन पकड़ कर चुभ रहे हैं वेदना के शूल-2
कौन से ये पाप मेरे अब उदय हुए
मुझे तजकर...........

कुछ कहा न कुछ सुना मुझसे चल दिये चुपचाप-2
कौन समझे पीर जब ये, समझे न आप-2
वीर की निज बात प्रकटी नयन बह गये
मुझे तजकर...........

हो सके तो लौट के आना, जाना नही हमें भूल-2
हो चौमासा यहाँ पर, गुरु जी करो ये कबूल-2

कौन से वे भाग्य मेरे, तब उदय होंगे
मुझे तजकर..........

मैं रहूं पग धूल बनकर बस यही चाहूँ
हो मरण उत्तम हमारा यह सदा भाऊँ
तेरे सुध की किरण पाकर तुझसे मिल गया
मुझे तजकर.........

रास्ते का पत्थर

मुक्तक

सन्त मिले नहीं, तो खोज लिये जाते हैं
श्रद्धा से चरण उनके पूज लिए जाते हैं
वन्दना करो उन तपस्वियों की
जो कलिकाल में भी दिगम्बरत्व अपनाते हैं

भजन

रास्ते का पत्थर किस्मत ने मुझे बना दिया
जो रास्ते से गुजरा, इक ठोकर लगा गया
रास्ते...............
कितने घाव सहे हैं ये मत पूछो दिल से
कितनी ठोकर खाई, ना पहुँचा फिर भी मंजिल में
कोई आगे फेंक गया तो कोई पीछे हटा गया
रास्ते...............
पहले क्या कर पाया, क्या इसके बाद करूँगा मैं
जारी जा अब दुनिया क्या तुझको याद करूँगा मैं
दो दिन तेरी महफिल में, क्या पाया, क्या गया
रास्ते.............
हीरा बनके चमका हर एक मुसाफिर कोरों का
ये उम्मीद भी टूटी लोगों ने खाया धोखा
हर एक उठाकर मुझको, फिर यहीं गिरा गया
रास्ता...........

करता रहूँ गुणगान

मुक्तक

सूरज की हर किरण रोशनी दे आपको।
फूलों की हर कली खुशबू दे आपको
ज्ञानानन्द प्रभु से यही प्रार्थना करता है।
हे गुरुवर हजारों वर्ष की उम्र दे आपको॥

भजन

करता रहूं गुणगान, मुझे दो ऐसा वरदान-2
तेरा नाम ही लेते-लेते, इस तन से निकले प्राण-2
करता रहूं........

तेरी दया से गुरुवर, मैंने आत्म पथ जाना
तूने मुझको क्या है सिखाया, यह कोई जान नहीं पाया
मेरी डोरी कभी ना टूटे-2, हो सके तो देना ध्यान-2
करता रहूं........

'मानतुंग' की भक्ति जैसी, मुझको ऐसी भक्ति दो
विचलित न होऊँ 'पथ' से प्रभु मुझको ऐसी शक्ति दो
'तेरी ही भक्ति से गुजरे-मेरे जीवन की हर शाम-2
करता रहूं.......

अन्तर्मन इच्छा पूरी करना, मुझको दर्शन दे देना
गाफिल ना हो जाऊ, क्षणिक भी, ऐसी शक्ति भर देना
तेरा नाम हो मेरे मुख पर, ओ ऽऽऽ छोड़ूं में तन से ये प्राण-2
करता रहूं......

गुरुवर आज

मुक्तक

यूँ तो जीने के लिए लोग जिया करते हैं
लाभ जीवन का नहीं फिर भी लिया करते हैं
मृत्यु से पहले भी मरते हैं हजारों लेकिन
जिन्दगी उनकी है जो मर के जिया करते हैं।

भजन

गुरुवर आज मेरी कुटिया में आए हैं
चलते फिरते हो......2 तीरथ पाये हैं गुरुवर आज.........

अत्रो अत्रो तिष्ठो तिष्ठो कह पड़ गये हैं
भूमि शुद्ध मुनि को बताये हैं
श्रावक चन्दन हो....चौकी बिछाये हैं गुरुवर आज.........

नग्न दिगम्बर गुरुवर प्यारा है
जैन धरम का एक ही सहारा है
ज्ञान के सागर ज्ञान बरसाये है गुरुवर आज.........

श्रावक जल से चरण पखारे हैं
गन्दोधक से भाग्य सवारे हैं
इन भोजन से ग्रास बनाये हैं गुरुवर आज.........

हाथ कमण्डल बगल में पीछी है
गुरूवर पर सारी दुनिया रीझी है
आहार कराके नर नारी हर्षाये हैं गुरुवर आज.........

आया कहाँ से

मुक्तक

कि मौत से डरने की मेरी आदत नहीं
जिन्दगी से भजने की मेरी आदत नहीं
सत्य के लिए तो मैं संकट सह लेता हूँ
असत्य पे झुकने की मेरी आदत नहीं है

भजन

आया कहाँ से कहाँ है जाना
ढूँढ ले ठिकाना चेतन-2

एक दिन गौरा तन ये तेरा मिट्टी में मिल जायेगा
कुटुम्ब काबिला खड़ा रहेगा कोइ बचा नही पायेगा
नहीं चलेगा कोई बहाना-2 ढूंढ ले......

बाहर सुख जो खोज रहा है बनता क्यों दिवाना रे
आतम है सुख धाम है चेतन निज को भूल न जाना रे..2
सारे सुखों का ये खजाना-2 ढूंढ ले......

जब तक तन में सांस है चलती, सब तुझको अपनायेंगे-2
जब न रहेंगे प्राण ये तन में देख तुझे घबरायेंगे-2
कहीं तो तुझको पड़ेगा जाना-2 ढूँढ ले......

दौलत के दीवाने सुन लो, कुछ भी साथ न जाएगा-2
धन दौलत और रूप खजाना यही धरा रह जाएगा-2
आया अकेला अकेला ही जाना-2 ढूँढ ले......

आत्म ध्यान लगा ले चेतन दुःख तेरा मिट जायेगा
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्र से भव सागर तर जाएगा
सच्चे सुख का है ये खजाना-2 ढूँढ ले ....

रोम रोम से

मुक्तक

मुकद्दर हो हमारे तुम, हमारे पास ही रहना
है तुमको कसम मेरी, हमारे साथ ही रहना
ये दुनिया रंग बदलेगी, जमाना जुल्म ढायेगा
मेरी धड़कन में बस रहना, हमारे साथ ही रहना

भजन

रोम रोम से निकले भगवन नाम तिहारा—2
ऐसा दो वरदान कि फिर न पाऊँ जनम दुबारा॥टेक॥
तेरे चरणों अरज हमारी, हो कल्याण हमारा
करूँ प्रार्थना भगवन तुमसे, देना हमें किनारा। रोम-रोम...

सब कुछ छोड़ा मैंने भगवन, तू ही लगता प्यारा
तू ही माता पिता हम सबका, देना हमें सहारा। रोम-रोम...

मुझको दिखता है इस जग में तू ही एक सहारा
हमको जग से तारो भगवन अजंन को जब तारा। रोम-रोम...

मेरा मुझसे मिलन करा दो देना जगत किनारा
कमलासन पर राजे भगवन अध्यात्म ही धारा। रोम-रोम...

देना अब आशीष हमें शुभ, रूप तुम्हारा प्यारा
महिमा परम तुम्हारी जग में, तूने दुख निवारा। रोम-रोम...

मुक्ति महल को चाहूँ तुमसे, अब ये लगता खारा
जनम जनम तक न भूलूंगा, ये एहसान तुम्हारा। रोम-रोम...

जब से गुरु दर्श मिला

मुक्तक

पिच्छी मोरों के पंखों की, बड़ी ही खूबसूरत है
इसे जो भी यहां पाता, त्याग तप की तो मूरत है
इसे पाना हर व्यक्ति की, किस्मत में नहीं होता
इसे जो भी पाता, वो भव से पार हो जाता।

भजन

जब से गुरू दर्श मिला मन ये मेरा खिला-खिला
मेरी तुमसे डोर जुड़ गई रे, मेरी तो पतंग उड़ गई रे

फासले मिटा दो आज सारे
हो गये गुरु जी हम तुम्हारे-2
अंग अंग में उमंग, डोल रही संग संग
मेरी तुमसे डोर जुड़ गई रे......

तुम ही हो समयसार मेरे
तुम ही नियमसार मेरे-2
मन का पंछी बोल रहा, संग मेरे डोल रहा
मेरी तुमसे डोर जुड़ गई रे.....

आज ये हवाएँ क्यों बहकती
आज ये फिजायें क्यों महकती-2
आज है ये फिर उमंग, नाच रे संग संग
मेरी तुमसे डोर जुड़ गई रे......

लुटेरे बहुत देखे

मुक्तक

छोटी सी बात का छोटा जवाब है
हम खुद खराब हैं तो जमाना खराब है
गम की दुनियाँ जो जी लिया वो लाजवाब है
काँटों की बगिया में खिलता गुलाब है

भजन

लुटेरे बहुत देखे हैं मगर तुमसे नहीं देखे
सताते चोट दे देकर मगर रोने नही देते
अजब देखी यहाँ मैंने तुम्हारे देश की रीति
कि जब आँखें यहाँ खोली पिला दी मोह की घूंटी
कोई भाई, कोई बहना-2 कोई माँ बाप बन बैठे
लुटेरे.........
कि देकर प्रेम पत्नि का जवानी ठगनी ने लूटा
सम्भलने भी ना पाया था, के ठगने आ गया बेटा
मैं कर्जेदार हूं इनका-2 ये साहूकार बन बैठे
लुटेरे.......
कि टूटी साँस की माला लुटेरे सब ये रोते हैं
ये क्यूँ रोते हैं, हम इनको भली भाँति समझते हैं
बहन कहे मेरा वीर गया, भाई कहे मेरी भुजा गयी
माँ कहे मेरी ममता रूठी, पिता कहे मेरी लाठी है टूटी
त्रिया रोय द्वार पकड़ कर
हाय कहे मेरी माँग उजड़ी
लुटेरे........

एक झोली में

मुक्तक

आप जिनके करीब होते है।
वो बड़े खुशनसीब होते हैं
जुल्म सहकर भी जो उफ नहीं करते
उनके दिल भी अजीब हैं

भजन

एक झोली में फूल भरे हैं, इक झोली में काँटे
कोई कारण होगा, हाँ अरे कोई कारण होगा
तेरे बस में कुछ भी नहीं है बाँटने वाला बाँटे रे
कोई कारण होगा, हाँ अरे कोई कारण होगा
पहले बनती है तकदीरें फिर बनते हैं शरीर
ये प्रभु की कारीगरी है, तू क्यों है गंभीर
अरे कोई कारण होगा.......
नाग भी डस ले तो मिल जाये किसी को जीवन दान
चींटी से भी मिट सकता है किसी का नाम निशान
अरे कोई कारण होगा.......
धन का बिस्तर मिल जाये तो नींद को तरसे नैन
काँटों पर सोकर भी आये किसी के मन को चैन
अरे कोई कारण होगा.......
सागर से भी बुझती नहीं है कभी किसी की प्यास
एक बून्द से हो जाती है किसी की पूरी आश
अरे कोई कारण होगा.......

आशाओं का हुआ खात्मा

मुक्तक

इस दिल से तेरी याद भुलाई नहीं जाती,
ये श्रद्धा की दौलत है लुटाई नहीं जाती,
किस दिल से कहते हो तुम्हें दिल से भुला दें
हर रोज ये दुनियाँ बसाई नहीं जाती

भजन

आशाओं का हुआ खात्मा, दिली तमन्ना धरी रही
बस परदेसी हुए रवाना, काया प्यारी पड़ी रही॥टेक॥
'करना करना' आठों प्रहर ही मूरख कूक लगाता है
मरना मरना मुझे, कभी नहीं लफज जबां पर लाता है
बस परदेसी.......

पर सब ही है मरने वाले, शान किसी की नहीं रही
एक पण्डित जी, पत्रिका लेकर, गणित हिसाब लगाते थे
समय काल तेजी मन्दी की, होनहार बतलाते थे
आया काल चले पण्डितजी, पत्री कर में धरी रही
बस परदेसी.......

एक वकील आफिस में बैठे, सोच रहे यों अपने दिल
फलां दफा पर बहस करूँगा, पाइंट मेरा बड़ा प्रबल

इधर कटा बारन्ट मौत का, कल की पेशी पड़ी रही
बस परदेशी.......

एक साहब बैठे दुकान पर, जमा खर्च खुद जोड़ रहे
इतना लेना इतना देना, बड़े गौर से खोज रहे
काल बली की लगी चोट जब, कलम कान में टंगी रही
बस परदेसी.......

इलाज करने को इक राजा का, डाक्टर जी तैयार हुए
विविध दवा औजार साथ में, मोटरकार सवार हुए।
आया वक्त उलट गई मोटर, दवा बाक्स में भरी रही
बस परदेसी.......

जैन्टिल मैन घूमने को एक, वक्त शाम को जाता था
पाँच चार थे दोस्त साथ में, बातें बड़ी बनाता था
लगी जो ठोकर गिरे बाबू जी, लगी हाथ में घड़ी रही
बस परदेसी........

हा हा कितना करूँ बयाँ, इस दुनिया की है अजब गति
भैया आना और जाना है फर्क नही है एक रति
समकित प्राप्त किया है, जिसने, बस उसकी ही खड़ी रही
बस परदेशी.......

कौन सुनेगा

मुक्तक

हे गुरुवर! रात की तन्हाई में, तुम्हें आवाज दिया करता हूँ
चाँद ओर सितारों से, तुम्हारा जिक्र किया करता हूँ
तुम आओ या ना आओ मेरे प्यारे गुरुवर...
मैं तो सपने में भी आपका इन्तजार किया करता हूँ।

भजन

कौन सुनेगा आज यहाँ पर पीर को....।
भूल चुका है आज मनुज श्री राम कृष्ण महावीर को॥
कभी वीर चन्दन बाला से, उड़द बाकले खाते थे-2
चण्ड कौफिया के विष के, बदले अमृत बरसाते थे।
आज खड़ा है भाई आगे, भाई ले शमशीर को
भूल चुका है आज मनुज.......
कभी जटायु की सेवा में, राम बलि बन जाते थे।
घायल पक्षी को गोदी में, ले आँसू टपकाते थे॥
आज मनुष्य बरसाते हैं, कटु वाणी के विष नीर को
भूल चुका है आज मनुज.......
राम कृष्ण महावीर की माला, जपने वाले सुन लेना
इनके उत्तम जीवन से, कुछ उत्तम शिक्षा भी लेना
वसुनन्दी कहे जीवन बदलो पियो प्रेम के नीर को
भूल चुका है आज मनुज.......

जग में जो कुछ देख रहे

मुक्तक

तुम ख्यालों में आते हो, तो खोज लेता हूँ
दर्द आँखों में उतर आये, तो रो लेता हूँ
याद में तुम्हारी नींद नहीं आती, हे गुरुवर
तुम सपनों में आओगे जरूर, यही सोचकर सो लेता हूँ

भजन

जग में जो कुछ देख रहे, सब जड़ चेतन का खेल है
हम तुम तब तक बोल रहे, जब तक इनका मेल है॥टेक॥

पता नहीं कब इस शरीर से, कौन द्रव्य कम हो जाये
और हमारी आशाओ पर, वज्रपात कब हो जाये
जिनके हेतु कमा रहे धन, तजकर अपने ध्येय को
वही जलायेंगे मरघट में, ले जाकर इस देह को
काल कुल्हाड़ा लिये खड़ा, बस दो श्वासों का खेल हे
हम.........

भैया मेरा के चक्कर में फँसा, हुआ संसार है।
मिथ्या भ्रम में पड़कर प्राणी, भूला सुख का द्वार है
जड़ का चेतन बना पुजारी, खोकर अपने सत्य को
पर को अपना समझ रहा है, भूला असली तत्व को
जिसने अपने को पहचाना, छूटी उसकी जेल है
हम........

चारो गति में भटका लेकिन, मिला न कहीं ठिकाना है,

मृग तृष्णा वश पर के पीछे, बना फिरा दिवाना है
विषय वासना का विष पीकर, आतम रस नहि जाना है
निजानन्द को भूला चेतन, सुख का जहाँ ठिकाना है
मिली मोख जाने को काका, यह काया की रेल है
हम.........

तू दुनिया के सारे विषय

मुक्तक

मेरा जीवन तुम्हीं को अर्पित है
मेरा तन मन तुम्हें समर्पित है
और क्या भेंट दूँ तुझे गुरुवर
मेरी हर सांस तुम्हें समर्पित है

भजन

तर्ज–कोई जब तुम्हारा

तू दुनिया के सारे विषय छोड़ दे
उसी पथ से, नेहा तू जोड़ दे
जरा सोच ले, कुछ तो अपने लिये
ये नरतन मिला है, मिला न रहेगा, सदा के लिये
तू दुनिया.............

ये दुनिया का मेला यहाँ पर तुझे
रगीं खिलौने, मिल तो जायेंगे
मगर सोच रंगी, खिलौने ही ये
कब तक तेरे, मन को बहकायेंगे
यौवन का मधुमास, जाने लगे
बुढ़ापे का पतझड़, जब आने लगे
जलेंगे न तब, साधना के दिये

ये जीवन मिला है, मिला न रहेगा, सदा के लिये
तू दुनिया.............

मुसाफिर सभी इक, डगर के यहाँ
हुइ भोर सब ही उड़ जायेंगे
मिलेगा सफर का, न साथी कोई
यों तो अपने घर में पछतायेंगे
विदा की घड़ी, जब भी आने लगे
अवसर ये व्यर्थ जाने लगे
संभलना न होगा, कुछ भी किये
तू दुनिया.........

प्रभु रथ पे हुए सवार

मुक्तक

भूलने लग जाऊँ तो आगाह कर देना
भूल को ही मेरी सुधार कर देना
आपका आशीष सदा कल्याण पथ होगा
बस जरा सा पीठ पर हाथ रख देना

भजन

प्रभु रथ पे हुए सवार नक्कारा बाज रहा
क्या ठुमक ठुमक रथ चलता है
ये छत्र शीश पर ढुलता है
क्या छाई अजब बहार
नक्कारा......

कैसी छवि से, नाथ विराज रहे
नाशा दृष्टि से साज रहे
सब बोलो जय जयकार
नक्कारा.......

ढोलक और बाजे, नक्कारा है
बाजे का स्वर अति प्यारा है
तबले का ठुमका न्यारा है
झांझर की हो झंकार
नक्कारा.......

कहे किशन जा रज बाला है
तेरे नाम पर वो मतवाला है
सब पियो धर्म का प्याला है
हो भवसागर से पार
नक्कारा........

मन की तरंगे मार लो

मुक्तक

तुम्हारी मेहरबानी से मंजिल पा रहा हूँ
भटकनों को छोड़ कर अपने में आ रहा हूँ
तुम्हारे उपकारों को कैसे भूल सकता हूँ
आपके आशीर्वाद से सब कुछ पा रहा हूँ

भजन

मन की तरंगे मार लो, बस हो गया भजन
आदत बुरी सुधार लो, बस हो गया भजन
रहता है झोंपड़ी में, महलों की चाह है
यह चाह ही तेरे लिये, कांटों की राह है
इस चाह को तू मार ले, बस हो गया भजन
आदत.........
ये तेरा है ये मेरा है, ये भाव है बुरा
जा सबको अपना मान ले, मानुष बने खरा
मन की कषाय मार लो, बस हो गया भजन
आदत........
पर में तू खोजना नहीं, निज धर्म को सदा
ह्रदय जो तेरे पास है, तुझसे नहीं जुदा
अपने को आप जान ले, बस हो गया भजन
आदत.......

बिन भजन के जगत में

मुक्तक

जिन्दगी दी है तो जीने का हुनर देना
पैर बख्शें हैं तो चलने को सफर भी देना
मैं तो गूंगा था बोलना आपने सिखाया है
अब मैं बोलूँगा तो वाणी में असर भी देना

तर्ज–मेरे पाँव में मेहंदी

बिन भजन के जगत में तू प्राणी
मोक्ष जाने के काबिल नहीं है
क्या क्या वायदे प्रभु से किये थे
भूल कर भी न, नाम लिया है
भूल बैठे हो, माया में प्रभु को
जो भूलाने के काबिल नहीं है बिन.........

तूने कीनी न नेक कमाई
तेरी जग में क्या होगी भलाई
क्या इसी मुँह को लेकर तू जायेगा
जो दिखाने के काबिल नहीं है बिन.........

तुझे पारस प्रभु जी बुलाये
पास आ मेरे हिम्मत न हारे
कैसा सुन्दर ये नर तन मिला है
जो गंवाने के काबिल नहीं है बिन........

जिन्दगी के ये स्वर्णिम

मुक्तक

कभी फूलों में कभी काँटों में जिन्दगी खिला करती है
गुरुवर की वाणी में मिश्री सी घुला करती है
इनके चरणों में रख दो अपना माथा
इन चरणों की धूल बड़ी मुश्किल से मिला करती है।

तर्ज–जिस गली में

जिन्दगी के ये स्वर्णिम, क्षण कह रहे
साधना का मुहूरत, निकल जायेगा
खूब भटका फिरा है, तू संसार में
तेरा स्वर्णिम सुअवसर निकल जायेगा
साधना.........

चाह की प्यास में कंठ सूखा रहा
कितने मधुमासा पाकर, तू प्यासा रहा
वासना की लहर का, सहारा लिये
बस थपेड़ों की उलझन बढ़ाता रहा
तेरे टूटे हुए, आज प्राण कह रहे
साधना.........

एक नई भोर का फिर, उदय है हुआ
एक अध्याय का फिर से आरम्भ है
फिर से इतिहास, है ये गुजरा हुआ

जिसका दुख से बिलखता हुआ अंत है
मृत्यु की ओर बढ़ते, कदम कह रहे
साधना..........

ज्ञान की राह में, साथ सम्यक्त्व के
आत्मा से विमुख झांकता जग फिरे
आत्मा छवि को ज्यों अपनी निहारे कभी
ज्ञानमय गुरु के पावन वचन कह रहे
साधना........

चिन्ता-चिन्ता में निकल गई

मुक्तक

तुम्हें देखा तो जीवन रास आया मुझको
तुम्हें अपना बनाने का ख्वाब आया मुझको
रह न पाऊँगा इस खुदगर्ज दुनियाँ में
तुम्हीं हो जिसे देखकर आत्मा का ख्याल आया मुझे।

तर्ज–रोते रोते ही निकल

चिन्ता चिन्ता में निकल गई, सारी जिन्दगी
ममता ममता में निकल गई, सारी जिन्दगी॥टेक॥

बचपन खेल-कूद में बीता, यौवन पा बौराया
देख बुढ़ापा लाठी टेकी, सूझ बूझ नहीं पाया
निद्रा-निद्रा में निकल गई, सारी जिन्दगी चिन्ता.......

कोट बूट पतलून पहनकर, तन को खूब सजाया
इतने पर भी दिल नहीं माना, सिर पर टोप लगाया
तृष्णा-तृष्णा में निकल गई, सारी जिन्दगी चिन्ता......

चीनी जर्मनी इंग्लैंड की, खूब हवा में खाया
होटल की भी चाय मंगाकर, मौज से खूब उड़ाया
भिक्षा भिक्षा में निकल गई, सारी जिन्दगी चिन्ता.....

मकड़ी का सा जाल बिछाकर, यह जंजाल बढ़ाया
पुत्र कलत्र स्वजन बंधु में, खूब ही प्रीति लगाया
फन्दा फन्दा में निकल गई, सारी जिंदगी चिन्ता......

धर्म कर्म आचार उठाकर, विषय देख ललचाया
खाकर भक्ष्या भक्ष्य गटागट, मिथ्यातम है छाया
फन्दा फन्दा में निकल गई, सारी जिन्दगी चिन्ता.....

अतः बंधुओं मुक्ति पथ में, लगकर तज दो माया
प्रभु भक्ति कर शुभवाणी से, ले लो, प्रभु की छाया
घंटा घंटा में निकल गई सारी जिन्दगी चिन्ता......

वो पुण्य कहाँ से लाऊँ

मुक्तक

विश्वास परिचय को पहचान बना देता है
गीत वीरान को गुलस्तान बना देता
मैं आप बीती कहता हूँ यारों
दर्द आदमी को इंसान बना देता है

तर्ज–वो दिल कहाँ से लाऊँ

वो पुण्य कहाँ से लाऊँ, जो पाप को मिटा दे
ओ मुक्ति को जाने वाले, कोई रास्ता दिखा दे॥टेक॥
मैंने मोह राग करके, तन को सदा सजाया
फिर देखा इसने मुझको, कितना सदा रुलाया
माना खता है मेरी, ऐसी तो न सजा दे
ओ मुक्ति.......
मैंने मन से तुमको पूजा, दिल में सदा बसाया
अपना समझ के तुमको, दिल से सदा लगाया
माना कि पापी हूँ, मैं ऐसी तो न सजा दे
ओ मुक्ति.......
रहने दे मुझको अपनी, चरणों की धूल बनके
आयेगा वक्त वो भी, महकूँगा, फूल बनके
माना खता है मेरी, ऐसी तो न सजा दे
ओ मुक्ति.......

करी तपस्या मनमानी

मुक्तक

गमों को ऐसे पियो कि पानी हो जाये
दर्द की मुझपे महरबानी हो जाये
मरो तो ऐसे मरो कि मौत भी रोये
जियो तो ऐसे जियो कि कहानी हो जाये

भजन

करी तपस्या मनमानी, ये भैया बाहुबलि स्वामी
एक बरस लो, करी तपस्या-2
तो हू न भये, केवल ज्ञानी
ऐ भैया.......
हाथ पैर पर बेलें चढ़ गई, तो हूँ न भये अंतरयामी
ऐ भैया.......
सर्पों ने तो वामी कर लई, तो हूँ न भये अंतरयामी
ऐ भैया.......
भरत के राज्य में करी तपस्या, शल्य लगी है दुखदानी
ऐ भैया......
भरत राज ने शीश नवायो, झट हो गये केवल ज्ञानी
ऐ भैया.....
अष्टापद से मोक्ष गये हैं, जाये बसे शिवपुरथानी
ऐ भैया.....

नाथ दर्शन तुम्हारे

मुक्तक

चांदी सा उजाला दिल काली रात हो जाता है
फूल सा कोमल दिल इस्पात हो जाता है
बस पूछो मत जब बुरे दिन आते हैं आदमी के
सांस का पवन भी झंझावात हो जाता है

भजन

नाथ दर्शन तुम्हारे, जो कर जायेंगे।
उनके सारे अशुभ कर्म, टल जायेंगे॥टेक॥

तेरे चरणों से जिसने लगाई लगन
पार भव से किया नाथ, आनन्द घन
सर्व सम्पत्ति से घर उनके, भर जायेंगे
उनके सारे अशुभ कर्म, टल जायेंगे
नाथ दर्शन...

प्रेम से पूजते जो, तुम्हारे चरण
उनकी बाधा हरो, आप तारण तरण
दिन मुसीबत के सर्वस्य, टल जायेंगे
उनके सारे अशुभ कर्म टल जायेंगे
नाथ दर्शन...

तेरे दर्शन से होती है, शुद्धात्मा
घोर पापी भी बन जायें, परमात्मा
भव सिंधु से शीघ्र ही तर जायेंगे
उसके सारे अशुभ कर्म, टल जायेंगे
नाथ दर्शन...

दुनिया में हजारो

मुक्तक

हार मिली है तो कभी जीत भी मिलेगी
पतझड़ है तो कभी बहार भी आयेगी
आशाओं के दीपक न बुझने देना
गम मिले हैं तो कभी खुशियाँ भी मिलेगी

भजन

दुनिया में हजारों का मेला जुड़ा
हंस जब जब उड़ा, तब अकेला उड़ा
आज राजा रहे, ना वो रानी रही,
कहने सुनने को केवल कहानी रही
न बुढ़ापा रहा, न जवानी रही,
वस्तु हर एक है, आनी जानी रही
हंस जब......

ठाठ सारे के सारे पड़े रह गये
सब नगीने जड़े के जड़े रह गये
कुल खजाने गड़े के गड़े रह गये
अंत में लखपति का अधेला जुड़ा।
हंस जब......

बेबसों को सताने से, क्या फायदा
दिल किसी का दुखाने से, क्या फायदा
जग में अपयश कमाने से, क्या फायदा
सर पे ठोकर लगाने से, क्या फायदा
सब हैं इंसाँ बराबर, न छोटा न बड़ा
हंस जब......

खुशियों की बेला

मुक्तक

जब तक चमन में फूल यहाँ खिलते रहेंगे
हम तुमसे हमेशा यहाँ मिलते रहेंगे
रहा गुलशन तो यहाँ गुल खिलते रहेंगे।
और रही जिन्दगी तो फिर मिलते रहेंगे

भजन

खुशियों की बेला आई रे, प्रभु जनम भयो है
घर-घर बाजत बधाई रे, प्रभु जनम भयो है
सुरगण आज धरती पर आये, इन्द्राणी तुम्हें गोद उठाये
उगम उगम हर्षाये रे प्रभु........
सहस्त्र नेत्र हरिनाथ बिलोके, जय जय बोले और हरषाये
देखत नाहि अघाये रे प्रभु........
ऐरावत पर प्रभु बैठाये, पांडुक वन के ऊपर लाये
भर-भर कलश बरसाये रे प्रभु.......
फिर माता को सौपे आके, सुरपति नृत्य करे हर्षा के
छम छम ताल सुहाये रे प्रभु.......
आरति करत नाचत इन्द्राणी, उत्सव लख हर्षित सब प्राणी
तन मन सुध बिसराई रे प्रभु.......
प्रभु रूप महासुखकारी, बलि बलि जावें आज पुजारी
महिमा प्रभु की गाई रे प्रभु..........

देख तमाशा लकड़ी का

मुक्तक

हमें भूलने की आदत नहीं है
तुम्हें याद की आदत नहीं है
ये आदत तुम्हारी तुम्हीं को मुबारक
हमें तो तुमसे कोई शिकायत नहीं है

भजन

जीते लकड़ी मरते लकड़ी,
देख तमाशा लकड़ी का
दुनिया वालो तुम्हें बताऊँ
सारा जग है लकड़ी का
जिस दिन तेरा जन्म हुआ था
पलंग बिछा था लकड़ी का
तुझे झुलाने को मगंवाया
वह था पालना लकड़ी का
जीते लकड़ी...
बड़ा हुआ तो खेलने चला
वो था खिलौना लकड़ी का
जिसे पकड़कर चलने लगा
वो था पांगुड़ा लकड़ी का
जीते लकड़ी...

बड़ा हुआ था पढ़ने चला
पट्टी ओर कलम था लकड़ी का

तुझे पढ़ाने को शिक्षक ने
डर दिखलाया लकड़ी का
जीते लकड़ी...

पढ़ लिखकर ब्याहने चाला
वो रेल का डिब्बा लकड़ी का
सासुजी के दरवाजे पर,
तोरन टागाँ था लकड़ी का
जीते लकड़ी...

जिस पाटे पर खड़ा हुआ
वो पाटा बिछा था लकड़ी का
ब्याह करके जब घर को चाला
दाव भूल गया छकड़ी का
जीते लकड़ी...

फिकर हुआ था केवल तुझको
नौन तेल और लकड़ी का
वृद्ध हुआ था तब चलने लागा
पकड़ सहारा लकड़ी का
जीते लकड़ी...

खत्म हुए दुनिया के धंधे
टूटा जाला मकड़ी का
मर करके जब मरघट चाला
वो अर्थी बना था लकड़ी का
धू धूकर जल चिता उठी
वो चबूतरा बना था लकड़ी का
जीते लकड़ी...

पतिव्रता एक नार अंजना

मुक्तक

कल का दिन किसने देखा है
आज के दिन को खोयें क्यों
जिन घड़ियों में हंस सकते हैं
उन घड़ियों में रोयें क्यों।

भजन

पतिव्रता एक नार अंजना, राजा महेन्द्र की लड़की
अशुभ कर्म पूरब ले आये, दासी संग वन-वन फिरती
मान सरोवर तट के ऊपर, सिंह जड़ी के हुए पती
चकवा चकवी वियोगिन देखे, तब त्रिया की सूरत धरी। पतिव्रता...

जभी पवन जी ने आधी रात को, राह लई अपने घर की
गुप्त त्रिया से जाय महल में, बात कही है तन मन की
हाथ जोड़कर कहे अंजना, सुनो नाथ मेरे प्राण पति
कुछ निशानी मुझको दीजो, सासु पूछे केतुमती। पतिव्रता...

कड़ा मुद्रिका दिया निशानी, राह लई है कटघर की
गर्भवती जब देखी अंजना, सासु पूछे केतुमति
आधी रात को विमान बैठकर आये मेरे प्राणपति
मेरी दासी से पूछो वह तुमसे कह दे सच्ची
जा दिन से वरमाला डाली वा दिन छूटा तेरा पति। पतिव्रता...

अब तुझे कैसे गर्भ रहा है पुत्र बुलाये लंकापति
हाथ जोड़कर कहे अंजना, सुनो सासु मेरी केतुमति
कड़ा मुद्रिका दिया निशानी, चले गये मेरे प्राणपति
तू झूठी तेरी दासी झूठी, वह दूती तेरी पक्की। पतिव्रता...

मुहँ को कलंक लगाया पापिन, जामे फर्क न एक रती
दोनों को दिया देश निकाला, दासी संग वन वन फिरती
मातपिता घर गई अंजना, वहाँ पर देखी गर्भवती
बिन आदर वो घर से निकली, दासी संग वन-वन फिरती। पतिव्रता...

निराश होकर गई वनों में, वहाँ पर देखे मुनि यति
वन्दन कर पूछे, कैसे छूटे मेरे प्राणपति
कहें मुनिश्वर सुनो अंजना, धर्म ध्यान रखो मन में
चर्म शरीरी पुत्र होयेगा, पति मिलें थोड़े दिन में। पतिव्रता...

दे उपदेश मुनिश्वर चाले-पुत्र होय तेरे वन में
सुन्दर मूरत जब देखी पुत्र की, तेज जैसे सूरज में
अंजना का इक मामा था, आ निकला इन ही वन में
सती अंजना पुत्र सहित, चली जभी मामा संग में। पतिव्रता...

खेलत बालक विमान में से आन गिरा है पर्वत पे
खंड-खंड हो गये शिला के, अचरज माना है मन में
खेलत बालक मामा देखा, खुशी हुआ अपने मन में
मामा ने तब प्यार करके, उठा लिया है गोदिन में
चेतनलाल यह देख तमाशा, खुशी हुआ अपने मन में
चिरंजीवो यह बालक तेरा, आनन्द हो रहा अपने में । पतिव्रता...

महावीर तुम्हारे चरणों में

मुक्तक

किसी की आस में जीने में क्या रखा है
किसी को दर्द दिल सुनाने में क्या रखा है
आदत से पड़ गई है उदास रहने की
वर्ना उदास रहने में क्या रखा है

तर्ज–दिल लूटने वाले

महावीर तुम्हारे चरणों में मेरा भी गुजारा हो जाये
दर्शन की प्यासी अंखियों को दीदार तुम्हारा हो जाये॥टेक॥

हम दास तुम्हारे है भगवन बस आस यही हम करते है
तेरा प्रेम परम पदपाने का अधिकार हमारा हो जाये
महावीर............

हर वक्त मुसीबत में अपने दासों की सहायता करते हो
मझधार में नैया स्वामी जी पतवार सहारा हो जाये
महावीर..........

अब तक तो निभाते आये हो कुछ थोड़ी और निभा देना
मन भर जाये इतना ही अगर हमको तो किनारा मिल जाये
महावीर..........

"सेवक" को इतनी आस प्रभू दासों का दास बना लेना
है डोर तुम्हारे हाथों में आधार तुम्हारा हो जाये
महावीर तुम्हारे चरणों में मेरा भी गुजारा हो जाये

खुशी के फूल बरसाओ

मुक्तक

बुझ जाये शमां तो जल सकती है
कश्ती हरेक तूफां से निकल सकती है
मायूस न हो इरादे न बदलो
तकदीर तो किसी भी समय बदल सकती है।

तर्ज--बहारो फूल बरसाओ

खुशी से फूल बरसाओ, जन्म जिनराज पाया है
खुशी से रागिनी गाओ, जन्म जिनराज पाया है॥टेक॥

सलोनी साँवली सूरत है देखो मेरे स्वामी की
रीझ कर देवता आये, साथ में इन्द्राणी भी
खुशी से रत्न बरसाओ, सभी ने दर्श पाया है
न्हवन इनका कराया है
जन्म जिनराज.........

झुलता है जो इस जग को, झूलता आज बाहों में
है नन्हा रूप लेकिन देखता चारों दिशाओं में
सिमट कर गोद में बैठे, प्रभु की कैसी माया है
अनोखी प्यारी माया है
जन्म जिनराज.......

है संकट में प्रभु धरती, जहाँ पर आप खेले थे
भयानक युद्ध का गर्जन, जहाँ रंगीन मेले थे
कहे सब भक्त बस हमको, तो हमने तू ही पाया है
सभी पर तेरा साया है
जन्म जिनराज.......

जिनवर बोलो

मुक्तक

इन चिरागों को आंखों में महफूज रखना
बड़ी दूर तक रात ही रात होगी
मुसाफिर हम भी मुसाफिर तुम भी
फिर किसी मोड़ पर मुलाकात होगी

तर्ज–नागिन

जिनवर बोलो, अमृत घोलो, जीवन मम शरण तुम्हारा रे
और नहीं है उपकारी॥टेक॥
भटक चुका हूँ, चारों गति में

हितकारी नहीं पाया
और शरण नहिं मिली जगत में
शरण आपकी आया, प्रभूजी शरण आपकी आया
जिनवर बोलो, अमृत.....

चाह नहीं वैभव की कुछ
एक भावना मेरी
निज के गुण निज में पा जाएं
लगे नहीं अब देरी, प्रभू जी लगे नहीं अब देरी
जिमवर बोलो, अमृत........

तन धन परिजन अपने माने
हमने प्रभूजी शान्ति न पाई
मनोभावना सफल हुई नहिं
भव की बेल बढ़ाई, प्रभूजी भव की बेल बढ़ाई
जिनवर बोलो, अमृत.........

प्रभे फरियाद

मुक्तक

हजारों फूल कम हैं, एक दुल्हन को सजाने के लिए
एक फूल काफी है, एक अर्थी सजाने के लिए
हजार सुख कम हैं, एक गम भुलाने के लिए
एक गम काफी है, जिंदगी भर रुलाने को

तर्ज–जुल्फ से

प्रभो फरियाद मम सुन लो, गहा तेरा सहारा है
जहाँ में स्वार्थ की प्रीति, नहीं कोई हमारा है॥टेक॥
विचारा नारि सुख देगी
करी शादी की तैयारी
फसाया मोह ममता में
बन गई राग की आरी
सखा सुत स्वार्थ कर पूरा, किया सबने किनारा है
प्रभो फरियाद मम सुन लो, गहा तेरा सहारा है
भूलकर आत्म वैभव को
रत्न जड़ निधि निजी मानी
जन्म मृत्यु लखे अपने
अमर आतम न पहचानी
भूल निज सोधकर भैया, लिया निज गुण सहारा है
प्रभो फरियाद मम सुन लो गहा तेरा सहारा है

नहीं भव भोग की इच्छा
करें अनूभूति नित निज की
धर्म स्याद्वाद अपना कर
भावना मुक्ति के पथ की
बने शाश्वत सुखी भगवान, लिया निज का सहरा है
प्रभो फरियाद मम सुन लो, गहा तेरा सहारा है

भरत जी घर की में बैरागी

मुक्तक

दर्द में रह गुजर के चमक छोड़ जाऊँगा
पहचान अपनी दूर तलक छोड़ जाऊँगा
खामोशियों की मौत गवारां नहीं मुझे
शीशा हूँ टूटकर भी खनक छोड़ जाऊंगां

भजन

वे तो अन धन सबके त्यागी
भरत जी घर ही में वैरागी

कोड़ अठारह तुरंग हैं जाके, कोड़ चौरासी हाथी
लाख चौरासी गजरथ सोहैं, तो भी भए नहीं रागी। भरतजी...

तीन कोड तो हलधर सोहैं, एक कोड हल साजे
नव निधि रतन चौदह घर जाके, मन वांछा सब भागी। भरतजी...

चार कोड मण नाज उठे नित, लोण लाख दश लागे
कोड थाल कंचन मणि सोहैं, नहिं भया कोई रागी। भरतजी...

ज्यों जल बीच कमल अंतःपुर, नाहि भये वे रागी
भविजन होय सोई उर धारो, सोई पुरुष बड़भागी। भरतजी...

श्री आदिनाथ स्तुति

मुक्तक

इस देश के मन्दिर में कहां दरार नहीं हैं
सही सलामत एक भी दीवार नहीं है
ये मत पूछो किसने लूटा है इस गुलशन को
यह पूछो कि इस लूट में कौन हिस्सेदार नहीं है

विनती

जय जय श्री आदि जिन, तुम हो तारन तरन
भवि जन प्यारे, इन्द्र धरणेन्द्र स्तुतिधर तुम्हारे।

प्रभु तुम सर्वार्थसिद्धि से आये, माता मरूदेवी के सुत कहाये
नाभि नृप के नन्दन, तुमको शत शत वन्दन, हों हमारे।
इन्द्र धरणेन्द्र...

कर्मयुग के प्रथम तुम विधाता, लोक-हित मार्ग के आदि ज्ञाता
अंक अक्षर, कला, तुम से प्रगटे प्रभु-शिल्प सारे।
इन्द्र धरणेन्द्र...

देख नीलांजना के निधन को, राज छोड़ गये देव वन को
योग साधा कठिन, कर्म बन्धन गहन, तोड़ डारे
इन्द्र धरणेन्द्र...

सिद्ध परमात्म पद पा गये तुम, शम्भु, ब्रह्मा जिनेश्वर हुए तुम
सिर नवाते हुए,गुण गण गाते हुए, गणधर हारे
इन्द्र धरणेन्द्र...

नाथ अपनी चरण भक्ति दीजै, आत्मगुण सिन्धु मे मग्न कीजै
छीजै आवागमन, शिवपुर में हो गमन, कर्म झारे
इन्द्र धरणेन्द्र...

जगे हैं पुण्य भव्यों के

मुक्तक

आकृति से हर आदमी, इन्सान नहीं होता
पूजा का हर पत्थर भगवान नहीं होता
सर्वस्व लुटा दो अपना, जीवन दूसरों पर
लेकिन अपनों पर किया, कोई अहसान नहीं होता

भजन

जगे हैं पुण्य भव्यों के, दिगम्बर देव आये हैं
जगत में मोक्ष का साकार, शुभ संदेश लाये हैं॥टेक॥

उठो भव्यो चलो पुण्यात्मवानो, भक्ति भावें हम
रहे चिरकाल से सोये समय सुख को जगायें हम
मिले उपयोग के शुभ क्षण, खिले हैं पुष्प नन्दन के
चरण स्पर्श कर लोहा, लहेगा रूप कुंदन के
कमल रचना कुशल पावन चरण गुरु ने बढ़ाये हैं। जगे हैं...

स्वयं कचलोंच करते हैं, अचेलक रूप के धारी
महाव्रत पंच पालक हैं, जगत के परम उपकारी
कमल निर्लेप रहते हैं, निरन्तर आत्मचिन्तन में
कुबेरों का विभव अर्पित, हुआ है शिव अकिंचन से
स्वहित मन्दिर शिखर पर, मणि कलश मानो उठाये हैं। जगे हैं...

हृदय गृह में त्रिरत्नों के, अकम्पित दीप जलते हैं
समितियाँ साथ रहती हैं, जहाँ मुनिराज चलते हैं
कमंडलु पिच्छि शोभित हैं, उपकरण शौचसंयम के
प्रदाता ज्ञान के सम्यक, निवारक हैं अखिल भ्रम के
परम चिन्मय अभीक्षण-विद्यानन्द में नहाये हैं। जगे हैं...

चरण वाहन धरा शैय्या नियत आहार अंजलि में
जहाँ विश्राम वह ही देश, समता भवन तरुतल में
निरंतर निर्जरा से नष्ट करते, कर्म कल्मष को
अविद्या से पृथक् हो पालते, विद्यानन्द के व्रत को
वचन पीयूष पर तिरते हुए, ज्यों हंस आये हैं। जगे हैं...

नमो गुरूवर, नमो मुनिवर, नमो निर्ग्रन्थ तपधारी
नमो भव्यात्मपद्मों के विकासित सूर्य तनुधारी
लिये श्रद्धासुमन मन में, त्रियोगी भक्ति पाने को
उपस्थित हैं चरण में हम शुभाशीर्वाद पाने को
सकल मंगल अमरतरू सी वरद गुरु की भुजाएँ हैं। जगे हैं...

दुःख भी मानव की सम्पत्ति है

मुक्तक

किसी के बहते आंसुओं को सुखाने दो मुझे
किसी के घाव में मरहम लगाने दो मुझे
जलाये होगे बहुत से चिराग तुमने मगर
एक बुझती हुई शमां को जलाने दो

भजन

दुख भी मानव की संपत्ति है, तू क्यों दुःख से घबराता है
दुख आया है तो जायेगा, सुख आया है तो जायेगा
दुख जायेगा तो सुख देकर, सुख जायेगा तो दुख देकर
सुख देकर जाने वाले से रे मानव! क्यों भय खाता है
दुःख भी......

सुख में हैं व्यसन प्रमाद भरे, दुख में पुरुषार्थ चमकता है
दुख की ज्वाला में पड़कर ही, कुन्दन सा तेज दमकता है
सुख में सब भूले रहते हैं, दुख सब की याद दिलाता है
दुःख भी......

सुख संध्या का वह लाल क्षितिज, जिसके पश्चत् अँधेरा है
दुख प्रातः का झुटपुटा समय, जिसके पश्चात सवेरा है।

दुख का अभ्यासी मानव ही, सुख पर अधिकार जमाता है
दुःख भी.......

दुःख के सम्मुख जो सिहर उठे, उनको इतिहास न जान सका
जो दुःख में कर्मठ, धीर रहे, उनको ही जग पहचान सका
दुख एक कसौटी है जिस पर, मानव ही परखा जाता है
दुःख भी.......

भेष दिगम्बर धार तू खुशहाली का

मुक्तक

कोई शिकवा नहीं किसी से
ना ही तकदीर से कोई गिला है
इस जहां में गुरुवर का प्यार व दुलार
बहुत कम लोगों को मिलता है

भजन

भेष दिगम्बर धार तू खुशहाली का
मजा कहा नहीं जाए इस कंगाली का

बच्चा हो या बच्ची उसे निंदिया आए अच्छी
पास न होवे लँगोटी, उसे चिन्ता हो फिर किसकी?
न भय रखवाली का
छोड़े जो परिवारा, नहीं हो ममता, उसे धन की
तजे परिग्रह सारा, फिर चाह मिटे सब मन की
न भय रखवाली का
धन्य दिगम्बर साधु, जो नग्न अवस्था रहते
खड़े-खड़े इक वारा, अँजुलि में भोजन करते
काम क्या थाली का
तज के सारी दुविधा, जो निज आतम को ध्यावें
धन्य जन्म है उनका, जो शिव आनंद को पावें
मुक्त पुर वाली का

दिल न दुखाना

मुक्तक

दर्दे दिल किस तरह आया होगा
गम छुपाना तो हमारी आदत है
आप लोग कुछ और न समझ बैठना
मुस्कराना तो हमारी आदत है

भजन

माता पिता का दिल न दुखाना, बड़ा भले ही बन जाना
उनका भारी कर्ज भुलाकर, पड़े न पीछे पछताना
पहली साँस भरी जब तूने, वे ही तेरे पास रहे
उनकी अंतिम साँस निकलते, तू भी उनके साथ रहे
पहले पन्द्रह वर्षों तक तो, भार उठाया सब तेरा
उनके अंतिम वर्षों में तू, अधम अगर जो मुँह फेरा
माता-पिता का........
माता पिता की छाँव गँवाकर, बालक सूना हो जाता
उसकी पीड़ा वही समझता, जिसके नहीं पिता माता
एक अनाथ अभागा बालक, बचपन का सुख क्या जाने?
किसको बोले माँ बेचारा? किसे पिता अपना माने?
माता-पिता का.......
बंगला गाड़ी बीबी बच्चे नहीं कठिन इनको पाना
माता पिता फिर मिलना मुश्किल, कभी नहीं धोखा खाना
तुझको जिनने अपना माना, तू भी उनको अपनाना

किसी नये रिश्ते के कारण, यह रिश्ता मत ठुकराना
माता-पिता का......
अपने मुँह का कौर त्यागकर जिनने तुझको है पाला
सुधा पिलाने वाले उनको देना मत विष का प्याला
तुझको पाकर खुशियाँ बाँटी, उनका घर मत बटँवाना
जिनने गले लगाया उनके गले न फंदा बन जाना
माता-पिता का.........
याद जरा कर हाथ पकड़कर तुझे पढ़ाने ले जाना
विद्यालय में भरती करके, तुझको शिक्षा दिलवाना
सपने में भी कभी न तुझको अनाथ आश्रम दिखलाना
तू भी ऐसे माता-पिता को वृद्धाश्रम न भिजवाना
माता-पिता का.........
तेरे जन्म दिवस आने पर, भारी उत्सव रचवाना
त्यौहारों में सुन्दर-सुन्दर, कपड़े तुझको पहनाना
फिर मनमाना खर्च उठाकर, तेरे मन को बहलाना
ऐसे माता-पिता को तुझसे, पड़े नहीं धोका खाना
माता-पिता का......
तेरी खातिर दिये जलाये उनका जिया जलाना ना
आस लगाकर तुझको पाया तू भी उन्हें गँवाना ना
फूल बिछाने वालों को पथ काँटे कभी बिछाना ना
हाथ थामने वालों को तू धक्का कभी लगाना ना
माता-पिता का.....
तेरी तड़पन में जो तड़पे उनको तू मत तड़पाना
दिया कष्ट में तुझे सहारा उनपे जुल्म न तू ढाना
बर्तन बेच पढ़ाया जिनने उनसे तू मत इतराना
भले विदेशों में जाकर तू बड़ा आदमी कहलाना

माता-पिता का......

मुँह मीठा करने वालों पर तू कड़वाहट मत लाना
तेरे माता पिता बनकर के उनको पड़े न पछताना
उनकी आँखें भर आती जब प्यारी बेटी घर छोड़े
और हृदय भर आता जब प्यारा बेटा मुँह मोड़े
माता-पिता का.....

दीन दुखी की सेवा करना मंदिर मस्जिद बनवाना
गोशाला को चंदा देना पंछी को देना दाना
सारा कोरा आडंबर है कलियुग का ताना बाना
तेरे कारण माता-पिता को अगर पड़े रोना गाना
माता-पिता का.....

जीते जी तो शोक कराना शोक सभा फिर करवाना
कर प्रहार उनके सपनों पर हार चित्र को पहनाना
फिर उनकी यादों में कोई, मोटी पुस्तक छपवाना
बेटे के नाते पर होगा, तेरा कालिख पुतवाना
माता-पिता का.....

माता पिता की सेवा करके तू बच्चों का दिखलाना
वे भी तेरा ध्यान रखेंगे नहीं पड़ेगा सिखलाना
पूरब की यह रीत निभा ले वरना होगा पछताना
जैसा बीज उगायेगा तू वैसा फल तुझको पाना
माता-पिता का.....

दोहा

जाति लाभ कुल रूप तप, बल विद्या अधिकार
इनका गर्व न कीजिये ये मद अष्ट प्रकार

दुष्ट पैसा

मुक्तक

तू यहाँ मुसाफिर है, ये सराय फानी है
चार रोज की महिमा तेरी जिन्दगानी है
जंग, जमीन जर जेवर कुछ ना साथ जायेगा
खाली हाथ आया है खाली हाथ जायेगा

ठन ठनाठन ठन पे सारी दुनिया डोले रे
तू क्या बोले? बाबू! तेरा पैस बोले रे!॥टेक॥
पैसे से ईमान खरीदा, पैसे से भगवान
पैसे के कारण ही प्यारे! कहलाता इन्सान
बिना रुपैया कोई न पूछे मीठा बोले रे
तू क्या बोले? बाबू.........

पैसे के ही कारण प्यारे! चलता सबका चारा
बिन पैसे के भूखा मरता है गरीब बेचारा
बिना रुपया कोई न पूछे मीठा बोले रे
तू क्या बोले? बाबू.........

पैसे से ही कारण भाई बन्धु हैं सारे
पैसे के झगड़े के कारण सब न्यारे न्यारे
बिना रुपैया बाप न बोले न्यारा हो ले रे
तू क्या बोले? बाबू.........
पैसे से ही मास्टर पूछे, पैसे से ही डॉक्टर

बिना पैसे के रोगी बाहर मरता है सड़कों पर
बिना रुपये वकील बाबू आँख न खोले रे
तू क्या बोले? बाबू.........

पैसे को कहती है दुनिया परमेश्वर है प्यारा
पैसे के नीचे दब जाता अत्याचार हमारा
नोट के आगे नेताजी का सर भी डोले रे
तू क्या बोले? बाबू.........

तलाश प्रभु की

मुक्तक

आज तक यह देखा है, पाने वाला खोता है
जिन्दगी को जो समझा, जिन्दगी पर रोता है
मिटने वाली दुनियाँ का, ऐतबार करता है
क्या समझ के तू आखिर इससे प्यार करता है

भजन

मैं हूँ छोटा मुसाफिर, ये लम्बा सफर
दुनिया के खेल में, खो गई ये उमर
नयनों के दीप की रोशनी बुझ गई
मेरा सब खो गया तुम मिले ही नहीं।

मेरे जीवन का अन्तिम, मुकाम आ गया
जिन्दगी मौत का, पैगाम आ गया
छोड़ कर अब चला, सबसे लेली विदा
सब गले मिल गये, तुम मिले ही नहीं।

ये अकेला चला मुक्ति की राह में
देह फिर मिल गई, इक नई राह में
उसके मिलने से, गम फिर हजारों मिले
दर्द फिर मिल गया, तुम मिले ही नहीं।

मैं बिखरता रहा, रूप बनता रहा
दर व दर पागलों सा भटकता रहा
मेरी पर्यायें खुद अब सजा बन गईं
हर सजा तो मिली, तुम मिले ही नहीं।

धर्म पर डट जाना

मुक्तक

मौत ने जमाने को शमां दिखा डाला।
कैसे-कैसे रुस्तम को खाक में मिला डाला
याद रख सिकंदर के होसले तो आली थे
जब गया था दुनियां से दोनों हाथ खाली थे

भजन

धर्म पर डट जाना कोइ बड़ी बात नहीं है॥टेक॥
धर्म की खातिर निकलंक देव, धर्म पर प्राण तजे स्वमेव,
छोडी न धर्म की टेक, कटे सिर कट जाना॥1॥कोई...
अरे सुकुमार कुमर को देखो, छोड़ सुख धारा दिगम्बर भेष
स्यालनी खावे तजे न विवेक, भके तो भक जाना॥2॥कोई...
धर्म पर डटे सुदर्शन सेठ, न मानी रानी कही अनेक।
वो सूली खड़ी सामने देख, सिंहासन हो जाना॥3॥कोई...
धर्म पर डटी राम की रानी, राम ने अग्नि परीक्षा ठानी।
शील से हुआ अग्नि का पानी, क्या मुश्किल हो जाना॥4॥कोई...
फँसी थी सुलोचना गंगा में, गाहने गस लीना गज का अंग।
ध्यान धर प्रभुवर निसंक, डूबते बच जाना॥5॥कोई...
धर्म पर भई सुखानन्द नार सहे दुःख जिनके नाहि सुमार।
शहर के थे सब बन्द किवार पैर से खुल जाना॥6॥कोई...
दुशासन दुष्ट दुष्टता ठानी खैचत चीर हुआ असमानी।
द्रोपदी सती नहीं घबड़ानी धर्म से बड़ जाना॥7॥कोई...
खड़ी रो रही थी राजुल नार नेमि जी चढ़ गये गिरिनार।

उमर वारी तज, राजुल नारि वो दीक्षा ले लेना॥8॥कोई...
धर्म पर डटी जो मैंना नारि, कुष्ठी को ब्याह दीना तत्काल।
कुष्ठ का मिट जाना॥9॥कोई...
धर्म से है यह बड़ा कमाल, काटता भव सागर का जाल।
भूल न जाइयो भैया लाल, कपट पट खुल जाना॥10॥कोई...

छोटा सा मंदिर बनायेंगे

मुक्तक

दुख दर्द भरी आँखों को आँखों से देखना सीखो
हर गांव की मिट्टी में अरमान देखना सीखो
पाषाण की प्रतिमा में भगवान देखने वालों
पहले इन्सान में भगवान देखना सीखो

भजन

छोटा सा मंदिर बनायेंगे वीर गुण गायेंगे।
वीर गुण गायेंगे, महावीर गुण गायेंगे॥
छोटा सा मंदिर बनायेंगे.....॥टेक॥

कन्धों पर लेकर चांदी की पालकी-2 प्रभु जी का विहार करायेंगे।
वीर गुण...

हाथों में लेकर सोने के कलशा-2, प्रभु जी न्हवन करवायेंगे।
वीर गुण...

हाथों में लेकर द्रव्यों की थाली-2, पूजन विधान रचायेंगे।
वीर गुण...

हाथों में लेकर ताल मँजीरा-2, प्रभु जी भक्ति रचायेंगे।
वीर गुण...

हाथों में लेकर जिनवाणी पढ़ेंगे-2 और सबको पढ़ायेंगे।
वीर गुण...

जैनधर्म पाठशालाएँ खोलकर-2, तत्वों का ज्ञान करायेंगे।
वीर गुण...

श्रद्धा से लेकर वस्तु स्वरूप-2, आतम का अनुभव करायेंगे।
वीर गुण...

चरित्र में लेकर शुद्धोपयोग-2, मुक्तिपुरी को जायेंगे।

रे मन मुसाफिर निकलना

मुक्तक

भूलों को राह हम दिखाते हैं
बिना रिश्ते के फर्ज निभाते हैं
ईट पत्थर के मकां लाख बना लो यारों
महान वो है जो दिल में घर बनाते हैं

भजन

रे मन मुसाफिर निकलना पड़ेगा।
काया का घर खाली करना पड़ेगा॥टेक॥
किराये के क्वाटर को क्या तू सम्भाले।
एक दिन उसका मालिक तुझको निकाले
होकर के खेद तुझे जाना पड़ेगा॥1॥ काया.....
आएगा नोटिस जमानत न होगी।
कुछ भी ये कर लो, अमानत न होगी।
नरकों की मार तुझे खाना पड़ेगा॥2॥ काया.....
मेरी मत मानो, यमराज तुझे मनायेगे
तेरे पाप तेरे कर्म तेरे सामने बतायेंगे।
पापों की अग्नि में जलना पड़ेगा॥3॥ काया.....
कहे रजु बन्धा फिर मारा-मारा।
लख चौरासी में खायेगा गोता।
जामन मरन तुझे करना पड़ेगा॥4॥ काया.....

जैन धर्म के हीरे मोती

मुक्तक

यहाँ हर स्वांस पर लगता, किराया वक्त का भारी
नशे में ही न कट जाये, कहीं ये जिन्दगी सारी
धरम के नाम पर धोखा, हजारों लोग खाते हैं
उन्हें ही चैन मिलता है, जो स्वयं को जान जाते हैं

भजन

जैन धर्म के हीरे मोती, मैं बिखराऊँ गली गली।
ले लो रे कोई प्रभु का प्यारा, शोर मचाऊँ गली-गली॥टेक॥
दौलत के दीवाने सुन लो, एक दिन ऐसा आएगा
धन दौलत और माल खजाना, यहीं पड़ा रह जायेगा।
सुन्दर काया मिट्टी होगी, चर्चा होगी गली-गली॥1॥
जैन धर्म के........

क्यों करता है मेरी तेरी, तज दे इस अभिमान को।
झूँठे झगड़े छोड़ के प्यारे भज ले तू भगवान को।
जगत का मेला दो दिन का है, अंतिम होगी चला चली ॥2॥
जैन धर्म के........

जिन जिन ने यह मोती लूटे, वो ही माला-माल हुए।
दौलत के जो बने पुजारी, आखिर में कँगाल हुए॥
सोने-चाँदी वाले सुन लो, बात कहूँ मैं गली गली॥3॥
जैन धर्म के........

जीवन में दुख जब तक ही है, तब तक सम्यक ज्ञान नहीं।
ईश्वर को जो भूल गया है, वह सच्चा इंसान नहीं।
दो दिन का ये चमन खिला है, फिर मुरझाये जाये कली-कली॥4॥
जैन धर्म के.......

हैं बनी-बनी के साथी

मुक्तक

किसी की बदनसीबी ही किसी की खुशनसीबी है
बरतना सावधानी तुम, उसी से जो करीबी हैं
किसी का मौन हो जाना, किसी का मन्द मुस्काना
लिए है राज अपने में, कहीं इनमें न फंस जाना

भजन

हैं बनी बनी के सब साथी, दुनिया में हमारा कोई नहीं।
धन वालो के हमदर्द सभी, निर्धन का सहारा कोई नहीं॥टेक॥

थे दोस्त हमारे दुनियाँ में, जब पास हमारे पैसा था।
जब वक्त गरीबी का आया, दिलभर का सहारा कोई नहीं॥1॥
हैं बनी-बनी...

पैसे से इज्जत होती और अक्लमन्द पैसे वाला
सब खूबी पैसे की जब बिन पैसे कहीं गुजारा नहीं॥2॥
हैं बनी-बनी...

जीना भी उसका मुनासिब है, जिसके घर पैसा होता है
निर्धन का मरना बेहतर है, उसे पूछने वाला कोई नहीं॥3॥
हैं बनी-बनी...

पैसे से नारी प्यार करे पैसे से नाते दुनिया के
जब समय बुरा आ जाता है तब बनता अपना कोई नहीं॥4॥
हैं बनी-बनी...

हमदर्द हजारों बन जाते हैं जब तक पैसे की ताकत है।
इस दुनिया में मरना जीना निर्धन का आधार नहीं॥5॥
हैं बनी-बनी...

तुम हो तारन तरन ले लो...

मुक्तक

भगवान तुम्हारे हर सवाल का जवाब दे
तुम्हारी खुशियों को निखार दे
तुम्हारे लब कभी ना भूलें मुस्काना
भगवान भी ऐसी खुशियाँ बेशुम्मार दे

भजन

तुम हो तारन तरन ले लो अपनी शरण वीर प्यारे
मेटो मेटो जी सब दुख हमारे ॥टेक॥
तुमने लाखों को जग से है तारा।
तेरे चरणों का मुझको सहारा।
अब गहे तुम-चरण मेटो जीवन मरण, दीन तारे॥1॥
मेटो-मेटो जी........
मैं तो भव-भव में भटका फिरा हूँ, नाथ सारे दुखों से घिरा हूँ।
मैं परेशान हूँ, बहुत हैरान हूँ, कष्ट भारे॥2॥
मेटो-मेटो जी........
मैंने जग से है मोह बढ़ाया, कुछ भी इसमें नहीं नाथ पाया।
जिसने शरणा लिया उसको पार किया, दुःख निवारे॥3॥
मेटो-मेटो जी........
अब श्रद्धा से मस्तक नवाऊ तुमको छोड़ कहाँ नाथ जाऊँ।
दास व्याकुल खड़ा तेरे चरणों पड़ा, कर किनारे॥4॥
मेटो-मेटो जी........

दर्शन दे दो जी सामरिया

मुक्तक

आने जाने की बात करते हो
गम भुलाने की बात करते हो
हमको अपनी खबर नहीं
तुम जमाने की बात करते हो

भजन

दर्शन दे दो जी सामरिया, कैसे सपरी।
हो स्वामी कैसे सपरी, हो वीरा कैसे सपरी॥टेक॥
तुम बिन देखे जियरा मेरा रहता है बेचैन,
स्वामी तुम्हारे दर्शन खातिर नीर बहाते नैन।
बीते चरणों में उमरिया, कैसे सपरी॥1॥
दर्शन...
किसको पड़ी है कौन सुनेगा, दुखिया दुख के लाले,
बिना तुम्हारे हो मेरे स्वामी, मुझको कौन सम्हालें।
मेरी राखी रे लजरिया कैसे, सपरी ॥2॥
दर्शन....
जग के स्वामी अब तो आके, थाम लो मेरी बैंया,
हाथ जोड़कर कहता प्रभुजी, पार लगा दो नैया।
हो अनाड़ी संवरिया, कैसे सपरी॥3॥
दर्शन...
जैन प्रेम मिल मण्डल स्वामी आया शरण तिहारी,
दे दो उसे सहारा भगवान सेवा करे तुम्हारी।
दिखाओ मुक्ति की डगरिया, कैसे सपरी॥4॥
दर्शन...

क्यों वीर लगाई देर

मुक्तक

अपनी पिछली जिन्दगी पर यूँ पछता रहे हैं
इसलिए चादर से मुँह ढांक कर जा रहे हैं
फैल रही है बदबू चारों ओर इसलिए
बदबू को सुगन्ध से दबाकर जा रहे हैं

भजन

क्यों वीर लगाई देर, सुनी नाहि टेर,
हमें न उबारा, दुनिया में कौन हमारा॥टेक॥

ये दुख के बादल छाये है हम बेबस हैं घबराये हैं।
अब तुम्हीं कहों कित जायें, कहीं न सहारा। दुनिया में...॥1॥

हम माया पर इतराये हैं, इसी करनी पर पछताये हैं।
यह तुम्हीं सो होय जग तारा॥ दुनिया में...॥2॥

विषयों ने हमें लुभाया है, अज्ञान अंधेरा छाया है।
अब सूझ रहा है, देव कहीं न किनारा॥ दुनिया में...॥3॥

तुमने सब संकट टारे हैं, हमसे पाप भी वारे हैं।
हम किस गिनती में रहे, हमें न सहारा॥ दुनिया में...॥4॥

हम तेरा दृढ़ विश्वास किये, वसुनन्दी हृदय में आस लिये।
अड़ गये पकड़कर यहीं, तुम्हारा द्वारा। दुनियाँ में.....॥5॥

क्या सोवे पैर पसार के

मुक्तक

कविता बनाने के लिए हुनर चाहिए
कविता सुनाने के लिए अच्छा गला चाहिए
आदमी बनाने के लिए हुनर चाहिए
बनाने वाला आदमी ज्ञान वान चाहिए

भजन

क्या सोवे पैर पसार के, तेरे सिर पर काल खड़ा है॥टेक॥

बालपन तो खेल में खोया, यौवन नारी के संग सोया।
वृद्धापन दुख पाकर रोया, नशा न मोह घटा है॥1॥
क्या सोवे पैर........॥
हाय-हाय में जीवन खोवे, जीवन भर को रोवे।
कबहुँ चैन रैन न सोवे उलझन माँहि पड़ा है॥2॥
क्या सोवे पैर........॥
नैक न सफेद केश संदेशा लाए, मूरख भ्रम में क्यों भरमाये
नैक न आतमा की सुधि लावे, चिकना घड़ा बना है॥3॥
क्या सोवे पैर........॥
काल अचानक झोंका आवे सुन्दर तन को ढेर बनावे।
उस ही क्षण मरघट ले जावे, अग्नि माहि अड़ा है॥4॥
क्या सोवे पैर........॥
यों ही आवे यों ही जावें, आत्म हित कुछ करना पावे।
लख चौरासी में भटकावे, चन्द्र ने दुःख टला है॥5॥
क्या सोवे पैर........॥

इस संसार में सुखी

मुक्तक

महावीर के संदेश हम सुना रहे थे
सुनकर के लोग नजरें चुरा रहे थे
मानव के आचरण का दर्श हो रहा था
सत्य सुनकर सबके दर्द हो रहा था

भजन

या संसार में रे कोई नर सुखी नजर नहीं आता॥टेक॥
कोई दुखिया धन बिन निर्धन, दीन वचन मुख बोले।
भ्रमत फिरे परदेसन में अरू, धन की चाह में डोले॥ या संसार...
दौलत के भण्डार भरे हैं, तन में रोग समाया।
निश दिन कड़वी खात दवाई, कहा करत नहीं काया॥1॥ या संसार...
तन निरोग और धन बहुतेरा, फिर भी रहा दुखारी।
पूजत फिरे कुदेवन को नर, पुत्र एक नहीं होता॥2॥ या संसार...
तन निरोग धन पुत्र पाय के, फिर भी रहा दुखारी,
पुत्र नहीं आज्ञा को माने, घर में कर्कशा नारी॥3॥ या संसार...
तन धन पुत्र सुलक्षण नारी सुत है आज्ञाकारी।
तो भी दुखिया भयो जगत में, भयो न छत्रधारी॥4॥ या संसार...
चक्रवर्ती भये छत्रपति भये, पर नारी संग मोहें।
आशा तृष्णा घटी न उनकी, फिर भी सुख को रोये॥5॥ या संसार...
हे मेरे भाईयो वो ही सुखिया, जो इच्छा का त्यागी।
राग द्वेष तज सकल परिग्रह, भये परम वैरागी॥6॥ या संसार...

सुखरत की बात मेरे...

मुक्तक

हमारा हंसना हर किसी को गंवारा नहीं होता
हर मुसाफिर जिन्दगी का सहारा नहीं होता
मिलते ही बहुत हैं इस तन्हा जिन्दगी के सफर में
लेकिन हर कोई आपसा प्यारा नहीं होता गुरुवर

भजन

सुखरत की बात तेरे हाथ रति न रही रे।-2
पुदगल ने मानी सुख कल्पना गई रे ॥टेक॥
तेरे धन दौलत भण्डार भरे हैं मोती, भरे हैं मोती,
तेरे सुख सम्पत संजोग, जुरे सब गोती,-2
कोई मिसले तेल फुलेल धोवे कोई धोती-2
तेरे सन्मुख सुन्दर नार खड़ी मुख ज्योति,
ऐसी सम्पत्ति छिन माहि सर्व हय गई रे-2 ॥1॥ पुदगल...
तैने षटरस खाये खूब खजानों खोयो रे, खजानो खोयो रे।
निशदिन सुख कर सुन्दर सेज पर सोयो रे।
तिरिया सोलह श्रृंगार नार संग मोहो रे, नार संग मोहो रे
तेरे अन्तर घट की मैल रती न धोयो रे।
तैने नर्क निगोद की राह पकड़ अब लई रे, पकड़ अब
लई रे पुदगल.....

मानो-मानो कथा जी

मुक्तक

हमने हर शाम चिरागों से सजा रखी है
वजह यह है कि शर्त हवाओं लगा रखी है
न जाने किस गली से मेरे गुरुवर आ जायें
मैंने हर गली फूलों से सजा रखी है

भजन

मानो-मानो कथां जी मेरी सीख, सिया को लेके राम सो मिला॥टेका॥
इन्द्रजीत से बेटा कहिये, कुम्भकरन से भाई,
गढ़ लंका को कोट बनो है,समुद्र बनो जैसे खाई। सिया॥1॥
हनुमान से योद्धा कहिये, लक्ष्मण से है भाई,
गढ़ लंका में कूद पड़ेंगे, समुद्र गिने नाहि खाई! सिया॥2॥
भूमि गोचरी बंचर कहिए, एक फिरे बन माहीं,
छिन में उनको जीत रण में, पकड़ बाँध ले जाऊँ। सिया॥3॥
वे भूमि गोचरी हुए नारायण, हलधर से हैं भाई
चौबीस सहस देवता, उनको पग पूजें नित जाई। सिया ॥4॥
वे त्रिखण्डी अधिपति कहिए, मेरी कला सवाई।
इन्द्रसार में मैंने जीते, जग विख्यात कहाई। सिया॥5॥
खरदूषण से उनने मारे, सुग्रीव त्रिया मिलाई।
परम भूमि के वचन चिंतारो, कोट शिला जो उठाई।
सिया को....॥6॥
अब तो मृत्यु आ गई तुमरी, वो तो हम सब जानी।
कह मन्दोदरी सुन प्रिय रावण, होनी टरै न टारी।
सिया......॥7॥

धरम बिना बावरे

मुक्तक

आती हैं कितनी बाद याद गुरुवर, तुम्हें क्या बतायें हम
ऐसा कहाँ है कि तुम्हें भूल जायें हम
कौन कहता है गुरुवर कि, हमने आपको भुला रखा है
नजरों से दूर हो गुरुवर, परदिल में बसा रखा है

भजन

धरम बिन बावरे-तूने मानव जनम गँवाया।
तूने हीरा सो जनम गँवाया-धरम बिन बावरे ॥टेक॥
कभी न कीना आत्म निरिक्षण, कभी न निज गुण गाया
पर परिणति में प्रीति लगाकर काल अनन्त गँवाया॥1॥
धरम बिन बावरे..........
यह संसार पुण्य पापों का पुण्य देख ललचाया,
दो हजार सागर के पीछे काम नहीं यह आया॥2॥
धरम बिन बावरे..........
यह संसार तो भवसागर है, वन विषयी हरषाया
ज्ञानी जन तो पार उतर गये, मूरख रूदन मचाया॥3॥
धरम बिन बावरे..........
यह संसार तो हेय द्रव्य है, आतम ज्ञायक गाया।
कर्ता बुद्धि छोड़ दे चेतन, नहीं तू फिर पछताया॥4॥
धरम बिन बावरे..........
यह संसार संयोग की माया, अपना कर अपनाया।
केवल दृष्टि सम्यक करके जिन गुरू ने समझाया॥5॥
धरम बिन बावरे..........

बलो अमृत गया

मुक्तक

मैंने मौसम और बहारों में, तुम्हें देखा है गुरुवर
कुदरत के इन नजारों में, तुम्हें देखा है गुरुवर
ऐ गुरुवर तुम्हारी, भोली सूरत की कसम
मैंने होठों की मुस्कराहट में, तुम्हें देखा है गुरुवर

भजन

बेला अमृत गया, आलसी सो रहा।
वक्त यूँ ही खो रहा, बन अभागा।
साथी सारे जागे तू, न जागा॥टेक॥

कर्म उत्तम से नर तन पाया, आलसी बनकर जीवन गँवाया।
हंस का संकल्प था, पानी गंदा पीया बन के कागा॥1॥साथी सारे...

झोलियाँ भर रहे भाग्यवाले, लाखों पतितों ने जीवन सम्भाले।
सो रस में हैं सगे, ज्ञान रस में पगे। आतम ज्योति जगी कर्म भागा॥2॥साथी

सार वेदों का देखा है भाला, सिर से कपटियों का, कपट न उतारा सौदा
घाटे का कर हाथ माथे पे धर रोवन लागा॥3॥साथी सारे........

सीख सत गुरु की, अब मान ले तो जाने को है जो जान ले तो
मोह निद्रा भगा, आतम ज्योति जगा-बन विरागा॥4॥साथी सारे......

बेला अमृत गया, आलसी सो रहा, वक्त यूँ खो रहा,
बन अभागा, साथी सारे जगे तू न जागा।

मिलेंगे मन मन्दिर....

मुक्तक

खो न जाएँ आप, दुनियाँ की भीड़ में गुरुवर
इसीलिए दिल में, छुपाकर रखता हूँ
आपको लगे ना, किसी की बुरी नजर गुरुवर
इसीलिए आँखों में, बसाकर रखता हूँ

भजन

मिलेंगे मन मन्दिर में भगवान, मिटाले मैल अरे नादान॥टेक॥
गंगा जमुना जी के तट पर, गोकुल, मथुरा, वंशीवट पर
नाहक क्यों होता हैरान, मिटाले मैल अरे नादान॥1॥ मिलेंगे...
फूलों में सुवास है, जैसे गन्ने में मिठास है वैसे।
बसे तेरे प्रभु के दिल के दरम्यान, मिटाले मैल अरे नादान॥2॥ मिलेंगे...
कस्तूरी मृग की नाभि में, मूरख ढूँढे वन झाड़ी में।
खोता भटक-भटक कर जान, मिटाले मैल अरे नादान॥3॥ मिलेंगे...
तेरे पास बसे है प्यारा, फिर भी फिरता मारा-मारा।
भटकता फिरता है अज्ञान, मिटाले मैल अरे नादान॥4॥ मिलेंगे...
तज अज्ञान शुद्ध कर निज मन, निश्चय हो प्रकाश प्रभुदर्शन
पावै तू आनन्द महान, मिटाले मैल अरे नादान॥5॥ मिलेंगे...

यहाँ कहाँ आ''....

मुक्तक

तुम्हारी महफिल हमेशा सुहानी रहेगी
जुबां पे खुशी की कहानी रहेगी
चमकते रहेंगे मेरी जिन्दगी के तारे
अगर तुम्हारी गुरुवर मुझ पर महरबानी रहेगी

भजन

यहाँ कहाँ आ फँसे बटोही, तुम ऐसे इस गांव में।
जहाँ धूल तक धोका देती, शूल चुभे हर पांव में ॥यहाँ....
है अनादि से आदि जिसका तज ऐसे परवेश को।
जिसमें मोह स्वार्थ की बू हो, भजो न उस उद्देश्य को।
पर स्वमत, समझ स्वयं को, रही न पर की छाव में॥1॥ यहाँ...
किसने कहा निकल तू घर से, महल अटारी छोड़ दे।
जो जहाँ है वहीं रहने दे, केवल दृष्टि मोड़ ले।
बिना हटाये हटेगा सब, डाल न बेड़ी पाँव में॥2॥ यहाँ....
यह भवसागर ऐसा है जहाँ दर्द की धार है।
चूक गया जो डूब गया, पा सका न भव से पार है॥
पता नहीं फिर कहाँ बैठना, पड़े कौन-सी नाव में॥3॥
यहाँ कहाँ आ फँसे....

सताते हैं जो

मुक्तक

सितारे बहुत होंगे आसमान में पर कोई चांद सा खूबसूरत कहाँ
फूल बहुत होंगे गुलशन में, पर कोई गुलाब सा खूबसूरत कहाँ
गुरुवर होंगे इस दुनिया में
पर गुरुवर तुमसा कोई खूबसूरत कहाँ

भजन

सताते हैं जो औरों को, सताये वो भी जायेंगे।
बचाते हैं जो गैरों को, बचाये वो भी जायेंगे॥1॥टेक॥
जो करके जुल्म निजबल से, गरीबों को रूलाते हैं।
बनाकर एक अरु, निर्बल, रूलाये वो भी जायेंगे॥2॥
छुरी पशुओं की गरदन पर जो, निर्दय हो चलाते हैं।
वक्त इन्साफ के अपनी, वो भी गर्दन कटायेंगे॥3॥
निरीह पशुओं की कुर्बानी, जलाया होम करते हैं।
किसी दिन पापी अग्नि में, जलाकर होमे जायेंगे॥4॥
धर्म के नाम पर जो खून, पशुओं का बहाते हैं।
भयंकर नर्क में इसका नतीजा, आप पायेंगे॥5॥
सदा जो नेकी करते हैं, बदी के पास नहीं आते।
अमर होकर वही अपना, सफल जीवन बनायेंगे।

न तन प कोई....

मुक्तक

जिधर देखता हूँ उधर तुम ही तुम हो गुरुवर
मेरे दिल में और सांसों में तुम हो गुरुवर
जहां तुम न हो वहाँ और कुछ दिखता नहीं
अगर चांद देखूं तो उसमें भी तुम हो गुरुवर

भजन

न तन पे कोई लिबास, न ले खाने में स्वाद।
यै पैदल करे विहार, ये तो मेरे गुरुवर है, यही तो मेरे॥टेक॥
ना इनमें कोई राग, सब चीजों का परित्याग।
बस पिच्छी कमण्डल साथ, ये तो मेरे गुरुवर हैं।
यही तो मेरे मुनिवर हैं ॥टेक॥
घर की ममता है त्यागी, फिर होते ब्रह्मचारी।
दिन रात ये अध्ययन करते, पद मिलता क्षुल्लक धारी
पावे पद ऐलक का, फिर होते हैं मुनिराज
ये तो मेरे गुरुवर यही तो मेरे मुनिवर है॥1॥
रात दिन परिषह सहना, इक शास्त्र बना निज गहना।
सुरमति मृदु सज्जीवन में, तप ही तप करते रहना।
खुश होते हैं जब जब सुनते, फिर धर्म की जय जयकार
ये तो मेरे गुरूवर हैं, यही तो मेरे मुनिवर हैं।

काजू खाये....

मुक्तक

अगर तलाश करूं कोई मिल ही जायेगा गुरुवर
मगर आपकी तरह कौन हमें चाहेगा गुरुवर
हमें जरूर कोई प्यार से तो देखेगा गुरुवर
मगर वो आंखें आपकी कहाँ से लायेगा गुरुवर

भजन

काजू खाये, किसमिस और मखाना,
हाय राम अच्छा ये बहाना॥टेक॥
नमक त्याग, करके जो हमने न खाया
बस थोड़ा-सा हलवा, घी का बनाया,
जरा अपने मन को समझाना
हाय राम अच्छा ये बहाना, काजू खाये......॥1॥
शक्कर त्याग करके जो हलवा न खाया।
बस थोड़ा सा दूध का छेना बनाया।
इन्द्रियों पे काबू न पाना, काजू खाये......॥2॥
खटाई त्याग करके जो हमने नहीं खाया।
बस थोड़ी सी काजू की चटनी बनाई।
मुश्किल है बस, इस दिल का समझाना।
हाय राम अच्छा ये बहाना, काजू खाये.......॥3॥
रोटी त्याग करके पूड़ी न खाई।
बस थोड़ी सी आलू की टिकिया बनाई।
मुश्किल ये, भावों को समझाना
हाय राम अच्छा ये बहाना, काजू खाये.....॥4॥

भक्तो चालो तो...

मुक्तक

हर जीवन हर युग में मैंने साथ तुम्हारा मांगा
तेरे चरणों में रहने को अपना सब कुछ छोड़ा है
मन्दिर-मन्दिर दीप जलाये हर मूरत को पूजा है
यूँ ही नहीं तुम्हें मैंने पाया गुरुवर सदियों तक तप साधा है

भजन

भक्तो चालो तो, चालो रे शिखर नगरी।
शिखर नगरी में थारी, बनसी बिगड़ी ॥टेक॥
पांव पड़या धरती पर, थारी निर्मल होसी काया।
तन, मन शीतल होसी पाकर, अटल छत्त की काया॥1॥
आगे चाल्या मन भावन, मंदिर का दर्शन होसी।
देख छटा मंदिर की सारी, सुध बुध थारी खोसी॥2॥
तीरथ धाम बण्यो प्रभु को, या अल बेलो मन्दिर।
सारे जग की रक्षा करते, बैठे है प्रभु अन्दर॥3॥
फागुण सुदी में प्रभु जी, थारो मेला लागे भारी।
भक्ति भाव से मेला लागो, लाख ही नर नारी॥4॥
के सोचो हो भक्तो थारी, पूरी होसी आस।
मन वांछित फल पायो, मन में राखो जी विश्वास॥5॥
बीस टोंक के दर्शन करस्यां कर्मो का बन्ध छुटास्या।
भजन मंडली के सागे मैं, शिखरजी ने जास्याँ॥6॥

जन्म घर

मुक्तक

आशा है गुरुवर आप हमेशा हमें याद रखेंगे
हम पर अपना आशीर्वाद यूँ ही बनाये रखेंगे
पल भर के लिए ही सही जो गुरुवर आप दोबारा आयेंगे
फूलों की बात क्या है हम दिल भी बिछायेंगे

भजन

जनम घर, जैन के पाकर करो दर्शन, शिखरजी के॥टेक॥
उदय कोई पुण्य का आये, जन्म घर, जैन के पाव
लिखा है, जैन ग्रन्थन में, करो दर्शन शिखर जी के॥1॥
गये निर्वाण, तीर्थंकर, इस भूमि में तप करके।
नियम के, साथ में जाकर, करो दर्शन शिखर जी के॥2॥
जिन्होंने मन, वचन, काया से ध्याया, आके भूमि को
पार नैया, हुई उनकी, करो दर्शन, शिखर जी के॥3॥
समय ऐसा न आवेगा, हाथ से, यह भी जावेगा
किशन कहता है, समझाकर, करो दर्शन, शिखर जी के॥4॥

ऋषभ अजित सम्भवनाथ

मुक्तक

गुरुवर आप हमेशा अपनी मंजिल को पाओ
यश के अम्बर को छू जाओ
आपके शिष्य करें ये कामना
आप सदा यूँ ही मुस्कराते रहो

भजन

ऋषभ अजित सम्भवनाथ जी, आज मैंने सपने में देखे॥
चारों तरफ चार मंदिर बने हैं।
बीच बनो चैत्यालो रे। आज मैंने सपने.........
चारों तरफ चार वेदी बनी हैं।
बीच में पारसनाथ जी। आज मैंने सपने.........
चारों तरफ चार खंभे बने हैं।
बीच में मानस्थंभ जी। आज मैंने सपने..........
चारों तरफ चार मुनिवर खड़े हैं।
बीच में वसुनन्दी जी। आज मैंने सपने..........
चारों तरफ चार अरजिका खड़ी हैं।
बीच में गुरुनन्दिनी माता जी। आज मैंने सपने..........
चारों तरफ चार महिलाएं खड़ी हैं।
बीच में जिनवाणी माता जी। आज मैंने सपने..........
चारों तरफ चार यात्रा बनी हैं।
बीच में सम्मेद शिखर और गिरिनार जी। आज मैंने सपने..........
ऋषभ अजित सम्भव नाथ जी। आज मैंने सपने...

मधुरला

मुक्तक

खुश होकर देखते हैं वो मेरी तबाही को
कोई सुहानी शाम का मंजर नहीं हूँ मैं
गम के घर में कैद हूँ बेघर नहीं हूँ मैं
ठोकर न यूँ लगा मुझे तुम्हारी तरह पत्थर नहीं हूँ मैं

भजन

अहा बाजन को दिन आज मुधुरला, बाजे, अधिक सुहावनो
अरे हँरि मधुरला जा, जिन घर के बीच में।
ले आँगन ढोल धराय॥मधुरला........
अरे हँरि मधुराला, भगवान गीत गबाय के।
सब भरत पुण्य भण्डार॥मधुरला........
अरे हँरि मधुराला संग, सहेली हिल मिल के।
सब गांवे मंगलाचार॥मधुरला........
अरे हँरि मधुरला, रूप प्रभु गुनगाय के।
अहा भगति भरों दिन रात॥मधुरला........

ऊँचे-ऊँचे शिखरो

मुक्तक

खुशबू आपकी गुरुवर हमेशा मेरी सांसों में रहती है
सूरत आपकी गुरुवर हमेशा मेरी आंखों में रहती है
आप पास रहो या ना रहो मेरे गुरुवर
आपकी याद हमेशा मेरे साथ रहती है

भजन

ऊँचे-ऊँचे शिखरों वाला है तीरथ हमारा।
तीरथ हमारा, ये जग से न्यारा।
मधुवन बरसे रे, अमरत की तो धारा।
अमरत की धारा, हो ये अमरत की धारा।
ऊँचे-ऊँचे शिखरों.....॥1॥
भाव सहित बन्दे जो कोई
ताहि नरक पशुगति ना होई
उनके लिए खुलजाये रे सीधा स्वर्ग का द्वारा।
स्वर्ग का द्वारा हो ये स्वर्ग का द्वारा
ऊँचे-ऊँचे शिखरों.....॥2॥
जो भी तीर्थंकर ने वचन उचारे
कोटि-कोटि मुनि मोक्ष पधारे,
उच्च परम पद पावे रे न जन्में दुबारा।
ना जन्मे दुबारा, ना जन्मे दुबारा॥
ऊँचे-ऊँचे शिखरों.....॥3॥
हरे-हरे वृक्षों की झूँमें डाली।

समोशरण की ये रचना निराली।
पर्वत पर तो बहता है, यह झरना तो प्यारा।
झरना तो प्यारा, ये झरना तो प्यारा॥
ऊँचे-ऊँचे शिखरों.....॥4॥
नवयुवक मंडल ये शरण में आकर
सारे जिनालय में ढोल लजाकर।
कर लो स्वीकार प्रभु जी ये बन्धन हमारा।
बंधन-बंधन ये बंधन हमारा॥
ऊँचे-ऊँचे शिखरों.....॥5॥

'घर होती तो आदर कर लेती

मुक्तक

दिल में चोट लगे तो दर्द होता है
जैसे सावन की झड़ी में मौसम सर्द होता है
छूने को तो हजारों के चरण छू सकते हैं
लेकिन आपके चरण छूने वाला वह भक्त दीवाना होता है

भजन

घर होती तो आदर कर लेती, घर होती...॥टेक॥
अनुभव समधी घर पर आये, शान्ति क्षमा समधन को लाये?
गले में हार पहना देती ॥1॥
घर होती तो..........
प्रेम का पलंग दया का गदेला।
अरे मन मंदिर में विछा देती॥2॥
घर होती तो..........
धीरज चिलम पुण्य का ओलम
ज्ञान का दीप जला देती॥3॥
घर होती तो..........
क्षमा का आसन नीति की थाली।
प्रीति की झारी-भरा देती॥4॥
घर होती तो..........
शील की पूरी धरम का बूरा।

सुमती का साग परस देती॥5॥
घर होती तो..........
दृढ़ता दाल सुमन का पापड़।
चित्त का भात बना देती॥6॥
घर होती तो..........
निरमलता का नोन परसती।
दूध सुयश का धर देती॥7॥
घर होती तो..........
ऐसे व्यंजन को परोसकर
आतम रस चखवा देती॥8॥
घर होती तो..........
शान्ति सुधा का पान करा कर।
सुख का पान खिला देती॥9॥
घर होती तो..........
कर ऐसा आदर सुचन्द्र का
शिव की राह बता देती॥10॥
घर होती तो..........

श्री भजन सतगुरु

मुक्तक

उठे ऊचा कोई कितना, कि अम्बर हो नहीं सकता
बढ़े आकार कतरा भी, समंदर हो नहीं सकता
दहकती आग में तपता, दमकता तन है कुन्दन सा
यूँ ही दुनियां में हर कोई दिगम्बर हो नहीं सकता

भजन

अब तोय सतगुरू, लेने आवेंगे, साँची मान सहेली।
मिलने की आस लगाई ले, मन मंदिर में आस जगाई ले॥
अब तोकूँ पंच रंग पलिका लावेंगे, साँची मान सहेली॥1॥टेक
चलने की करिले तैयारी, पाप पुण्य की बाँधिले गठरी।
अब तोकूँ फूलन सेज बिछावेगो, साँची मान सहेली॥2॥ अब तोय...
दया धर्म की चोटी करिले, घोल सिन्दूर की मांग भरिले।
अब तोकूँ छिमा की बिंदिया लावेगो, साँची मान सहेली॥3॥ अब तोय...
अमृत पान तुम मुख में चाव लेऊ, चरित्रजरा आँख में डारि लेऊ।
अब तोकूँ ज्ञान के कुण्डलि लावेगो, , साँची मान सहेली॥4॥ अब तोय...
दया धर्म की चूड़ी पहिन लेऊ, भाव सहित मेंहदी माँड लेऊ।
अब तोकूँ रत्नत्रय की मुन्दरी लावेगो, साँची मान सहेली॥5॥ अब तोय...
अष्ट अंग हँसुली, पहिन लेऊ, तेरह चरित्र की ठुसी पहन लेऊ।
अब तोकूँ सत्य का हरवा लावेगो, साँची मान सहेली॥6॥ अब तोय...
ईरिया समिति की पायल पहिन लेऊ, तीन गुपत के बिछिया पहिन लेऊ।
अब तोकूँ ब्रह्मचर्य की तगड़ी लावोगो, साँची मान सहेली॥7॥ अब तोय...

रीति प्रीति की ओढ़ी चुनरिया, लोक लाज की पहिनो घघरो।
अब तोकूँ धीरज अँगिया लावेगो, साँची मान सहेली॥8॥ अब तोय...
दोज न आवे तीज न आवे, पाँचे नहि आवे छठ नहि आवे
अब तो परिवा को विदा, करावेगो, साँची मान सहेली॥9॥ अब तोय...
पाँच सखी तोय न्हलावे, हिल मिल के सब गले लगावें।
अब तो डोला तेरो मचकत जावेगो, , साँची मान सहेली॥10॥ अब तोय...
चंदन को तेरो चौतर बनावेगो, तामें तोय सुआवेगो।
तब वामें खुलके आग लगावेगो, साँची मान सहेली॥11॥ अब तोय...
अरे शिख ते नख तक तोय जलावेगो, , साँची मान सहेली।
अरे अब तोय सद्‌गुरु लेने आवैगो, साँची मान सहेली॥12॥ अब तोय...

नर हो न हार होतव्य

मुक्तक

जो पर पीड़ा को अपना कर, नयन का नीर बनते हैं
हैं कुछ ही जो द्रौपती के, बदन का चीर बनते हैं
जहाँ को जीतकर तुम सिकन्दर बन तो जाओगे
जो खुद को जीत लेते हैं वही महावीर बनते हैं

भजन

नर होनहार होतव्य न तिल भर टरती।
भई जरद कुँवर के हाथ मौत गिरधर की॥टेक॥
श्री नेमिनाथ जिन आगम यही उच्चारी।-2
भई बारह वर्ष विनाशि द्वारिका सारी॥
बचे फकत श्री बलभद्र और गिरधारी।
गये देश से निकल कंच तृषा अधिकारी।
भये निद्रावश वन बीच निहति है हरि की॥1॥-2
भई जरद.........
बलभद्र भरन गये नीर न नियरे पाया।-2
धरि भेष शिकारी जरद कुँवर तहँ आया।
लखि पीताम्बर पीत लख हरषाया।
तब मृगा जान यदुवंश ने बाण चलाया।
लागत तीर उठ वीर पीर तरकस की ॥2॥
भई जरद.........

चित होत घहूँ और निहारे तन में

किन मारा बैरी बाण आये इस वन में॥
यह वचन सुनत यदु कुँवर विलखते मन में।
श्री नेमिनाथ जिन वचन लखे दृग मन में॥
होय न झूठ वचन कही गणधर ने॥3॥-2
भई जरद..........

ले आये नीर बलभद्र तीर नरपति के।
लखि हाल भयो बेहाल देख भूपति के॥
षटमास फिरे बलभद्र मोहवश भ्रमते-2
दिया तुंगी गिरि पर दाह बोध चितधर की
कहे गुणी जन के सुनि वाणी यह जिनवर की॥4॥
भई जरद..........

माटी का घर छोड़

मुक्तक

बिना कांटों के गुलाब बड़ी मुश्किल से खिलते हैं
बिना घी के दीपक बड़ी मुश्किल से जलते हैं
धन्य और धर्ममय हो जाती है वह नगरी
जहाँ वसुनन्दी गुरुवर के चरण पड़ते हैं

तर्ज : बाबुल का घर

माटी का घर छोड़ आतमा, हो गई आज पराई रे।
डोला देख जियरा डोले, आँख नीर भर लाई रे॥टेक॥
पुण्य अमर सौभाग्य उदय से, नर तन इसने पाया था,
मुक्ति नगर को जाने का इक, अनुपम अवसर आया था,
भूला-भूला विषय फांस में, नरक गति फिर पाई रे-माटी...
छोड़ चला घर बार यहीं पर, पुण्य और संग पाप गया,
कर्मों की जंजीर न छूटी, मिला एक संताप नया,
भव सागर में डगमग करने, नैया फिर फिर आई रे। माटी...
क्रोध, मान,मद, लोभ लुटेरों का जंजाल मिटा भगवन,
जनम मरण गतियाँ चौरासी, कर्मों से छुटवाय त्रिभुवन
चरण शरण प्रभु वलि बलि जाऊँ, वीतराग छवि भाई रे
माटी का घर छोड़ आतमा, हो गई आज पराई रे......

नगरी-नगरी द्वारे द्वारे

मुक्तक

जहाँ पर देव दर्शन हो, वहीं उद्धार होता है
जहाँ मुनियों की वाणी हो, वो भव से पार होता है
मुझे लगता नहीं नवकार से, ऊँचा यहाँ कोई
वहाँ सब पाप कट जाते हैं, जहाँ नवकार होता है

तर्ज–नगरी-2द्वारे-2

नगरी नगरी द्वारे द्वारे, ढूंढों रे सांवरिया
भूला भूला भटका मैं तो, पाई न डगरिया ॥टेक॥
बेदर्दी कर्मों ने मोहे, फूंका दुख की आग में,
भवसागर में नैया भटकी, डूबा हूँ विष नाग में,
पल पल जियरा रोवे झलके पापों की गगरिया॥नगरी.......
पाई थी दुनियां में आके, जिनवाणी की झांकियां,
नर गति पाके पा न सका मैं, मुक्ति नगर की झांकियाँ
दुनियां के मेले में लुट गई, सांसों की गठरिया॥ नगरी......
दरशन के ये नैना भूखे, वीतराग छवि भाई रे
भव दधि पार उतरने कारण, लौ जिन चरण लगाई रे
अब तो जिनवर के चरणों में बीतेगी उमरिया॥नगरी........

लागी जिनवर से नजरिया

मुक्तक

गुरुवर दर्शन से मन सुमन खिल गया
दिल की मरुभूमि में सम्यक हल चल गया
अब न डूबेंगे हम कह दो तूफानों से
वसुनन्दी सा मांझी हमें मिल गया है

तर्ज–सपरी

लागी जिनवर से नजरिया, कैसे सुधरी ॥स्वामी कैसे सुधरी-२
तेरे नित दरशन करने से पाप होत सब दूर।
स्वर्ग सम्पदा छिन में मिलती, कर्म होय चकचूर॥
मिट जाय चहुँगति की भमरियां॥कैसे सुधरी.......
बहुत दिनों से भटकत भटकत दर्शन पाये तोरे।
सकल मनोरथ सफल भये हैं, धन्य भाग भए मोरे।
निरखत नैनों से संवरिया, कैसे सुधरी॥लागी जिनवर....
तेरे चरणों में आय पड़ा हूँ, अब ना नाथ बिसारो
बार-बार विनती करता है, ज्ञानानन्द तिहारो
लीजै जल्दी से खबरिया, कैसे सुधरी-॥लागी जिनवर......

त्रिशला के नन्द कुमान

मुक्तक

भ्रष्टाचार के घन चहुँ ओर छा रहे हैं
गीत बेईमान के सब लोग गा रहे हैं
लूट इस तरह मची है आज देश में
लोग रिश्वत को पान समझकर खा रहे हैं

तर्ज—चाहे बिक जाये हरो रुमाल

त्रिशला के नन्द कुमार, मेरी टेर सुनो अब सामलिया॥टेक॥
बहुत दिनों से भटकत भटकत, दर दर पर सर पटकत पटकत।
आयो तेरे द्वार; मेरी टेर सुनो अब सामलिया॥त्रिशला.......
नरगति सुरगति भटकत डोला, अमर भयो न मेरो चोला।
सुख दुख सहे अपार, मेरी टेर सुनो अब सामलिया। त्रिशला....
लख चौरासी मांहिं फिरा हूँ, जन्म लिया कई बार मरा हूँ।
चारों गति मंझार, मेरी टेर सुनो अब सामलिया। त्रिशूल......
बड़े भाग्य अवसर ये आया, बड़े कठिन से नर तन पाया।
उत्तम कुल अति सार, मेरी टेर सुनो अब सामलिया। त्रिशला....
दिल में सोच समझ लो प्राणी, नर तन सफल करो सब प्राणी
मिले न बारम्बार, मेरी टेर सुनो अब सामलिया। त्रिशला......
ज्ञानानन्द नयन अब खोलो, महावीर की जय नित बोलो
हो जाय भव से पार, मेरी टेर सुनो अब सामलिया
त्रिशला के नन्द कुमार, मेरी टेर सुनो अब सामलिया।

सब फेरो नर और नारि

मुक्तक

बीत गया बचपन और जवानी चली गई
वक्त के हाथों जिन्दगानी छली गई
पछता रहे हैं ढलते सूरज को देखकर
जिंदगी स्वयं के हाथों कुचली गई

तर्ज–चाहे बिक जाये हरो रुमाल

सब फेरो नर अरु नारि, मिल माला वीर जिनेश्वर की॥टेक॥
ये माला श्री पाल ने फेरी-2, भये समुद्र से पार
मिलि माला वीर जिनेश्वर की सब.....
सूली ऊपर सेठि ने फेरी-2, सिंहासन भयो ये सार
मिलि माला वीर-सब फेरो...
सोमसती ने माला फेरी-2, भयो नाग से हार
मिलि माला वीर-सब फेरो.....
मैनासती ने माला फेरी-2, कुष्ट मिटा भरतार
मिलि माला वीर-सब फेरो.....
सीता सती ने माला फेरी-2, पावक से वही जल धार
मिलि माला वीर-सब फेरो.....
सभा मांहि द्रोपति ने फेरी-2, साड़ी बड़ी अपार
मिलि माला वीर-सब फेरो.....
इस माला की महिमा भारी-2, नहि किसी ने पाया पार
मिलि माला वीर जिनेश्वर
सब फेरो नर अरु नारि, मिलिमाला वीर जिनेश्वर की

नरतन का स्वामी सिला चाहता हूँ

मुक्तक

सुबह उठो तो, गुरु को पुकारो
शाम चलो तो, गुरु को पुकारो
उसके उपकार, तुम पर इतने हैं
कि सोने से पहले गुरु को पुकारो

तर्ज-तेरे प्यार का आसरा चाहता हूँ

नरतन का स्वामी सिला चाहता हूँ
किया है बुरा ये भला चाहता हूँ।टेक
किये हैं बहुत पाप अब तक जो भारी,
तेरे सामने नाथ आकर पुकारी
करो दूर इनसे ये अरजी हमारी
इनसे तो अब गिला चाहता हूँ।
नरतन.....

बुरे भोग दुनियां के इनसे बचाओ
फँसे मोह ममता में मुझको छुटाओ
नहीं है तमन्ना जगत सम्पदा की
महलों मकाँ न किला चाहता हूँ।
नरतन....

बुलाओ मुझे पास जल्दी से स्वामी
बनाओ चरणदास जल्दी से स्वामी
दुखी ज्ञानानन्द की तमन्ना यही है।
तेरे चरण रज में मिला चाहता हूँ
नर तन का स्वामी सिला चाहता हूँ
किया है बुरा ये भला चाहता हूँ

भोग बेरी तजा

मुक्तक

जिन्होंने पत्थर को इबादत के काबिल बनाया
जिन्होंने मूर्ख को इज्जत के काबिल बनाया
उन्हीं श्री चरणों में समर्पित हूँ मैं
जिन्होंने ना काबिल को काबिल बनाया

तर्ज–तुमसे लागी लगन

भोग बेरी तजो, इनसे दूर भजो, बल नसाई।
ऐसी आगमर हो हैं बताई ॥टेक॥
चाह भोगों की ऐसी बुरी है, प्राण लेने की पैनी छुरी है
नाग बनकर डसे जिन्दा नाहीं बचे, धन नसाई
ऐसी आगम रहो हैं बताइ.....
कुमति रावण ने ऐसी उपाई, सीता माता को ले गयो चुराई।
आई ऐसी घरी, लंक सोने जरी, नर्क जाई
ऐसी आगम रहो हैं बताई.....
भोग दुनिया के सारे बुरे हैं, इनमें फँसकर अनेकों मरे हैं
ज्ञानी नाहिं बचे, ध्यानी नाहिं बचे, सब फसाई
ऐसी आगम रहो हैं बताई.....
सबसे कहता हूँ सबको सुनाकर, इनसे दामन को रखना बचाकर
जिसने कीने मजा, उसने पाई सजा, आज भाई
ऐसी आगम रहो हैं बताई.....
भोग बेरी तजो, इनसे दूर भजो, बल नसाई
ऐसी आगम रहो हैं बताई.....

बिन पारस प्रभू भगवान

बिना पारस प्रभू भगवान, अपना कोई नहीं॥टेक॥

उरध पांव रहे नित तेरे, स्वांस न तूने पाई
गर्भ कूप ते बाहर आयो, मैल रहो तन छाई
अपना कोई नहीं..........
बालापन हंसि खेल गंवाया, ज्ञान लिया नहि मन में
तरूण भयो नारी के बस में, ख्याल कियो नहि तन में
अपना कोई नहीं..........
गयो बुढ़ापा आय पडे नहि नैननि नेक दिखाई
कौड़ी एक कमाई नाहि, गांठि को चले गवाई
अपना कोई नहीं..........
तीनो पन धोखे में काढे, पर स्वारथ चित ना दीना
नाम प्रभू का नेक लिया नहि, निज स्वारथ नहि कीना
अपना कोई नहीं..........
ये नर तन मुश्किल से पाया, क्यों रहे वृथा गवाई
ज्ञानानन्द कहें आपही सों, औरन को समझाई
अपना कोई नहीं..........
बिना पारस प्रभु भगवान, अपना कोई नहीं।

णमोकार मन्त्र की महिमा

जपो नाम प्रभु का जो सुख चाहो भाई
इसी हेतु दुनियां में नर देह पाई॥टेक॥
दोहा– मनुष एक अतिदीन था, फिरता विपन मझांर
छलिया ने छल कर उसे, दिया कुआ में डार
चारू दत्त पहुँचे तहाँ, बहुत रहो घबड़ाय
चारू दत्त ने कान में दीना मंत्र सुनाय

सुना मंत्र उसने तो सुर पदवी पाई। जपो नाम प्रभु का जो सुख चाहो भाई
दोहा– चारुदत्त के संङ्ग ने, बकरा लिये खरीद
परवत पर काटे सभी, खूब मनाई ईद
चारुदत्त सोये हुते, इक बकरा चिल्लाय
फौरन उठ कर दिया, बकरे मंत्र सुनाय

सुना मंत्र बकरा हुआ देव जाई। जपो नाम प्रभु का जो सुख चाहो भाई
दोहा– कोटि भट श्रीपाल की, रेन मजूषा नार
धवल सेठ निरखी नयन, पाय लियो उरधार
श्रीपाल को सिन्धु में, छल कर दीना डार
नाम जपा जब आपका, मन में धीरज धार

तो तिर कर हुये पार गुणमाल व्याही। जपो नाम प्रभु का जो सुख चाहो भाई
दोहा– राजा ने सोचा नहीं, दीना हुक्म सुनाय

प्रातः होत ही सेठ को, सूली देउ चढ़ाय
सेठ सुदर्शन को दिया, सूली पर लटकाय
नाम जपा जब आपका, तन मन सों हर्षाय

तो आसन मिला हाल सूली हटाई। जपोनाम प्रभू को जो सुखचाहो भाई
दोहा— सीता जी को जगत में, दोष लगा रहे लोग
सुन सुन कर के आ गया, रामचन्द्र को सोग
अग्नि कुण्ड में राम ने, दई सिया बैठार
नाम जपा तब आपका, मन में धीरज धार

तो पावक हुआ नीर सरिता बहाई। जपो नाम प्रभु का जो सुख चाहो भाई
दोहा— पांडव सुत निज नार को, गये जुआ में हार
सभा माहिं नङ्गी करे, कौरव किया विचार
दुशासन आकर गहा, द्रोपति का जब चीर
अपने मन में द्रोपती, लिया नाम महावीर

तो राखी है तुम लाज साड़ी बढ़ाई। जपो नाम प्रभु का जो सुख चाहो भाई
दोहा— महिमा प्रभु नाम की, कहां तक करूँ बखान
तीन लोक तारन तरन, जानत सकल जहान
बहुत रहो घबड़ाय कर नेनन छायो नीर
अधम अपने भक्त को, आप बंधावो धीर

करो नाथ जल्दी हमारी सुनाई। जपो नाम प्रभु का जो सुख चाहो भाई।
इस हेतु दुनियां में नर देह पाई॥

एक सियार और साधू का सम्वाद

दोहा— मन वच तन बन्दों सदा, वीतराग भगवान
एक सन्त और स्यार का, किस्सा करूँ बखान
तर्ज—जगत में जिसका जगत पिता रखवारा

जगत में जिसने पाप किये हैं भारी।
उसकी लाश स्यार नहीं खावे होत बहुत ही ख्वारी॥टेक॥
एक मनुष बहुत ही पापी था, अब उसकी कथा सुनो भाई
आ रहा अकेला जंगल में, वो बिन ही मौत मरा भाई॥
नहीं पास जानवर आया है, जंगल में यों ही लाश पड़ी
इक स्यार घूमता आ पहुंचा, उस लाश पर उसकी नजर पड़ी
फोरन ही लाश दबा मुख में, आगे कूं कदम बढ़ाया है,
जहाँ बैठे थे इक सन्त बड़े, वो स्यार वहाँ पर आया है।
इस मुर्दे को भूल न खाना कहीं संत उच्चारी। जगत में जिसने......

क्यों नहीं भक्षण करें इसे करि कृपा नाथ ये बतलाना
किस कारण से रोका मुझको, वह कारण स्वामी समझाना
मैं बहुत दिनों का भूखा हूँ, मुझको अति क्षुधा सताय रही
जल्दी से मुझको बतलावो, तबियत बहुत ही घबड़ाय रही
ये भक्षण योग्य नहीं भाई, यों साधू जी बोले बानी
इसने अति पाप किये भारी, अरु नीति अनीति नहि जानी।
अंग अंग में पाप भरा है, महा नीच व्याभिचारी। जगत में जिसने......

सुन साधू के वचन एकदम, स्यार बहुत ही घबड़ाया
मैं बहुत दिनों का भूखा था, हे नाथ कहा तुम फरमाया
इसने क्या पाप किये भारी, अब मुझे नाथ सब बतलाओ
क्या सारा अंङ्गअपावन है, स्वामी मुझ को समझाओ
कोई ऐसा अंग बता दीजे, जिसको खाकर मैं उदर भरूँ
जो अधिक भूख की ज्वाला है, उसको मैं अपनी शान्त करूँ
सुनकर बात कहे यों साधू, सुनों सकल नर नारी। जगत में जिसने...

नहि तीर्थधाम किये इसने, नहिं मन्दिर जी में गया कभी
इससे ये पैर अपावन है, इनको मत खाना भूल कभी
इन हाथों ने नहिं दान दिया, इसलिए न इनको खाओ तुम
नहि सेवा करी बड़ों की है, ये बात हृदय में लाओ तुम
मुख से ना राम कही कबहू, नहिं भूल कभी गुणगान किया
नित बुरे शब्द मुखसे भाखे, मति खाना इसको बता दिया
तो आँख कान खाने दो स्वामी, क्षुधा लगी अतिभारी। जगत में जिसने...

फिर सुनस्यार की बात कही, यों साधु ने मुख से बानी
ये आँखें बड़ी निकम्मी हैं, हारे है इनसे ऋषि ज्ञानी
नहिं इनने माता बहिन लखी, निज पर को कभी न पहचाना
फिर इनको कैसे खाओगे, इन खूब करी है मनमानी
नहि आत्म हित की बात सुनी, कहीं भूल कभी इन कानों से
फिर खाओगे किस तोर जरा, तुम दिल में करो विचारी। जगत में जिसने...

नहि उदर ने कोई पाप किया, फिर नाथ इसे ही खाने दो
जो क्षुदा वेदना भारी है, अब उसको नाथ बुझाने दो
ये उदर बड़ा ही पापी है, साधु ने वचन उचारे हैं

सब हाथ पांव बस में कीने, इसने अति जुल्म गुजारे हैं
नित भक्ष अभक्ष भखा भाई, कुछ भी नहिं भेद किया इसने
इसमें भी ज्यादा पाप भरा, अपना नहिं भेद दिया इसने
इसको खाने से कभी न होगी, पूरण क्षुदा तुम्हारी॥ जगत में जिसने...

सुन साधू के वचन सियार ने, इक दम मुर्दा छोड़ दिया
इस पापी के पाप का भण्डा, आज गुरुजी फोड़ दिया
जब से हमने तुम वचन सुने, मैं नाथ बहुत मजबूर हुआ
चरणों में शीश झुकाता हूँ, अब पाप से दिल दूर हुआ
अब भूखों ही मर जाऊँगा, पर भूल से इसे ना खाऊँगा
मुझको अब नाथ क्षमा करिये, मैं पास तलक ना जाऊँगा
लखि सियार की बुद्धि गुरु के, दिल में खुशी अपारि। जगत में जिसने...

अब सोचो जग के जीव सभी, नित पापों से डरना चाहिये
आ जाय मुसीबत कहीं कड़ी, नहिं पाप कभी करना चाहिये
नर नारि लखो अपने मन में, ये नर तन रत्न अमोला है
अरु बड़े कठिन से पाया है, ये उत्तम कुल में चोला है।
नहि भूल के कोई पाप करो, ये पाप नर्क की खानि है।
नहि पाप से होगा कभी भला, सतुगुरु की ये ही बानी है
अगर भाईयो अबहू ना माने, बहुत होयगी ख्वारी

जगत में जिसे पाप किये हैं भारी
उसकी लाश स्यार नहिं खावे होय बहुत ही ख्वारी

अगर दिल किसी का

अगर दिल किसी का दुःखाया न होता,
जमाने ने तुझ को सताया न होता।
न आते तेरी, आँख में आज आँसू,
किसी हँसते को गर, रुलाया न होता॥1॥ अगर...

न मिलते कदम दर, कदम तुझ को कांटे,
जो काँटा किसी को, चुभाया न होता ॥2॥ अगर...

न घर में अँधेरा, तेरे आज होता,
जो दीपक किसी का, बुझाया न होता ॥3॥ अगर...

क्यों लुटती खुशी की, तेरी आज दुनिया,
जो खँजर किसी पे, चलाया न होता ॥4॥ अगर...

अगर बेसहारों का, बनता सहारा,
तो दिल पे तेरे गम का साया न होता॥5॥ अगर...

अफसाना

अफसाना लिख रहा हूँ, श्री वर्द्धमान का,
जिसने पता बताया, ऊँचे निशान का।
दु:खियों की जब पुकार ने, सीने पे चोट की,
आनन्द छोड़ आये थे, दशवें विमान का।
इक लाल, वह अनमोल था, 'त्रिशला' की गोद का
चर्चा विश्व में हो रहा है, जिसकी शान का॥1॥ अफसाना...
सत धर्म, शील, त्याग और तप के प्रभाव ने
देखो तो तोहफा दे दिया 'केवलज्ञान' का।
यज्ञों में लाखों प्राणियों के, जब गले कटे।
जानलेवा था हर कोई, प्यासा था खून का॥2॥ अफसाना...
प्रभु ने बजाई बंसरी, सत धर्म प्रेम की
देखो जो हाल बदतर हर बेजुबान की।
दुनिया का मैल दूर कर कुन्दन बना दिया
'चन्दन' अमर पद पा लिया, अविचल स्थान का। अफसाना...

अहिंसा जो अपनाये

अहिंसा को जो अपनाए, वही इंसान सच्चा है।
किसी पर ज़ुल्म न ढाए, वही इंसान सच्चा है॥
विनश्वर-रूप यौवन का, सुविधा जाति का धन का।
न मन में मान जो लाए, वही इंसान सच्चा है॥1
न बोले झूठ कम तोले, न डोले धर्म से अपने।
सदा पापों से भय खाए, वही इंसान सच्चा है॥
पराई भामिनी वेश्या व मदिरा, माँस जुए के।
कभी निकट न जाए, वही इंसान सच्चा है॥3
न छोड़ धर्म के पथ को, भले ही मौत सन्मुख हो।
निभाकर नियम हरषाए, वही इंसान सच्चा है॥4
कर नेकी विवेकी बन, कमाए नीति वाला धन।
न मन पापों में उलझाए, वही इंसान सच्चा है॥5
सदाचारी 'सुदर्शन' और दयाधर 'मेघरथ' जैसा।
बना कर दिल जो दिखलाए, वही इंसान सच्चा है॥6
स्वयं दुःख सहके औरों को जो सुख पहुँचाए अय चन्दन।
ज़माना मुख से गुण गाए, वही इंसान सच्चा है॥7

अरे लोभी बन्दे

अरे लोभी बन्दों! ये क्या चाहते हो।
जफा कर रहे हो, वफा चाहते हो.......॥
धरा नाम मिलनी का, कैसा निराला
निकाला मुसीबत में हर बेटी वाला,
सुखी आप इस पर, बना चाहते हो.....॥1॥
इस वास्ते क्या था बेटा पढ़ाया?
नीलामी पे घर आते, उसको चढ़ाया?
हया और दया-धर्म का कर सफाया?
प्रभु की मधुर फिर, दया चाहते हो.....॥2॥
सुनो ओ अमीरों! जरा दिल टिकाकर
बने बाप बेटी के तुम जबकि जा कर
चबायेगा तुम को चने कोई आ कर
समय है बचो, जो बचना चाहते हो.....॥3॥
है नाच निश दिन हो, जिसके सहारे
चले संग पाई न, इक भी तुम्हारे
बचाता है 'चन्दन' तुम्हें कर इशारे
भलाई करो, जो, भला चाहते हो.....॥4॥

❑❑❑